वर्ष -5, अंक -1, जनवरी-मार्च, 2020 मुंबई

यूनियन सृजन

विश्व हिन्दी दिवस

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 12.05.2020

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 5 अंक - 1 जनवरी - मार्च, 2020

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

ब्रजेश्वर शर्मा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

आर. के. कश्यप

डी. सी. चौहान
(महाप्रबंधक)

ब्रिगे. आशुतोष सीरौठिया, सेना मेडल
मुख्य सुरक्षा अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

sulabhakore@unionbankofindia.com

union.srijan@unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- साहित्य सृजन: प्रवासी हिन्दी साहित्य 5-7
- काव्य सृजन 8-9
- दशक की देन 10
- दुविधा मुक्ति (कहानी) 11-13
- महिला विशेष: हिन्दी कार्यशालाएँ 14-15
- जलेबी की महिमा / मॉकरन 16-17
- मगहर 18-20
- हम गांव से निकले बच्चे 21
- महेसाणा के दर्शनीय स्थल 22-23
- महिला दिवस विशेष 24-25
- विशेष साक्षात्कार: डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा 26-27
- सेंटर स्प्रेड: लॉकडाउन मुंबई 28-29
- यात्रा सृजन: लेह लद्दाख 30-31
- विश्व हिन्दी दिवस: आयोजन 32-33
- प्लास्टिक प्रदूषण: खतरे की घंटी 34-35
- ईमानदारी: एक जीवन शैली 36-37
- कालचक्र 38-39
- व्यंग्य : जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त व्यंग्य 40-41
- हिमालय 42
- यूनियन समृद्धि केंद्र-गुरदासपुर 43
- गौरवान्वित कामकाजी माँ 44
- नारी - आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 45
- मुश्किलें झेलें, दुनिया जीतें 46-47
- डिजिटल बैंकिंग - ग्राहक सेवा और भाषा 48
- भाषा दर्शन 49
- राजभाषा पुरस्कार 50-51
- राजभाषा समाचार 52-53
- आयुष्यमान भव: - सुपर फूड 'गुड़' 54
- आपकी नज़र में 55

परिदृश्य

प्रिय साथियो,

बैंक अपनी स्वर्णिम नई शताब्दी की ओर अग्रसर हो चुका है. कई बड़े लक्ष्यों को पार करते हुए इस वित्तीय वर्ष में हमें और भी नई चुनौतियों से रूबरू होना है. जीवन इन्हीं चुनौतियों की एक निरंतर यात्रा है, जहां बिना किसी लक्ष्य के जीवन की कोई सार्थकता नहीं होती.

नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत समामेलन जैसे बड़े परिवर्तन से हुई है. यह हमारे लिए बड़े गर्व का विषय है कि हमारे बैंक के साथ कॉर्पोरेशन बैंक एवं आंध्रा बैंक जैसे मजबूत बैंक जुड़ रहे हैं और इस प्रकार हमारा बैंक कारोबार की दृष्टि से देश के पांचवे बड़े सरकारी बैंक के रूप में उभरकर सामने आ रहा है. देश के योगदान में सर्वोच्च बड़ी संस्था के रूप में अपने बैंक को स्थापित करना अब हमारी प्राथमिकता होगी. यदि हमारा लक्ष्य बड़ा है तो हमारे इरादे भी बड़े होने चाहिए. इस सफल समामेलन में नव परिवर्तन को अपनाते हुए, अपनी कार्य प्रणाली को बेहतर करते हुए अब प्रत्येक कर्मचारी की अपनी उत्कृष्ट भूमिका होगी, ताकि बेहतर ग्राहक सेवा और उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के साथ हम अपनी संस्था को और अधिक ऊंचाई पर ले जा सकें. मुझे पूर्ण विश्वास है इस कार्य हेतु हमारे सभी यूनियनाइट्स हमेशा की तरह पूरी तरह तत्पर हैं.

आज सम्पूर्ण विश्व वैश्विक महामारी के विषम संकट से ग्रस्त है. इस उथल-पुथल भरे वातावरण ने आज कई समस्याओं के साथ बड़ी चुनौतियों को हमारे सामने लाकर खड़ा कर दिया है. लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि आप अपना एवं अपने परिवार के स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए इस चुनौतीभरी स्थिति का सफलतापूर्वक मुकाबला करेंगे. आज वैश्विक स्तर पर हो रहे विविध परिवर्तनों को भी ध्यान में रखकर हमें अपनी कार्यप्रणाली को विकसित करना होगा ताकि इस बदलते परिवेश में भी हमारे बैंक की यात्रा निरंतर रूप से प्रगतिशील बनी रहे.

'यूनियन सृजन' के माध्यम से आपसे संवाद हमेशा से सुखद रहा है. आपकी सृजनात्मकता के बलबूते पर आज हमारी यह गृह पत्रिका एक प्रतिष्ठित पत्रिका के रूप में अपने मानदंड स्थापित करने में सफल रही है. मुझे विश्वास है कि आगामी अंकों में भी आप सभी की सृजनात्मकता का योगदान इसी प्रकार बना रहेगा.

नए वित्तीय वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

आपका

राजकिरण रै जी

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

वर्तमान में पूरे विश्व में कोरोना वायरस की वजह से जो माहौल पैदा हुआ है, उससे दिल व्यथित भी है और पूरे विश्व की मानवीयता के समक्ष नतमस्तक भी! यह ऐसा माहौल है, जहां सब कुछ भुलाकर दुनिया जान बचाने की चाहत में सिमट सी गयी है. लेकिन मानव और प्रकृति के बीच के रिश्ते को शायद बेहतरीन ढंग से जानने हेतु मानव को प्रकृति द्वारा दिया हुआ यह एक और मौका है, यह भी उतना ही सच है. हमें सकारात्मक सोच के साथ इस मौके का लाभ उठाते हुए प्रकृति के साथ अपने सामंजस्य को नये सिरे से समझना होगा, जानना होगा और तदनुसार स्वयं में परिवर्तन करना होगा.

इसी माहौल में यूनियन बैंक के साथ आंध्रा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक के समामेलन का ऐतिहासिक पल भी है. यह एक बड़ी घटना है, जिसने बैंकिंग उद्योग हेतु नये दौर का आगाज किया है और हमारे कर्तव्यों, दायरों और चुनौतियों को भी एक नया आयाम दिया है.

'यूनियन सृजन' का यह अंक आपके लिए 'विश्व हिन्दी दिवस' और 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' जैसी इस तिमाही की महत्वपूर्ण गतिविधियों के साथ कहानी, यात्रा वर्णन, व्यंग्य, कविताएं और बैंकिंग एंव भाषा से संबंधित लेख व रोचक साहित्य लेकर आया है.

हम जानना चाहेंगे कि आपको यह अंक कैसा लगा और इस अंक ने आपको क्या दिया.

नयी चुनौतियों और समामेलन के माहौल हेतु शुभकामनाओं के साथ.....

आपकी

(डॉ. सुलभा कोरे)

प्रवासी हिन्दी साहित्य

प्रवासी साहित्य, प्रवासी भारतीय साहित्य अथवा प्रवासी हिंदी साहित्य किसे कहते हैं? हम किन्हें प्रवासी साहित्यकार कह सकते हैं? ऐसे अनेक प्रश्न उभरकर सामने आते हैं.

प्रवास शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो शौक या मजबूरी वश दूर देशों में बसा दिए गये थे या वे स्वयं रोजगार की तलाश में अन्य देशों की यात्रा पर निकल गए और वहीं बस गए. इन लोगों ने अपने परिश्रम से वहां की आबादी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं को सक्षम बनाया. इस सक्षमता से पहले प्रवासियों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा. उन्हीं में से कुछ लोगों ने अपनी व्यथा-कथा को कलमबद्ध कर प्रवासी साहित्य की नींव रखने का कार्य किया.

साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते हैं. विदेशों में बैठे हिंदी साहित्यकारों ने अपने लेखन का माध्यम हिंदी चुना, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के आंतरिक संबंध को बनाए रखना चाहते हैं. प्रवासी लेखक प्रवास के दुख-दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों को जोड़कर उनमें व्याप्त विषमताओं को कागज पर उतार देता है और यही संवेदनाएं सहज ही सबसे जुड़कर सबकी संवेदनाएं बन जाती हैं.

प्रवासी साहित्यकार चाहे विदेश में भले ही बसे हों किंतु उनका मन और आत्मा देश की माटी में निवास करती है. भारतीय प्रवासी आत्मिक स्तर पर स्वयं को अपने देश से अलग नहीं कर पाया, यही कारण है कि इन साहित्यकारों की रचनाओं में परदेस जाने से पहले की स्थिति और परदेस आने के बाद विदेश की स्मृति को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है.

प्रवासी साहित्यकारों ने अपने सर्जनात्मक साहित्य का छोटा-सा किंतु विश्व के चारो ओर फैला हुआ आकाश निर्मित किया है. हिंदी की एक छोटी सी दुनिया बनाई है, जिसकी आत्मा हिंदी और भारतीयता की है. शर्तबंदी के तहत फिजी, मॉरीशस आदि देशों में बसे प्रवासियों की रचनाओं में अतीत की व्यथा, वर्तमान का तनाव और भविष्य की चिन्ता को प्रमुखता से उभारा गया है. किंतु नार्वे, अमेरिका, इंग्लैंड, नीदरलैंड आदि देशों के भारतवंशी हिंदी लेखकों की चिंताएं व चुनौतियां इनसे कुछ भिन्न हैं.

आज़ादी से पहले किसी भी साहित्य को समझने से पहले उस समय की परिस्थितियों को महसूस करना, उससे रूबरू होना अति आवश्यक है. प्रवासी साहित्य का स्वरूप वक़्त के साथ बदलता रहा है. इसकी शुरुआत दुख:, दर्द, तकलीफ और मजबूरी से शुरू हुई. यह साहित्य केवल भोगे गए मानसिक संताप और प्रवासी मनुष्य के दुख: को चित्रित करता है. इसमें उपलब्ध साहित्य परिवर्तित परिस्थितियों के अधीन मानव जीवन के गतिशील और क्रियात्मक रूप का रूपांतरण ही है. आइये प्रवासी साहित्य को जानने से पहले उसके तथ्य को जानते हैं.

प्रवासी साहित्य का मुख्य **गिरमिटिया प्रथा** को माना जाता है. गिरमिटिया प्रथा अंग्रेजों द्वारा सन् 1834 से आरम्भ की गई और सन् 1917 में इसे निषिद्ध घोषित किया गया. सत्रहवीं सदी में आये अंग्रेजों ने गुलामी की शर्त पर लोगों को विदेश भेजना प्रारंभ किया. इन मज़दूरों को गिरमिटिया कहा गया. गिरमिटियों की ऐसी दुर्दशा होती थी कि उनकी आपबीती पढ़ें तो रूह कांप जाए. भारतीय लोग बंधुआ मजदूरों के रूप में भारत से बाहर मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना आदि देशों में गए. इन बंधुआ मजदूरों में भारी संख्या में उत्तर-भारतीय भी शामिल थे. वे मजदूर अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ जैसे भाषा, धर्म आदि से अपने समूहों का प्रतिनिधित्व करने लगे.

फ़िजी में इन प्रवासी भारतीयों ने आर्थिक विकास को एक नई दिशा दी. लगभग 1914 के आस-पास कुछ गुजराती प्रवासी भारतीयों का फ़िजी आगमन हुआ. उन्होंने जल्द ही कुछ उद्योगों की स्थापना शहर में कर ली. हालांकि वे यूरोपियन लोगों की तरह ऊंचे तो नहीं उठ पाए, किंतु भारतीय व्यापार की सफलता का चेहरा जरूर दिखाई देने लगा. फ़िजी के शुरूआती अखबारों (1927 और 1936) 'फ़िजी समाचार' और 'शांतिदूत' आदि में बहुत जोर-शोर से जिस चीज पर जोर दिया जा रहा था वह थी, नृजातीय एकात्मकता की भावना तथा मूल स्थान के प्रति लगाव को जगाना. साथ ही, वे एक ऐसे कल्पनात्मक भारत का निर्माण कर रहे थे जो कि फ़िजी में भी दिखाई दे. इन समाचार पत्रों में दोनों देशों को भारत और फ़िजी के रूप में दर्शाया जा

रहा था-

'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वो नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है.'

गिरमिट वैचारिकी और गिरमिटिया जीवन को समझने के लिए **तोताराम सनाढ्य** का लेखन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. सर्वप्रथम गिरमिटिया प्रथा के विरुद्ध **तोताराम सनाढय** ने अभियान शुरू किया. तोताराम सनाढय ने गिरमिट पर अपने अनुभवों के बाद एक पुस्तक लिखी -'**फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष**'. उसके बाद गिरमिटिया प्रथा के विरूद्ध महात्मा गांधी ने आवाज उठायी.

प्रवासी भारतीयों में फ़िजी से **सत्येंद्र नंदन, मोहित प्रसाद, रेमंड पिल्लई और सुदेश मिश्रा** आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने बहुत गहराई से गिरमिटिया संवेदना को अपनी कविताओं, कथा साहित्य में व्यक्त किया है.

सुरेश मिश्रा अपनी एक कविता में लिखते हैं-

'गिरमिटिया, माई मेकर योर जर्नी हैज ब्रोकेन माई हार्ट'

फ़िजी में भारतीयों और फ़िजी लोगों के बीच के द्वंद्व को पिल्लई ने कुछ इस तरह बयां किया है-

'काई बिती काई इंडियान नाई सको इक रास्ता पकरो'

अंत में गिरमिट प्रथा से भारत को आजादी मिली. लोग जब वहां गए तो अपने साथ गीता व रामायण के रूप में यहां की संस्कृति भी साथ ले गए और उसे एक संस्कार की तरह वहां ज़िंदा रखा. परंतु बाद में वे किसी कारणवश वापस नहीं लौट पाए या इस तरह से रच बस गए कि लौटना ही नहीं चाहा.

गिरमिटिया प्रथा खत्म होने के बाद लोगों का नज़रिया विदेश के प्रति बदलता गया. कारण पढ़ाई हो या इलाज, शौक हो या जरूरत लोग विदेश को प्राथमिकता देने लगे. इसी अनुसार साहित्य में भी परिवर्तन आता गया. आज के साहित्य में अपने देश के लिए यादें, अनुभव, स्मृति, आशा, इस तरह के भाव पाए जाते हैं.

आज़ादी के बाद

"मैं जहां रहूं, मैं कहीं भी रहूं, तेरी यादें साथ हैं",भले ही भारतीय किसी भी देश में बस गए हों लेकिन आज भी उनका दिल भारत के लिए धड़कता है. आज भी प्रवासी भारतीय होली, दीपावली व ईद मनाते हैं.

वर्तमान समय में, दूतावास के अधिकारीगण, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग या अन्य विभागों में कार्यरत प्राध्यापक, व्याख्याता तो शामिल हैं ही, इनके अतिरिक्त वहां रहने वाले अन्य प्रवासी भारतीयों का भी योगदान कम नहीं, जो हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं. ऐसे हजारों साहित्यकार हैं जो हिन्दी साहित्य की हर विधा में साहित्य रच रहे हैं. वहां के साहित्यकार वहां केवल साहित्य सृजन करने के अलावा अपनी भाषा के प्रति अपने काव्यों तथा अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी कर रहे हैं. साहित्यिक विकास के लिए संगोष्ठी व सम्मेलन तथा आज इन्टरनेट की दुनिया के इस युग में अनेक ई- पत्रिकाओं का भी संचालन कर रहे हैं. विदेशों में रहने वाले साहित्यकार, जो वहां लम्बे अर्से से बसे हुए हैं, वे साहित्यिक विकास में ईमानदारी से अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हैं, इससे उनका महत्व और अधिक बढ़ जाता है.

बीसवीं सदी के पश्चात् भारत छोड़कर विदेशों में बसने वाले भारतीयों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई, प्रवासी भारतीय बच्चे भी विषय चयन में हिन्दी लेने से कतराते नहीं, बल्कि गर्व व सम्मान महसूस करते हुए इसमें दाखिला लेते हैं. इधर प्रवासियों द्वारा प्रकाशित व संचालित की जा रही दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध-वार्षिक, वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है. बीसवीं सदी के अन्त तक लगभग 150 प्रवासी भारतीय विभिन्न विधाओं में साहित्य रचना कर चुके हैं और 21 वीं सदी के प्रारम्भ होने तक इनमें से 50 से अधिक साहित्यकार भारत में अपनी पुस्तकें भी प्रकाशित करवा चुके हैं. वेब पत्र-पत्रिकाओं, ब्लाग्स का चलन होने से साहित्यकारों को खुला मंच मिला तथा विश्वव्यापी पाठकों तक पंहुचने का सीधा, सुगम एवं सस्ता रास्ता भी मिल गया.

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएं, उपन्यास, कहानियां, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है तथा विभिन्न साहित्यकारों द्वारा उनकी मनोदशा को उजागर किया गया है. उनकी रचनाओं में अलग-अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों का बखान किया गया है तथा इन रचनाओं के माध्यम से भाषा की महत्ता को प्रस्तुत किया है और हिंदी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय विकास प्रदान किया है, इससे समस्त विश्व में हिंदी भाषा तथा विदेशों में रहने वाले हिंदी साहित्यकारों का महत्व बढ़ जाता है.

हिंदी में प्रवासी साहित्य नवयुगीन साहित्यिक विमर्श है. हिंदी में इसका आरम्भ प्रेमचंद की **यही मेरी मातृभूमि है** (1908) और **शूद्रा** (1926) की कहानियों से माना जाता है. इन कहानियों में अमेरिका से लौटे प्रवासी भारतीय मॉरिशस

ले जाए गए उन भारतीय मजदूरों की कहानियां हैं. 1977 ई. में प्रकाशित **अभिमन्यु अनंत** द्वारा रचित उपन्यास '**लाल पसीना**' में अपने स्वत्व और मानवाधिकारों को पाने के लिए भारतवंशियों के प्रारम्भिक संघर्ष और गिरमिटिया जीवन की विडंबनाओं का चित्र प्रस्तुत किया है. इसके बाद अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में प्रवासी भारतीयों की हिंदी रचनाएं आती हैं.

प्रवासी लोगों की 3 श्रेणियां बनाई जा सकती हैं. एक श्रेणी में वे लोग हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भेजे गए थे. दूसरी श्रेणी में 80 के दशक में खाड़ी देशों में गए अशिक्षित-अर्धशिक्षित, कुशल अथवा अर्धकुशल मजदूर आते हैं. तीसरी श्रेणी में 80-90 के दशक में गए सुशिक्षित मध्यवर्गीय लोग हैं, जिन्होंने बेहतर भौतिक जीवन के लिए प्रवास किया.

इन तीन तरह की श्रेणियों में से, साहित्य के वर्तमान समय में, अंतिम श्रेणी का ही प्रभुत्व दिखाई देता है. गिरमिटिया मजदूरों के बाद की पीढ़ियों में से अधिकांश ने रोजगार तथा अन्य कारणों से हिन्दी या भोजपुरी के अलावा दूसरी अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं को अपना लिया. मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत ही एक ऐसे लेखक हैं, जिनको उल्लेखनीय माना जाता है. उनके उपन्यास 'लाल पसीना' ने काफी प्रशंसा पाई है.

साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति- मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता के माध्यम से 'भारतीयता' को सुरक्षित रखा है और 'हिंदी' को प्रवाहित रखा है. इन साहित्यकारों में उदाहरण के रूप में प्रमुख नाम हैं- **साहित्यकार हरिशंकर आदेश**. वह 1966 ई. से 1976 ई. तक वेस्टइंडीज में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थे. वेस्टइंडीज में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अवलोकन किया कि चर्च द्वारा वहां बसे हुए भारतीयों (जिन्हें वर्षों पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर ले गए थे) पर धर्मांतर के लिए दबाव डाला जा रहा है. कवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया. उन्होंने इसे रोकने के लिए नामकरण से लेकर मृत्यु संस्कार आदि धार्मिक कार्यों के लिए वहां के निवासियों को प्रशिक्षित किया, जिससे वहां के लोगों को राहत मिली तथा अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगे. इसलिए उन्हें उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी लोगों ने भारत लौटने नहीं दिया. लगभग 50 वर्ष हो गए वे वहीं के होकर रहने लगे. उन्होंने वेस्टइंडीज में **'भारतीय विद्या संस्थान'** की स्थापना की. इस संस्था द्वारा उन्होंने बी.ए. स्तर के हिंदी पाठ्यक्रम सीखने का प्रावधान किया है. साथ ही **'भारतीय आभिजात्य संगीत'** का पाठ्यक्रम भी शुरू किया. उन्होंने भारत और हिंदी से संबंधित गीत लिखे. उनकी हिंदी की तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हुई हैं. उनमें महाकाव्य, खंडकाव्य, भगवतगीता का हिंदी-अंग्रेजी पद्यानुवाद, तीस नाटक, एकांकी, जीवनियां आदि हैं. संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होंने 'भारतीयता' को जिंदा रखा है.

'हिंदी' के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार **हरिशंकर आदेश** का नाम अग्रणी है. उनको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया - जैसे विश्व कवि, महाकवि आदि. उनमें भारत सरकार का 'प्रवासी भारतीय साहित्यकार' सम्मान प्रमुख है.

'हिंदी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा, जो छोटा ही था, परंतु उसने एक अलग साहित्य-संसार की रचना की जो पूरे विश्व में फैलता गया और हिंदी के प्रवासी साहित्य का एक बिम्ब निर्मित हुआ. अब वह मॉरीशस तक सीमित न था, उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया. उसकी संरचना में कई शक्तियां काम करती रहीं - विश्व के कई देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन हुए, भारत के हिंदी लेखकों एवं प्रवासी के हिंदी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा, देश की साहित्य अकादमियों ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर गोष्ठियां की, 'प्रवासी भारतीय दिवस' आरम्भ किया गया, प्रवासी लेखकों की कृतियां भारत में छपती रहीं और उन पर चर्चाएं हुईं और हिंदी विश्व में प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठा तथा उसे हिंदी की मुख्यधारा में उचित स्थान देने की मांगें उठने लगीं और हिंदी साहित्य ने इस ओर प्रयत्न शुरु किये.

आज स्थिति यह है कि मॉरीशस, अमेरिका एवं इंग्लैड तीन ऐसे प्रमुख देश हैं जहां प्रवासी भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है और सम्भवत: इस कारण इन देशों में हिंदी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है. इन प्रवासी लेखकों में अनेक ऐसे लेखक हैं जिनकी भारतीय ही नहीं वैश्विक हिंदी मंच पर प्रतिष्ठा है और जिनके पाठकों की संख्या किसी भी लोकप्रिय हिंदी लेखक से कम नहीं है.

प्रवासी साहित्य लेखन की यह परम्परा दीर्घकाल तक यथावत बनी रहे. ताकि आने वाले समय की नई भारतीय पीढ़ी को प्रवास से संदर्भित सारी जानकारी सहज ही मिलती रहे.

ऋषि शंकर चौधरी
क्षे. का., जबलपुर

किसी हद तक

बेगुनाह तो वो भी था
जला था हाथ जिसका बुझाने में,
लगाई थी आग किसने
लम्हा गुजर गया ये सुलझाने में,

कुछ मटके भर पानी ही रख देते
तो शायद कुछ दिन और लगता उसे
मुरझाने में,
अभी तो थोड़ी सी प्यास बाकी थी
जो छलक गया उस पैमाने में,

कहाँ अब कौन ढूंढ़ेगा उसे
जो गुजरा किसी जमाने में,
अभी भी खाली पन्ने बिखर रहे हैं
जो लिखे थे कभी अनजाने में,

अब रोज-रोज नहीं रुकता कोई साहेब
अब तो ठहरा है कोई बस मैखाने में,
साकी से कह दो कि एक ही घूंट में
पिला दे सब
हर बार नहीं मजा आता कलेजा
जलाने में.....

जितेंद्र कुमार वर्मा
डी. बी. डी
के. का., मुंबई

मुंबई की लोकल

लोकल जो मायानगरी में मायाजाल जैसे बिछी हुई है.
लोकल जो आम लोगों का ख़ास जरिया बन चुकी है.
लोकल जो सपनों के शहर को सपना देखना सिखाती है.
लोकल जो सिखाती है कि भीड़भाड़ वाले सफ़र में भी पढ़ाई होती है.
लोकल जो दिखाती है कि गाने के लिए किसी मंच की जरूरत नहीं होती.
लोकल जो बताती है कि दोस्त बनाने के लिए उम्र की पाबंदी नहीं होती.
लोकल जो सिखाती है कि डिब्बा टाइम से पहुँचाने की जिम्मेदारी
सिर्फ घरवालों की नहीं होती.
लोकल जो जताती है कि घर जाने की आस क्या होती है.
लोकल जो बताती है कि नींद किसी बिस्तर की मोहताज नहीं होती .
लोकल जिसके खालीपन में झूमते हुए हैंडल बताते हैं कि झूमने के लिए
किसी नशे की जरूरत नहीं होती है.
लोकल जो छुट्टी के दिन न जाने कितने प्रेमी-प्रेमिकायें, नए ब्याहे जोड़े,
बच्चे, दादा-दादी और नाना-नानी को हमसे मिलवाती है
और दावे से कहती है कि फेमिली की वैल्यू कुछ अलग ही होती है.
हाँ दोस्तों यह वही लोकल है जो इक्यानवे के बम धमाके से लहूलुहान हुई थी.
लोकल है जो 2005 में बारिश के कारण पहली बार आपको
घर न पहुँचाने के कारण मायूस हुई थी.
लोकल है जिसने 2017 में भगदड़ में लोगों को जान गंवाते देखकर
खुद अपनी साँसे रोक ली थी.
लोकल जो आपसे बार-बार कहती है कि गाड़ी के पायदान और प्लेटफार्म
के बीच के अंतर पर ध्यान दें.
लोकल है जो आपसे कहती है कि साहब थोड़ा सब्र करो क्योंकि आपको
देर-सबेर ही सही घर पहुँचाने का वादा हमने घरवालों से जो किया है.

निलेश वाणी
अंबड़ शाखा, नासिक

जिंदगी

नज़र आए या ना आए,
कोई कुछ बोले या ना बोले
पर कुछ सहारे, कुछ हाथ
हमेशा आस-पास होते हैं.
मदद, आशीर्वाद और
भरोसे के लिए,
जिन्हें भूलना मुश्किल है.
उनके लिए आभार
व्यक्त करने के साथ-साथ
यह सीखना ज़रूरी है कि -
खुदा बन सकते हैं हम सब.
बस.....
ज़रूरत पड़े तो,
ईश्वर की तरह मौन रह कर
किसी का सहारा बनो.

चाँदनी सहाय
नवीपेठ शाखा,पुणे

यात्रा

कैसी है यह यात्रा
चाहे छोटी हो या बड़ी, हर राह से होकर
गुजरती है ये यात्रा जिंदगी के सफरनामे
पर कई रास्तों की कहानी है हर पल
हर क्षण चलती रहती ये ज़िंदगानी है
कल चलते थे माँ की उँगलियाँ पकड़ कर
एक कमरे से दूसरे कमरे तक की थी यह यात्रा

समय आगे बढ़ा, हम स्कूल को चले
घर से विद्यालय तक थी यह यात्रा
रोमांचित करती थी वह घर से बाजार होते
हुए विद्यालय तक पहुँचने की राह
बाबूजी का हाथ पकड़ कर जब
हम करते थे गुब्बारों की चाह

अब दोस्तों और संगी साथियों के साथ
हम बढ़ चले हायर स्टडीज़ की ओर
बड़ी अजीज थी वह यात्रा,
हर राह थी रंगीन और दुनिया थी हसीन
जाने कब छूटे वो रास्ते,
कब बदल गई हमारी राह

आज खुद के पैरों पर खड़े हैं, पर किसके
लिए है यह यात्रा पास है अपने सारी सुख
सुविधाएं, पर घर परिवार से दूर हैं हम
इस राह पर न उमंग है न उत्साह है
न ही है रोमांच
उस लीज़ वाले मकान से ऑफिस तक
सिमट कर रह गई है यह यात्रा.

शारदा साव
क्षे. का., दुर्गापुर

मुझे बड़ी आदत थी

मुझे बड़ी आदत थी जोड़ने की
तो बस जोड़ती गई
ता उम्र बस जोड़ती ही रही
कुछ सपने बुनती ही गई, संवारती ही गई
उम्मीद के रेशमी धागे से
ख़्वाबों में क्यारियाँ लगाती ही गई
मुझे बड़ी आदत थी जोड़ने की
वो टूटे मिट्टी के बर्तन को
फिर से संभालना, वो सहेज के रखना
शायद था या यक़ीन था वो मेरा कि
हाँ अब यह नहीं बिखरेगा
पर पानी की कुछ बूँदों से मैं हारती ही गई
मुझे बड़ी आदत थी जोड़ने की
मैं हर उघड़े कपड़े को सिलती ही गई
रफ़्फ़ू करके संभालती ही गई
शायद फिर नई सी लगे, ज़िंदगी ही तो है
ऐसा सोचती ही गई
हाथों में सुई की चुभन के निशान को
छुपाती ही गई
मुझे बड़ी आदत थी जोड़ने की
आँखों में आने ना दिया
आँसुओं को सीने में दबाती ही गई
ज़ख़्मों को मरहम लगाती ही गई
तिनकों को जोड़-जोड़ के
घोसला बनाती ही गई
उड़ने को पंख भी दिए हैं कुदरत ने मुझे
इस सच को झुठलाती ही गई
मुझे बड़ी आदत है जोड़ने की.

सिम्मी भट्ट
विले पार्ले (प.) शाखा, मुंबई

प्रकृति का प्रतिकार

खुद पे जब आन पड़ी तो, विपदा लगती भारी है
क्यों दूजे को दोष है देना, गलती तो ये सिर्फ हमारी है

मनुष्य योनि के दंभ में हमने,
प्रकृति नियमों का तिरस्कार किया
अब क्यों हाहाकार मचा है,
जब प्रकृति ने स्वयं प्रतिकार किया

प्राणियों को कितना शोषित और प्रताड़ित किया
हमने अपने झूठे हित साधन के लिए
आज डरे सहमे दुबके बैठे हैं घरों में,
भीख मांग रहे हैं ईश्वर से
अपने अहितकर जीवन के लिए

आज समझ आया, हे दंभी मनुष्य!
तू कितना लाचार है
कोरोना तो नाम मात्र है,
मानव तू खुद ही बीमार है

मांसाहार छोड़ शाकाहार अपनाएंगे हम
प्रकृति के नियमों पर ही चलते जाएंगे हम
प्रदूषण और सफाई का रखेंगे ध्यान हम

प्रकृति को संवारेंगे, सहेजेंगे,
हम इसके सदा आभारी हैं
जन जीवन को कोई नुकसान ना हो अब,
ये हम सबकी जिम्मेदारी है.

प्रशांत सिंह
सुरियावां शाखा, प्रयागराज

दशक की देन

समय हमेशा बदलता है और बदलाव ही इस सृष्टि का नियम है. जो नहीं बदलता वह निर्जीव बन जाता है. पर यह भी सही है कि बदलाव की एक निश्चित गति होनी चाहिए.

2019 के साथ-साथ एक दशक भी समाप्त हुआ. यह दशक हमारे लिए बहुत बदलाव भरा रहा. काफी सारी ऐसी बातें हुई जिसका प्रभाव आगे के आने वाले दशकों पर हमेशा रहेगा. काफी कुछ नया दे गया यह दशक. बदले में काफी कुछ छीन भी लिया.

यह दशक बदलाव का रहा. बदलाव कई आयामों को लेकर हुए. हमारी सामाजिकता, बदलते रिश्ते और उसे निभाने के तरीकों में भी यहाँ कुछ हद तक परिवर्तन हुआ. मूलत: देखा जाए तो हमारे रहन-सहन में आमूलचूल परिवर्तन हुआ, इस दशक में. खाने-पीने से लेकर, भाषा, पहनावा, सोने और उठने के समय में एक बहुत बड़ा बदलाव आया है. जो जीवन मूल्य हमारे केंद्र में थे, वह हाशिये पर आ गए.

इस दशक में तकनीकी का एक अलग चेहरा प्रस्तुत हुआ और वह हमारे जीवन का केंद्र बन गयी है. हमारे सामाजिक संबंधों का भी निर्धारण यहीं से हो रहा है. आज का युवा रूबरू के संबंधों के बजाय डिजिटल संबंधों पर विश्वास कर रहा है. आज का व्यक्ति उतना ही सामाजिक या सोशल कहा जाएगा जितने उसके सोशल मीडिया पर दोस्त हैं. अकेले होते हुए सामाजिक होने का भ्रम इस दशक का एक महत्वपूर्ण पहलू है. हम उतने ही सुंदर हैं हमारा कार्य उतना ही अर्थपूर्ण है, जितने उसे लाईक्स और कॅमेंट आएंगे, किसी पर की गई मेरी टिपणी या तारीफ की तब तक कोई महत्ता नहीं है, जब तक मैं उसे सोशल मीडिया पर ना करूं. प्रत्यक्ष तारीफ या शब्दों का कोई मूल्य नहीं रहा. तो आज का व्यक्ति केवल डिजिटल तारीफ पर ही विश्वास रखता है. उसके कार्य-कलापों या प्रत्यक्ष बोल पर उसकी सामाजिकता नहीं आँकी जा रही है उसकी सामाजिकता इस बात पर निर्भर कर रही है कि वह कितना सोशल मीडिया पर जागरूक है.

इस दशक में किताबों से हमने थोड़ी दूरी बना ली है. एक भ्रम की स्थिति बनी हुई है कि हमने किताबों का विकल्प ढूंढ़ लिया है जो शायद कभी संभव ना हो. पढ़ने लिखने की लत को हमें बरकरार रखना है तभी आने वाली पीढ़ी हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक इतिहास को अच्छे से समझ सकेगी और तभी इस देश की गरिमा बरकरार रहेगी. किताबों की दुनिया परिधि से बाहर चली गई है और हम सूचना और ज्ञान में फर्क करना भूल गए हैं. इन सारे माध्यमों से हमें सूचनाएँ मिल रही है, ज्ञान अधिक नहीं, पर हम उन सूचनाओं को ज्ञान समझ रहे हैं, असली ज्ञान तो किताबों में ही होता है, इसका कोई पर्याय नहीं है.

अभिव्यक्ति के काफी माध्यम सामने आ गए हैं. पहले एक विशाल जन समूह के सामने आने की सुविधाएं कुछ विशेष लोगों की ही थीं, जिसमें राजनेता, कलाकार मीडिया जगत के लोग ही आते थे. इस दशक में सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति अपने को बेबाकी से अभिव्यक्त कर रहा है. उसे इसके लिए किसी प्रकाशक या समाचार पत्र के पास जाने की जरूरत नहीं है. उससे बड़ा दायरा उसे मिल चुका है. अपनी कला को प्रस्तुत करने के लिए उसे किसी निर्देशक के पास भी जाने की जरूरत नहीं है. वह स्वयं निर्देशक और कलाकार की भूमिका में नजर आ रहा है. विशेष और सामान्य के लिए अवसर तो एक जैसे नहीं है पर जमीन एक जैसी मिल रही है.

अभिव्यक्ति के मायने और माध्यम बदल गए हैं, इससे देश और दुनिया को यह जानने में आसानी हो रही है कि किसी एक मामले में एक प्रचंड जनसमुदाय की क्या राय है. यह एक बहुत बड़ी क्रांति है.

इस दशक ने एक महत्वपूर्ण बात इस समाज से छीनी है, वह है बचपन. आज का बचपन वैसा नहीं है, जैसा होना चाहिए. आज बचपन के वह शोर नहीं है और ना ही वह खेल-कूद. आज-कल के खेल-कूद भी डिजिटल बन गए हैं. इससे हमारा बचपन एकांत, बीमार और खामोशी में गुम हो रहा है. उसके लिए जमीन अपने आप तैयार हो रही है. जिसमें कोई दोस्त नहीं है, कोई शारीरिक खेल नहीं है, खामोशी है कोई हँसी नहीं है. तो वह तैयार हो रहा है, अपनी डिजिटल दुनिया की सामाजिकता रचने के लिए.

सूचना और प्रौद्योगिकी में इस दशक ने काफी प्रगति की है. देश दुनिया में सूचनाएँ तेजी से फैल रही हैं. उसके नए-नए माध्यम विकसित हुए हैं. जिससे हुआ यह कि बिना समाचार पत्र पढ़े, बिना टेलीविजन देखे भी सूचनाएँ प्राप्त हो ही रही हैं. यह भी इस देश की चमत्कारिता ही है.

दरअसल यह एक संधियुग था, यहाँ काफी कुछ पीछे छूट रहा था और काफी कुछ नया अपनाने की जिम्मेदारी थी. हम देखते हैं अभी भी हमसे पहले की पीढ़ी एकरूप नहीं है, हमसे और हम भी एक रूप नहीं है हमारी अगली पीढ़ी से. तो इन तीनों पीढ़ियों में एक दरार है. पहली पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी में अंतर है, दूसरी पीढ़ी और तीसरी पीढ़ी में अंतर है. पहली और तीसरी पीढ़ी में बहुत बड़ा अंतर है. पर यह भी सच्चाई है कि हमसे पहले वाली और हमारे बाद वाली पीढ़ी अपनी-अपनी राह पर चल रही है पर जो 70 और 80 के दशक की पीढ़ी है उसे इस संधियुग में जीना या यह तय कर पाना मुश्किल हो रहा है, किस मूल्य को अपनायें और किसे छोड़ें. एक पीढ़ी इससे परंपरावादी या संस्कारों पर चलने की उम्मीद रखती है तो दूसरी पीढ़ी इससे आधुनिकता को अपनाने की उम्मीद रखती है. तो यह जो पीढ़ी है 80-90 के दशक की इसे काफी उलझनों का सामना करना पड़ रहा है. यह न तो पूर्ण रूप से परंपरा का निर्वाह कर सकी और ना ही आधुनिकता को पूर्ण रूप से स्वीकार कर रही. शायद यह पीढ़ी इस बदलाव के लिए पूर्ण रूप से तैयार ही नहीं है.

तो कुल मिलाकर इस दशक में व्यक्ति की जिंदगी में काफी परिवर्तन हुए. हमारे सामाजिक मूल्य, पसंद ना पसंद, अभिव्यक्ति, संस्कृति, रहन-सहन में काफी बदलाव आया है. तो यह दशक इस सदी में काफी मायने रखेगा. हम इस बदलाव के साक्षी हैं. व्यक्ति के जीवन में शताब्दी से अधिक दशक का महत्व होता है शताब्दी इतिहास पर प्रभाव डालती है और दशक व्यक्ति के जीवन पर.

कांबले साहेबराव
क्षे. का., विजयवाड़ा

दुविधा मुक्ति

छुट्टी के दिन राजवी जब सोकर उठी तो सूरज चढ़ आया था. महानगर की सुबह जिस तरह से अलसाई सी होती है, वैसी ही यह सुबह भी थी. लेकिन राजवी के मन की दुविधा ने इस सुबह को और अधिक उदासीन बना रखा था. पिछले कई दिनों से उसके मन की इस दुविधा ने एक शून्य में लाकर खड़ा कर दिया था उसे. ब्लैक कॉफी बनाते समय वह दो मग निकालने लगी, फिर सोचा कि दो मग किसलिए! रितेश तो आया ही नहीं था और शायद आए भी न! वह अपने लिए कॉफी बनाने लगी. कॉफी पीते-पीते उसने अपने डिजिटल फोटोफ्रेम जो कि उसे रितेश ने ही गिफ्ट किया था को ऑन किया. इस फोटोफ्रेम में राजवी के अतीत से जुड़े हुए वे सारे चित्र थे, जिन्होंने उसे आज के इस दोराहे पर ला खड़ा किया था. कभी-कभी हम अपने अतीत के पन्नों को तब अधिक सहेजने लगते हैं जब वे पन्ने हमारे हाथों से फिसलने लगते हैं. ऐसा करने के पीछे मंशा यही होती है कि हमारा स्वर्णिम अतीत हमारे पास पुन: आ जाए, या हम पीछे की गयी भूलों को सुधार सकें. यह चाहत प्रबल हो उठती है और हम पहुंच जाते हैं अपने अच्छे पलों में. शायद वह भी यही कर रही थी, अपनी इस फोटोफ्रेम के माध्यम से.

फ्रेम में सरकते फोटोग्राफ्स राजवी को आज से कुछ वर्ष पीछे खींच ले गये थे. आज से पाँच वर्ष पूर्व राजवी ने इस फाइनेंस कंपनी में कैंपस सेलेक्शन प्रक्रिया द्वारा नियुक्ति प्राप्त की थी. परिवार के लोग बहुत खुश थे और राजवी तो जैसे फूली ही न समाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि वह अपने हिसाब से अब जी सकेगी, घूम सकेगी, खा-पी सकेगी, स्वयं का व अपने माता-पिता का खुद के हिसाब से ध्यान रख सकेगी. उसकी अपनी एक पहचान होगी जो उसके अपने नाम व काम से बनेगी. ऐसे ही कई उत्साहवर्धक विचारों ने उसे बहुत गुदगुदाया था. स्वयं प्रसन्न रहते हुए औरों को प्रसन्न रखना, साथ ही वर्तमान में जीना, यही उसके जीवन का दर्शन था. कंपनी ने राजवी और उसके जैसे नवनियुक्त कार्मिकों को दो माह के प्रशिक्षण हेतु बेंगलूरु भेज दिया. प्रकृति के बीच बसा प्रशिक्षण केन्द्र सबके मन को खूब भाया. यहीं पर राजवी की मुलाकात रितेश से हुई जो उसी की तरह एकदम बिन्दास तो था ही साथ ही बड़ा ही विनोदी स्वभाव का मनोरंजक लड़का था. वे दोनों अपने सहकर्मी प्रशिक्षणार्थियों के साथ ही प्रशिक्षकों के बीच भी समान रूप से लोकप्रिय थे. छोटे शहरों से आए ये दोनों गजब के साहसी एवं नये कामों को हाथ में लेने में तत्पर रहा करते थे. राजवी अक्सर रितेश को 'शरारती लड़के' कहा करती थी. वहीं रितेश राजवी को 'बुद्धू लड़की' कह दिया करता था.

हँसते-हँसाते, सीखते-पढ़ते दो माह का समय कब छू मंतर हुआ उन्हें पता भी न चला..

रितेश को पंजाब में पोस्टिंग मिली जबकि राजवी को महाराष्ट्र में. दोनों ही अपने काम में ऐसे डूबे कि उन्होंने एक दूसरे को कभी याद भी नहीं किया. हाँ, सोशल मीडिया के माध्यम से कभी-कभार एक दूसरे के फोटो को लाइक या शेयर जरूर कर दिया करते थे, किंतु सोशल मीडिया के इस आदान-प्रदान से उन दोनों की नजदीकी कहीं दूर-दूर तक दिखाई न देती थी. वैसे भी वे दोनों आज में जीने के अभ्यस्त थे और उन्हें पुरानी बातें अधिक प्रभावित नहीं करती थीं.

नियति जिसे मिलाने का निर्णय ले लेती है, वे मिल ही जाया करते हैं और फिर ऐसी मुलाकातों में भौगोलिक दूरी बिल्कुल आड़े नहीं आती. पाँच वर्ष पश्चात् उन दोनों ने कंपनी के एक प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने के लिए स्वेच्छा से अपना नाम दे दिया, क्योंकि वे दोनों ही जीवन में बदलाव चाहते थे. यह प्रोजेक्ट ग्राहक सेवा से जुड़ा हुआ था और मुंबई में एक वर्ष तक इसके तहत सर्वे किये जाने थे. राजवी को प्रोजेक्ट के डाटा कलेक्शन एवं प्रोसेसिंग टीम में स्थान मिला जबकि रितेश को मुख्य सर्वेयर की भूमिका मिली.

दोनों एक दूसरे से यूँ अकस्मात मिलकर अचंभित तो हुए पर बहुत प्रसन्न हुए. उनकी नयी टीम में वे दोनों ही एक दूसरे को पहचानते थे, बाकी लोग या तो बहुत वरिष्ठ थे या फिर उन्हें कंपनी ने कांट्रेक्ट पर रखा था. रितेश को प्रतिदिन अपने सर्वे की रिपोर्ट जमा करने कम्पनी मुख्यालय जाना होता था. राजवी से होने वाली प्रतिदिन की मुलाकातों ने उन्हें कब बहुत करीब ला दिया, यह तो उन दोनों को भी पता न चल सका. उनका यूँ करीब आना बहुत अप्रत्याशित था, क्योंकि वे दोनों ही बहुत खुले विचारों वाले थे और विवाह जैसी संस्था पर उन्हें तनिक भी विश्वास न था. राजवी के माता-पिता उसके लिए योग्य वर की तलाश करते-करते थक चुके थे और उन्होंने यह मान लिया था कि संसार में स्वयं की संतान को विवाह हेतु मनाने से दुरूह कार्य कोई और हो ही नहीं सकता था. संभवत: माउंट एवरेस्ट फतह करना इससे कहीं आसान होता, यदि उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की होती, परंतु उनकी बेटी... हारकर वे चुप बैठ गये थे और उन्होंने प्राय: सामाजिक कार्यक्रमों में भी सम्मिलित होना बंद कर दिया था, क्योंकि हर तरफ उन्हें लोगों के खुद की बेटी के विवाह विषयक सवाल और सवालिया निगाहें घेर लिया करती थीं. कोई उन्हें अधेड़ उम्र का लड़का दिखाता तो कोई झूठी सहानुभूति दर्शाता कि देखो बेचारों के घर में किसी बात की कमी न होने पर भी योग्य वर नहीं मिल रहा है.

कुछ-कुछ ऐसा ही हाल रितेश का था. तीन भाइयों में सबसे छोटा होने की वजह से परिवार में उसे सबका दुलार मिलता रहा था. उस पर किसी भी प्रकार की कोई रोक-टोक नहीं लगाई गयी थी, इसलिए वह अपने मन का मालिक था और यही कारण था कि परिवार के सभी सदस्यों के लाख समझाने पर भी वह विवाह हेतु तैयार नहीं होता था. उसे तो अच्छी तरह रहना, घूमना-फिरना, दोस्तों के साथ समय बिताना, फोटोग्राफी करना तथा कार्यालय में काम करना ही बहुत पसंद था. एक जगह टिककर वह काम नहीं कर सकता था और फील्ड के काम उसे

पसंद थे, जो कि उसे मिल भी जाते थे क्योंकि अधिकांश लोग ऐसे कामों से कतराते थे. फ्रेम में रितेश के बहुत सारे सिंगल फोटो भी चल रहे थे जो रितेश की अपनी बिन्दास जिंदगी की कहानी कह रहे थे.

प्रोजेक्ट के काम और मुंबई शहर की आपाधापी ने शुरू के कुछ दिन तो उन दोनों को बहुत व्यस्त रखा, किंतु धीरे-धीरे यह व्यस्तता अकेलेपन में बदलती चली गयी और ऑफिस से होटल और होटल से ऑफिस जाने-आने के इस सिलसिले ने दोनों ही को बहुत त्रस्त सा कर दिया.

एक दिन रितेश ने राजवी से कहा कि उसने अपने लिए एक कमरे का घर खोज लिया है. राजवी को हँसी आ गयी, "क्या कहा, एक कमरे का घर!" "हाँ भई एक कमरे में यहाँ पूरा संसार बस जाता है." राजवी ने पूछा, "क्या तुम्हारी सोसाइटी में कोई और घर भी है एक कमरे का"! तब रितेश ने उसके लिए भी अपनी ही सोसाइटी में एक घर ढूँढ़ दिया. इस तरह से दोनों ही एक सोसाइटी का हिस्सा बन गए.

मुंबई ऐसा शहर है जो न कभी सोता है और न ही किसी के लिए रोता है. दोनों सहकर्मी ऑफिस से छूटकर प्राय: साथ-साथ घर की ओर आते थे. घर पर आने से पहले रितेश की मोटर साइकिल पर लॉंग राइड का नियमित सिलसिला चल पड़ा. दोनों का घूमना और खाना साथ-साथ ही होने लगा. उनकी शामें रंगीन से रंगीनतर होती गईं. कहने को दोनों ने अलग-अलग रूम किराये पर लिए थे, लेकिन उनकी सुबह एवं शाम प्राय: इकट्ठे या यूँ कहें कि रितेश के घर पर ही बीतती थीं. धीरे-धीरे सिलसिला और आगे बढ़ता चला गया. अब उनका संबंध महज दोस्ती या ऑफिस सहकर्मी का नहीं रह गया था. एक पुरुष को स्त्री से और स्त्री को पुरुष से जो कुछ चाहिए होता है, वह सब कुछ वे एक दूसरे को देने लगे थे. जीवन के इस पहलू पर उन दोनों ने अब तक ध्यान ही नहीं दिया था. प्रेम सरिता ने उनके जीवन में एक नयी तरह की सरसता ला दी थी. एक दूसरे का होकर वे जीवन को सीमित अर्थों में देखने का प्रयास करने लगे थे. वे जान गये थे कि कैसे एक-दूसरे के साथ समय काटने पर, समय पंख लगाकर उड़ने लगता है. दोनों के दिन सुनहरी कल्पनाओं में बीतते तो रातें एक-दूजे के आगोश में! वे दोनों ही यह समझ गये थे कि जब कोई अपना हो जाता है तो दुनिया कितनी खूबसूरत लगने लगती है. शारीरिक चाहतों का मिल जाना एक अजीब सी संतुष्टि उन दोनों को प्रदान कर रही थी.

दोनों ही की जिंदगी में यह एक नया एवं अद्भुत मोड़ था. जहाँ राजवी रितेश पर सब कुछ न्यौछावर करने लगी, वहीं, रितेश भी राजवी को दिलोजान से चाहने लगा था. उनके लिव-इन के इस संबंध पर उन्हें गर्व था. लेकिन उनका संबंध किसी मूक व्यक्ति द्वारा लिये गये गुड़ के स्वाद जैसा था जिसे वह खा कितना भी ले, बोलकर अभिव्यक्त नहीं कर सकता था. अब भी उन दोनों के आसपास का वातावरण ऐसा नहीं हुआ था जो कि सहज रूप से ऐसे संबंधों को स्वीकार ले. उन दोनों के माता-पिताओं ने हालाँकि उन्हें पर्याप्त छूट दे रखी थी और अपने इस रवैये पर उन सभी को गर्व भी था, फिर भी संभवत: लिव-इन जैसे संबंधों को उनके लिए पचा पाना असंभव ही होता. एक दिन राजवी ने रितेश से पूछा कि ऐसे वे कब तक रह सकेंगे. तो रितेश मुस्कुराकर बोला कि जब तक कंपनी हमें इस महानगर में रखेगी. राजवी ने कहा, ठीक है हम भी इतना क्यों सोचें. हाँ एक बात का अवश्य ध्यान रखना होगा. रितेश बोला वह क्या. तब राजवी ने कहा कि लिव-इन रिलेशनशिप के भी अपने नियम एवं कायदे होते हैं. उन्होंने तय किया कि वे एक दूसरे पर अधिकार नहीं जताएंगे. खर्च भी साझा ही वहन करेंगे. किसी भी प्रकार की पाबंदी एक दूसरे पर नहीं थोपेंगे और सबसे बड़ी बात है कि वे आपसी भरोसे को बनाए रखेंगे. जब उन्हें अलग होना पड़ेगा तो सहजता के साथ वे अलग हो जाएंगे. किसी परंपरागत विवाह की भाँति ये कुछ वचन थे जो उन्होंने एक-दूजे को दिये. दोनों ने ही साथ-साथ रहकर मुंबई के सारे शौपिंग मॉल्स घूम लिए. वीक ऐंड पर वे खंडाला, माथेरन, एलीफेंटा, अलीबाग, महाबलेश्वर, पंचगनी आदि की सैर भी कर आए थे. सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा था. लिव-इन की शर्तों पर दोनों ही बढ़-चढ़कर खरा उतरना चाहते थे और हो भी क्यों न, यह संबंध उनकी अपनी पूँजी जो थी.

एक दिन जब रितेश अपना फील्ड वर्क करके रिपोर्टिंग के लिए ऑफिस पहुंचा तो राजवी उसे नहीं मिली. पूछने पर पता चला कि बॉस के साथ कोई लंबी मीटिंग चल रही है और बहुत से लोग उसमें सम्मिलित हैं. रितेश घर पहुंचा तो उसे बहुत अकेलापन अनुभव होने लगा. राजवी देर रात घर पहुंच सकी थी. अब यह सिलसिला चल ही पड़ा क्योंकि राजवी के बॉस को प्रोजेक्ट शीघ्र समाप्त करना था और वे इसके लिए तत्पर भी थे. अब राजवी रितेश से केवल वीक ऐंड पर ही मिल पाती थी. वह झल्लाता तो बहुत था, किंतु कुछ कहता नहीं था, क्योंकि राजवी को कुछ भी कहने का हक उसने पाया ही कहाँ था. राजवी भी कुछ-कुछ रितेश की कुंठाओं को समझ रही थी, किंतु वह किसी भी तरह की सफाई रितेश को देना उचित नहीं समझती थी. उसे लगा कि रितेश में इतनी समझदारी तो होनी ही चाहिए.

काम बढ़ता गया और वीकैंड भी प्राय: राजवी का ऑफिस में ही बीतने लगा. दोनों के बीच का अनबन बढ़ता जा रहा था. एक दिन तो खीजकर रितेश ने उससे पूछ ही लिया कि आखिर राजवी क्या समझती है अपने आप को? क्या काम सिर्फ उसी को है? क्या उसकी मीटिंग का देर रात तक चलना जरूरी है? क्या और लोग दुनिया में काम नहीं करते, वगैरह-वगैरह. इस पर राजवी ने बहुत ठंडेपन से जवाब दिया कि रितेश को समझना चाहिए कि वे जिस संबंध में हैं वह उनकी प्राथमिकता में कहाँ आता है. उनकी प्राथमिकता तो वही है जिसके लिए वे मुंबई आए थे. रितेश ने कहा, "तो इसका मतलब यह है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ तुम्हारे लिए?"

"बिल्कुल सही, जैसे मैं बहुत कुछ हूँ तुम्हारे लिए! इतने दिनों से मैं सुबह जल्दी जाकर रात देरी से आती हूँ, क्या तुमने कभी इस बात की परवाह की है कि आखिर मैं किस बात को लेकर परेशान हूँ या मेरे साथ भी कुछ ऐसा घट रहा हो जो मुझे पसंद न हो! क्या तुमने इस विषय पर कभी सोचा कि राजवी को कोई तकलीफ हो रही होगी? आखिर ऐसा क्यों कि मेरे लिए तुम्हारा सब कुछ होना जरूरी है और मेरा तुम्हारे लिए नहीं? तुम्हारी अपेक्षाएं इतनी अधिक क्यों हैं मुझसे?"

रितेश के पास न तो इसका कोई जवाब था और न ही वह किसी तरह की बहस में ही पड़ना चाहता था. वह अपना अधिकाधिक समय सोशल

मीडिया पर बिताने लगा. जहाँ घर की दोनों चाबियों का उपयोग होता है वहाँ आना-जाना भी निर्बाध हुआ करता है. राजवी को सुबह जल्दी जाना होता था और रात को आने में भी देरी हो ही जाती थी. वह अपनी चाबी का पूरा इस्तेमाल कर रही थी और घंटी बजाकर रितेश को कष्ट में भी नहीं डाल रही थी. रितेश के मन की उहापोह को वह भी समझ तो रही थी, किंतु उनके बीच ऐसा क्या था कि वह ही झुके. उनका संबंध तो साझेदारी का था, जिम्मेदारी का नहीं.

इस बीच रितेश का जन्म दिवस आ गया. राजवी ने अपने हाथों से बर्थडे कार्ड बनाकर रितेश के तकिये के पास छोड़ दिया. उसे लगा कि अब रितेश खुश होगा. शाम को जब वह सर्प्राइज देने के लिए घर जल्दी आ गयी तो उसने रितेश को घर पर नहीं पाया और कॉल करने पर उसने फोन नहीं उठाया. राजवी रितेश को फोन करती गयी, जब तक कि उसने फोन न उठा लिया. रितेश ने बताया कि वह अपने दोस्तों के साथ पार्टी कर रहा है और शायद देर रात तक ही लौटे. इस पर राजवी का अपना अहम भी जाग गया और उसने अपना कुछ सामान इस फोटोफ्रेम के साथ उठाया और अपने रूम पर आ गयी.

रितेश जब घर पहुंचा तो रात बहुत हो चुकी थी. राजवी का घर पर न मिलना उसे खटका तो सही, किंतु उसने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की और न ही राजवी को फोन ही किया. सुबह जब रितेश उठा तो उसे अपना कमरा बहुत खाली-खाली सा लगा. हालाँकि राजवी तो रोज ही उसके उठने से पहले घर छोड़ दिया करती थी, फिर भी पता नहीं क्यों आज वह घर उसे बहुत खाली लगा. यह भयावह सन्नाटा शाम को भी उसे खाए जाता था. वह अपने मन को कई बार समझा चुका था कि उसका राजवी के साथ क्या संबंध है जो उसे इतना अकेलापन महसूस करना चाहिए. दिन पर दिन उसकी हालत बिगड़ती ही जा रही थी, उसका किसी भी काम में मन नहीं लगता था और उसे महसूस हो रहा था कि वह जल्द ही बीमार होकर बिस्तर पकड़ लेगा.

दिन बीतते ही जा रहे थे और रितेश व राजवी किसी बस के उन सहयात्रियों की तरह हो गये थे जो यात्रा की शुरुआत में बहुत गर्मजोशी के साथ बातें करते हैं और कुछ देर में चुपचाप होकर अपने-अपने मोबाइल फोन में गुम हो जाते हैं. दोनों एक-दूसरे को याद करते थे, पर पहले कौन बोले इस प्रश्न पर वे दोनों ही अपने-अपने घरों में सिमट गये थे. आज जब अनायास ही राजवी को रितेश के लिए ब्लैक कॉफी बनाने की याद आई तो स्मृतियों की रेखाओं ने उसके मन में कुछ आशा की किरणों का संचार किया. फोटोफ्रेम पर विगत कई वर्षों की तस्वीरों एवं वीडियोज् ने उसे अब मुस्कुराने पर विवश कर दिया था. अनायास उसका हाथ अपने मोबाइल फोन पर चला गया.

"हैलो रितेश, क्या कर रहे हो?"

"कुछ नहीं, बस सोया पड़ा हूँ. बताओ क्या बात है."

"आज तो बहुत जल्दी उठ गये?"

"मैं सोया ही कब था??

"तो क्या रातभर जागते ही रहे?"

"हाँ, कुछ ऐसा ही समझ लो, या यूँ कहूँ कि पिछले कई दिनों से सो न सका हूँ तो कुछ गलत नहीं होगा."

"बातें बनाना तो तुमसे सीखना चाहिए! चलो क्या प्लान है? थोड़ी बातें बनाने की ट्रेनिंग मुझे देने आ जाओ. वैसे भी मैं कल सुबह की ट्रेन से जा रही हूँ. मुझे लखनऊ पोस्टिंग मिल गयी है."

"मुझे भी तो कानपुर ही पोस्टिंग मिली है. मैं भी कल सुबह वाली ट्रेन से जा रहा हूँ."

"अच्छा तो आ जाओ ब्लैक कॉफी पीने के लिए."

रितेश जब राजवी के घर पहुंचा तो गरमागरम कॉफी से उसका स्वागत हुआ. इसके पश्चात् दोनों में बातें होने लगीं.

राजवी: रितेश तुम सारी चीजें मैनेज कर लेते हो. अपना कमरा ठीक से रखते हो.

रितेश: कमरे को ठीक से रखने की क्या आवश्यकता है वह तो जैसा है वैसा ही ठीक है. फिर मैं तुम्हारे बिना कहाँ कमरे में रहा ज्यादा देर तक.

राजवी: क्यों मजाक कर रहे हो रितेश, खैर, मक्खन लगाना तो तुम्हें बहुत अच्छी तरह आता है, है न! यूँ ही तुम हमारे सम्मान प्राप्त मार्केटिंग अधिकारी थोड़े ही बन गये हो.

रितेश: नहीं, राजवी हम दोनों ही अपनी-अपनी अकड़ में रहे, लेकिन हमें यह क्यों नहीं समझ में आया कि हम एक बहुत बड़े रिश्ते को यूँ ही बिना जिम्मेदारी के निभाने की कोशिश कर रहे थे जो कि बहुत ही गलत था.

राजवी: हाँ, रितेश, बिना बंधन के कुछ भी सही नहीं होता. क्या अनुशासन के महत्व पर हमसे बचपन में निबंध नहीं लिखवाए जाते थे? हम जिसे अपनी स्वतंत्रता कहते हैं, वास्तव में वह तो स्वच्छंदता है. यह स्वच्छंदता हमें कुछ दिनों का सुख तो दे सकती है, किंतु आजीवन, चिरस्थायी सुख यदि पाना है तो विवाह जैसी संस्था में विश्वास बनाना ही होगा. हमारे माता-पिता कितने अच्छे हैं, हमें अपने मन से सब कुछ करने देते हैं. बस उनकी यही तो इच्छा है कि हमारा भी घर बस जाए. इसमें उनका अपना कोई स्वार्थ भी नहीं है, क्योंकि हमें तो अपने काम के सिलसिले में घर से बाहर ही रहना है, फिर भी वे हमारी खुशी को हमसे बेहतर समझते हैं.

इतना कहकर राजवी ने अपने पापा को फोन मिलाया और उनसे कहा.

"हैलो पापा, आप जहाँ भी हैं, जल्दी से इटारसी जंक्शन पहुंचने वाली किसी भी ट्रेन का टिकट करवाकर शीघ्र इटारसी पहुंचिये और हाँ अकेले मत आइये, जिन-जिन को साथ में ला सकते हैं, लेकर आइये. मुझे आपको एक सरप्राइज देना है."

ठीक ऐसा ही फोन कॉल रितेश ने भी अपनी मम्मी को किया.

अर्पित जैन
स्टा. प्र. के., भोपाल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित महिला विशेष हिन्दी कार्यशालाएँ

केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

क्षे.म.प्र.का.,बेंगलूरु

क्षे.म.प्र.का.,कोलकाता

क्षे.म.प्र.का., राँची

नोडल क्षे.का.,पुणे

क्षे.का.,इंदौर

क्षे.का.,गाजीपुर

क्षे.का.,हावड़ा

क्षे.का.,जबलपुर

क्षे.का.,पटना

क्षे.का.,रीवा

क्षे.का.,मुंबई (दक्षिण)

क्षे.का.,करनाल

क्षे.का.,महेसाणा

क्षे.का.,जयपुर

क्षे.का.,बड़ौदा

क्षे.का.,सूरत

क्षे.का.,भुवनेश्वर

क्षे.का.,नागपुर

क्षे.का.,विजयवाड़ा

क्षे.का.,नासिक

क्षे.का.,जालंधर

क्षे.का.,नेल्लूर

क्षे.का.,कानपुर

क्षे.का.,मदुरै

क्षे.का.,विशाखापट्टनम

क्षे.का., दुर्गापुर

क्षे.का.,बेलगावी

क्षे.का.,एर्णाकुलम

क्षे.का.,दिल्ली (उत्तर एवं दक्षिण)

क्षे.का.,रायपुर

जलेबी की महिमा

जलेबी यह शब्द 'यूनियन सृजन' के पेज पर सुनकर थोड़ा सा अचंभित होना स्वाभाविक है, किन्तु वास्तविकता यह है कि जलेबी हमारी संस्कृति का हिस्सा है, जो कि औषधि के साथ-साथ बहुत ही स्वादिष्ट मिष्ठान भी है, जो काफी गुणकारी भी है, तो चलिए आज आपको जलेबी के विषय में कुछ रोचक और दुर्लभ जानकारी देते हैं. दुनिया के 90 फीसदी लोग जलेबी का संस्कृत और अंग्रेजी नाम नहीं जानते? जलेबी सुबह के नाश्ते में है बहुत गुणकारी, साथ ही जानें जलेबी से जुड़े दिलचस्प किस्से..

क्या है जलेबी? - जानें

उलझनें भी मीठी हो सकती हैं, जलेबी.. इस बात की मिसाल है.

जलेबी का जलजला..

जलेबी में जल तत्व की अधिकता होने से इसे जलेबी कहा जाता है. मानव शरीर में 70 फीसदी पानी होता है, इसलिए इसे खाने से जलतत्व की पूर्ति होती है. जलेबी को रोगनाशक औषधि भी बताया है. गर्म जलेबी चर्म रोग की बेहतरीन चिकित्सा है.

जलेबी तेरे कितने नाम..संस्कृत में कुण्डलिनी, महाराष्ट्र में जिलबी तथा बंगाल में जिलपी कहते हैं. जलेबी का भारतीय नाम जलवल्लिका है. अंग्रेजी में जलेबी को स्वीट्मीट (Sweetmeet) और सिरप फील्ड रिंग कहते हैं.

जलेबी के भेद वेद में भी लिखे हैं.

- महिलाएं अपने केशों से 'जलेबी जूड़ा' भी बनाती हैं.

जलेबी का जलवा.. बंगाल में पनीर की, बिहार में आलू की, उत्तर प्रदेश में आम की, म. प्र. के बघेलखण्ड-रीवा, सतना में मावा की जलेबी खाने का भारी प्रचलन है. कहीं-कहीं चावल के आटे की और उड़द की दाल की जलेबी का भी प्रचलन है. ग्रामीण क्षेत्रों में दूध-जलेबी का नाश्ता करते हैं.

जलेबी तेरे रूप अनेक...

जलेबी डेढ़ अण्टे, ढाई अण्टे और साढ़े तीन अण्टे की होती है. अंगूर दाना जलेबी, कुल्हड़ जलेबी आदि की बनावट वाली गोल-गोल बनती है.

जलेबी से तात्पर्य...

जलेबी दो शब्दों से मिलकर बनता है. जल+एबी अर्थात् यह शरीर में स्थित जल के ऐब (दोष) दूर करती है. शरीर में आध्यात्मिक शक्ति, सिद्धि एवं ऊर्जा में वृद्धि कर स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रत करने में सहायक है. जलेबी के खाने से शरीर के सारे ऐब (रोग दोष) जल जाते हैं.

जलेबी औषधि भी है...

जलेबी अर्थात जल+एबी. यह शरीर में जल के ऐब, जलोदर की तकलीफ मिटाती है. जलेबी की बनावट शरीर में कुण्डलिनी चक्र की तरह होती है.

अघोरी की तिजोरी...

अघोरी सन्त आध्यात्मिक सिद्धि तथा कुण्डलिनी जागरण के लिए सुबह नित्य जलेबी खाने की सलाह देते हैं. मैदा, जल, मीठा, तेल और अग्नि इन 5 चीजों से निर्मित जलेबी में पंचतत्व का वास होता है. जलेबी खाने से पंचमुखी महादेव, पंचमुखी हनुमान तथा पांच फनवाले शेषनाग की कृपा प्राप्त होती है!

अपने ऐब (दोष) जलाने, मिटाने हेतु नित्य जलेबी खाना चाहिये. वात-पित्त-कफ यानि त्रिदोष की शांति के लिए सुबह खाली पेट दही के साथ, वात विकार से बचने के लिए-दूध में मिलाकर और कफ से मुक्ति के लिए गर्म-गर्म चाशनी सहित जलेबी खावें.

रोग निवारक जलेबी...

- जलेबी औषधि भी है

  जो लोग सिरदर्द व माईग्रेन से पीड़ित हैं वे सूर्योदय से पूर्व प्रात: खाली पेट 2 से 3 जलेबी चाशनी में डुबोकर खाकर पानी नहीं पिएं सभी तरह मानसिक विकार जलेबी के सेवन से नष्ट हो जाते हैं.
- जलेबी पीलिया से पीड़ित रोगियों के लिए यह चमत्कारी औषधि है. सुबह खाने से पांडुरोग दूर हो जाता है.
- जिन लोगों के पैर की बिवांई फटने या त्वचा निकलने की परेशानी रहती हो, वे 21 दिन लगातार जलेबी का सेवन करें.

जलेबी का जलवा...

जलवा दिखाने की इच्छा रखने वालों को हमेशा सुबह नाश्ते में जलेबी जरूर खाना चाहिये, जिन्हें ईश्वर से जुड़ने की कामना हो, तब जलेबी खाएं.

आयुर्वेदिक जड़ी बूटी जलेबी...

जंगली जलेबी नामक फल उदर एवं मस्तिष्क रोगों का नाश करता है. भावप्रकाश निघण्टु में उल्लेख है -

जो जंगल जलेबी खावै, दु:ख संताप मिटावै.
जलेबी खाये जगत गति पावै!

जलेबी खाने वालों को ब्रह्मचर्य का विधिवत् पालन करना चाहिये.

"टपकी जाये जलेबी रस की"

अत: आयुर्वेद में विवाह होने तक स्वयं पर अंकुश रखने का निर्देश है.

जलेबी के फायदे...

जलने, कुढ़ने में उलझे लोग यदि जानवरों को जलेबी खिलाएं तो मन शांत होता है. क्योंकि मन में अमन है, तो तन चमन बन जाता है और तन ही हमारा वतन है, नहीं तो सबका पतन हो जाता है, इसे जतन से संभालो.

जलेबी की कहावतें...

खायें जलेबी बनो दयालु तहि चीन्हे नर कोई.
तत्पर हाल-निहाल करत हैं रीझत है निज सोई.

जलेबी खाने से दया, उदारता उत्पन्न होती है. पहचान बनती है. आत्मविश्वास आता है.

रोज सुबह जलेबी खाओ. भव सागर से पार लगाओ.

खाली पेट करे मुख मीठा विद्वान वाद-विवाद बसो दे झूंठा..

बाबा कीनाराम सिद्ध अवधूत लिखते हैं -

बिनु देखे बिनु अर्स-पर्स बिनु, प्रात: जलेबी खाये जोई .

तन-मन अन्तर्मन शुद्ध होवे वर्ष में निर्धन रहे न कोई

जलेबी का नियम से प्रात:काल सेवन करें, तो बार-बार के जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है. जलेबी के अलावा अन्य मिठाई की ओर कभी देखें भी नहीं.

एक बहुत मशहूर कहावत है कि- तुम तो जलेबी की तरह सीधे हो

जलेबी बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:-

मैदा 900 ग्राम, उड़द दाल 50 ग्राम पानी में गलाकर पीसकर 500 ग्राम मैदा में 50 ग्राम दही मिलाकर दो दिन पूर्व खमीर हेतु घोलकर रखें, शेष मैदा जलेबी बनाते समय खमीर में मिलायें, शक्कर करीब 1 किलो को 300-400 एमएल पानी में डालकर चाशनी बनायें. जलेबी को बहुत स्वादिष्ट बनाने के लिए चाशनी में एक चम्मच नीबू का रस और केशर मिला सकते हैं.

जलेबी के खाने से लाभ...

एषा कुण्डलिनी नाम्ना पुष्टिकान्तिबलप्रदा. धातुवृद्धिकरीवृष्या रुच्या चेन्द्रीयतर्पणी..

(आयुर्वेदिक ग्रन्थ भावप्रकाश पृष्ठ 740)

अर्थात - जलेबी कुण्डलिनी जागृत करने वाली, पुष्टि, कान्ति तथा बल देने वाली, धातुवर्धक, वीर्यवर्धक, रुचिकारक एवं इन्द्रिय सुख और रसेन्द्रिय को तृप्त करने वाली होती है.

जलेबी का आविष्कार...

दुनिया में सर्वप्रथम जलेबी का आविष्कार किसने किया यह तो ज्ञात नहीं हो सका. लेकिन उत्तर भारत का यह सबसे लोकप्रिय व्यंजन है. भारत की जलेबी अब अंतर्राष्ट्रीय मिठाई है.

प्राचीन समय के सुप्रसिद्ध हलवाई शिवदयाल विश्वनाथ हलवाई के अनुसार जलेबी मुख्यत: अरबी शब्द है.

तुर्की मोहम्मद बिन हसन 'किताब-अल-ताबिक्र' एक अरबी किताब में जलेबी का असली पुराना नाम जलाबिया लिखा है. 300 वर्ष पुरानी पुस्तकें "भोजनकटुहला" एवं संस्कृत में लिखी "गुण्यगुणबोधिनी" में भी जलेबी बनाने की विधि का वर्णन है.

घुमंतू लेखक श्री शरतचंद पेंढारकर ने जलेबी का आदिकालीन भारतीय नाम कुण्डलिका बताया है. वे बंजारे बहुरूपिये शब्द और रघुनाथकृत 'भोज कौतूहल' नामक ग्रन्थ का भी हवाला देते हैं. इन ग्रंथों में जलेबी बनाने की विधि का भी उल्लेख है. 'मिष्ठान भारत की जान' जैसी पुस्तकों में जलेबी रस से परिपूर्ण होने के कारण इसे जल-वल्लिका नाम मिला है.

जैन धर्म का ग्रन्थ "कर्णपकथा" में भगवान महावीर को जलेबी नैवेद्य लगाने वाली मिठाई माना जाता है.

एम. जी. सिंघल
क्षे. का., रायपुर

मॉकरन

"कोई चिंता नहीं मैडम, कर दीजिये मेरा सिबिल खराब, मुझे कोई परवाह नहीं, मेरे घर में और छ: सदस्य हैं. मुझे आगे लोन नहीं मिलेगा तो क्या हुआ, मेरी पत्नी व मेरे भाई को तो मुद्रा लोन मिल जाएगा, शहर में चालीस और बैंक की शाखा हैं, आप नहीं दीजिएगा तो क्या हुआ, दूसरे बैंक से लोन पास होगा. और वैसे भी लोन देकर आपने कौन सा मुझ पर एहसान किया है प्रधानमंत्री की स्कीम है, सरकार पैसा दे रही है, आप वसूली के लिए क्यों इतना हाय-हाय करती हैं. ये आपके बैंक का मॉकरन तौकरन हम नहीं जानते, जब पैसा होगा किस्त भर दूंगा, व्यापार अभी मंदा है, जाइए जो बन पड़े कर लीजिये, विजय माल्या और नीरव मोदी से जाकर क्यों नहीं वसूलते, हम गरीब लोग ही परेशान करने को मिलते हैं." इतना कहकर विजय प्रसाद ने फोन काट दिया. बेचारी बैंक प्रबंधक सुप्रिया मैडम का चेहरा रूआँसा सा हो गया. गहन विचार में डूब गई, कैसे प्रबंधन करूँ! पिछली समीक्षा बैठक में मुद्रा लोन टार्गेट के लिए कितनी डांट पड़ी थी. ऋण बांटते समय दिन भर चक्कर लगाने वाले लोग, ऋण प्राप्त करते ही दुबारा शाखा में झाँकने तक नहीं आते, व्यापार अच्छा चलता है, परंतु किस्त भरने को पैसे नहीं हैं. खुद आकर किस्त भरने वालों की संख्या अब दिनों-दिन कम होती जा रही है, दस में से 3-4 तो ऐसे ऋणी होते जा रहे हैं, जो इरादतन चूककर्ता हैं. सरकार की मुद्रा स्कीम में किसी तरह ऋण प्राप्त करना है और फिर ऋण भरने की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है. जब तक बैंक से बार-बार फोन न आए, बैंक वाले चक्कर न लगाएं तब तक किस्त नहीं देना है. ऐसे लोगों का ध्यान हमेशा सरकारी स्कीम का निज स्वार्थ में कैसे फायदा उठाया जाए इसी में लगा रहता है, जिंदगी में कैसे आगे बढ़ें इसकी कोई चिंता नहीं. लेकिन ऐसे लोगों को रोकना ही होगा तथा देश हित के लिए लड़ाई लड़नी ही होगी, मन में दृढ़ निश्चय करके सुप्रिया मैडम रिकवरी ऑफिसर संतोष को साथ लेकर विजय प्रसाद के दुकान पर जाकर किस्त वसूलने के लिए निकल पड़ीं.

अखिलेश कुमार सिन्हा
आसनसोल शाखा, दुर्गापुर

'मगहर' - युग प्रवर्तक कबीर दास की निर्वाण स्थली

भारत की प्राचीन संस्कृति, अखंडता, सांस्कृतिक एकता और सांप्रदायिक सौहार्द के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महान संतों में संत कबीर दास का नाम अत्यंत आदर सहित लिया जाता है. उन्हें एक महान संत, दार्शनिक विचारधारा के धनी एवं सर्वधर्म समभाव वाला कवि माना जाता था. संत कबीर दास का निर्वाण स्थल लखनऊ-गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 27 पर लखनऊ से लगभग 242 किमी, बस्ती से 43 किलोमीटर दूर एवं गोरखपुर से लगभग 30 किलोमीटर पहले स्थित मगहर नामक गांव में है.

संत कबीर दास जैसे महान संत की निर्वाण स्थली होने के कारण समय-समय पर मगहर में कई बड़े नेताओं का दौरा होता रहता है. 11 अगस्त, 2003 को तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम भी यहां आए थे तथा इस स्थल के महत्व को देखते हुए इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल बनाने की वकालत भी की थी. कालान्तर में इंदिरा गांधी ने भी इस पवित्र स्थल का दौरा किया था, परन्तु 28 जून, 2018 को कबीर के 620वें प्रकाट्य एवं 500वें निर्वाण दिवस के अवसर पर आयोजित कबीर महोत्सव में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मगहर पधारने के बाद मगहर फिर से चर्चा का केन्द्र बन गया है और ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि कबीर निर्वाण स्थल मगहर एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा.

प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस क्षेत्र को एक विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल बनाने के लिए कई योजनाओं की घोषणा की, जिसमें से रूपये 24 करोड़ 93 लाख 75 हजार की लागत से संत कबीर शोध अकादमी का शिलान्यास भी शामिल है.

भौगोलिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि:-

कबीर निर्वाण स्थली के रूप में प्रचलित मगहर 1985 में गोरखपुर जिले में शामिल था, बाद में इसे बस्ती जिले में शामिल कर दिया गया. मगहर उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में से एक संत कबीर नगर जिले में स्थित है जिसका क्षेत्रफल 1659.15 वर्ग किलोमीटर है. 1680 में मुगल शासक औरंगजेब ने स्थानीय राजाओं को अपने अधीन लेते हुए उनसे पुन: करों की वसूली करने हेतु एक काजी खलील उर रहमान को कर वसूलनेवाला (चकलेदार) बनाकर गोरखपुर भेजा. गर्वनर ने तब मगहर के लिए प्रस्थान किया था. उनके सैनिकों ने पुन: किले को शाही सेना के अधीन मिला लिया तथा मगहर के राजा को कार्यमुक्त कर राप्ती नदी के तट पर स्थित बांसी किले में वापस जाने को बाध्य कर दिया था. मगहर में काजी खलील का मकबरा बना हुआ है.

सुगौली युद्ध के इतिहास का मुख्य प्रभाव गोरखपुर शहर तथा तत्कालीन बस्ती की आंतरिक परिस्थितियों पर भी पड़ा था. इस युद्ध से बस्ती जिले की कानूनी व्यवस्था की स्थिति खराब होने लगी. स्थिति इतनी भयावह हो गई कि मार्च 1815 में लौटन में ब्रिटिश सेना व किला स्थित होने के बावजूद भी बांसी तहसील पर 200 सियारमारों ने आक्रमण कर दिया और मगहर को अपने कब्जे में ले लिया. ब्रिटिशकाल में गोरखपुर के खजाने से इसके देखरेख हेतु चार आने का भुगतान किया जाता रहा. यह अनुदान की तिथि प्राय: नवाब सफदरजंग के दौरे के समय नियत की जाती थी, जब वह मंदिर की जरूरी चीजों की व्यवस्था करवाता था.

मगहर: नाम एक मान्यताएं अनेक

मगहर के बारे में कई किंवदंतियां प्रचलित हैं. उनमें से एक किंवदंती के अनुसार एक बार बद्रीनाथ जाते समय मगध नरेश अजातशत्रु अस्वस्थ हो गए और उन्होंने वहीं विश्राम किया और वहां की हवा-पानी उन्हें रास आई और वह जल्द ही ठीक हो गए. वहां से प्रस्थान

करते समय उन्होंने इस जगह का नामकरण मगध की पीड़ा हरने वाली जगह यानी मगधहर कर किया. बाद में मगध का नाम मगह हो गया तो यह मगहर के नाम से जाना जाने लगा. कबीरपंथी व अन्य संत महात्माओं ने मगहर की व्याख्या मग यानी मार्ग एवं हर यानी ज्ञान अर्थात ज्ञान प्राप्ति के रास्ते के रूप में की. कोई इसे मगहर को मामा का घर की संज्ञा भी देता है. हो सकता है कि यहां किसी महापुरूष या भगवान बुद्ध के ननिहाल या मामा का घर हो जिसे कालान्तर में इसे मगहर कहा जाने लगा हो. इस संबंध में एक और किंवदंती प्रचलित है कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध भिक्षु इसी मार्ग से कपिलवस्तु, लुम्बिनी व सारनाथ आदि स्थलों के लिए आया-जाया करते थे. सूनसान होने के कारण इस स्थान पर लुटेरे उन्हें लूट लिया करते थे. इसी कारण इस जगह का नाम मार्गहर यानी मार्ग में लुटनेवाला पड़ गया जो समय के साथ उसके अपभ्रंश मगहर के रूप में प्रचलित हो गया.

अभिशप्त धरती को पुण्यस्थली बना दिया कबीर ने

कबीर ने काशी को अपना कर्मक्षेत्र बनाया हुआ था, जो उस समय भारत में विद्या एवं धर्मसाधना का एक प्रमुख केन्द्र माना जाता था. एक बार मगहर में भीषण अकाल पड़ा, अकालग्रस्त ऊसर एवं सूखी धरती एवं पानी की कमी के कारण लोग त्राहि-त्राहि करने लगे. उस समय खलीलाबाद के नवाब फिदाई खान ने कबीर को मगहर चलकर वहां के दुखियों के दुख हरने का अनुरोध किया. कबीर वृद्ध एवं कमजोर होने के बावजूद भी इसके लिए सहसा तैयार हो गए, परन्तु उनके शिष्यों एवं भक्तों ने और कुछ पाखंडी एवं आडंबरी लोगों ने उन्हें मगहर के बारे में फैलाए गए अंधविश्वासों के बारे में बताया कि वह धरती अभिशप्त है और इसे नर्क के द्वार के रूप में जाना जाता है. वहां मरने से मोक्ष नहीं मिलता तथा मरनेवाला अगले जन्म में गधा बनता है. यहां तक कि उनके किसी व्यास मित्र ने भी कहा कि मगहर में मोक्ष नहीं मिलता. मगर अंधविश्वासों पर यकीन न करने वाले कबीर सदैव कर्म एवं आचरण पर बल देते थे तथा अपनी जिंदगी का अधिकांश समय काशी में बिता चुके थे, फिर भी रूढ़ियों एवं अंधविश्वास की परम्परा को तोड़ने के लिए अपनी मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व कबीर ने मगहर जाकर लोगों की सहायता करने और मगहर के सिर पर लगा कलंक सदा के लिए मिटाने का निर्णय लिया. इस संदर्भ में उन्होंने कहा है :-

लोका मति के भोरा रे, जो काशी तन तजै कबीरा,
तौ रामहि कौन निहोरा रे..

काशी छोड़ते हुए कबीर ने कहा था-

क्या काशी, क्या ऊसर मगहर, जो पै राम बस मोरा.
जो कबीर काशी मरे, रामहीं कौन निहोरा.

कबीर दास: एक संक्षिप्त परिचय

ऐसा माना जाता है कि कबीर का जन्म एवं निर्वाण एक ही दिन हुआ था. कबीर 120 वर्ष तक जीवित रहे. उपलब्ध विवरणों के अनुसार संत कबीर का जन्म 1398 ई0 में काशी के लहरतारा तालाब के निकट हुआ था. संत कबीर दास ने अपनी साखियों और दोहों के माध्यम से सामाजिक समानता, शांति और भाईचारे पर बल दिया. उनकी रचनाओं में हमें यही आदर्श देखने को मिलते हैं

संत कबीर दास के जन्म के बारे में यह भी प्रचलित है कि एक विधवा ब्राह्मणी को रामानन्द स्वामी ने भूलवश पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया. उनके आशीर्वाद से कबीर का जन्म हुआ. समाज में बदनामी से बचने के लिए उस ब्राह्मणी ने अपने नवजात शिशु को लहरतारा ताल के पास फेंक दिया. कुछ लोगों का यह भी मानना है कि कबीर 'नीमा' और 'नीरू' की वास्तविक संतान थे परन्तु कुछ लोग मानते हैं कि नीमा एवं नीरू ने केवल उनका पालन पोषण किया था. यह मान्यता है कि नीरू जुलाहे को एक नवजात शिशु लहरतारा ताल पर पड़ा मिला था जिसे वह अपने घर लाकर पालन-पोषण किया. कालान्तर में यही बालक कबीर कहलाया. कबीर ने सदा अपने आपको एक जुलाहे के रूप में ही प्रस्तुत किया है:-

"जाति जुलाहा नाम कबीरा बनि बनि फिरो उदासी"

कबीरपंथी मानते हैं कि कबीर की उत्पत्ति काशी में लहरतारा तालाब में एक कमल के फूल के ऊपर बालक के रूप में हुई. यह भी मान्यता है कि कबीर का जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिन्दू धर्म का ज्ञान हुआ. कबीर सिर्फ एक ही ईश्वरीय सत्ता में यकीन करते थे. वह मूर्तिपूजा, अवतार, मंदिर-मस्जिद, रोजा, ईद आदि कर्मकाण्डों के घोर विरोधी थे. उनका कहना था, "कंकर पत्थर जोरि के मस्जिद लयी बनाय, ता चढ़ि मुल्ला बांग दे कया बहरा हुआ खुदाय" कबीर ईश्वर को मित्र, माता-पिता और पति के रूप में देखते थे, जो मनुष्य के सबसे निकट होते हैं. तभी तो वह कहते हैं- "हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया" तो कभी कहते हैं "हरि जननी मैं बालक तोरा"

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे. उन्होंने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखे उनके शिष्यों ने उनके मुख से भाखे गए दोहों और साखियों को लिख दिया. कबीर स्वयं कहते हैं:

मसि कागद छूओ नहीं, कलम गही नहिं हाथ.

फिर भी कबीर ने कई ग्रथों की रचना कर दी. एच.एच. विल्सन के अनुसार कबीर के नाम में 8 ग्रंथ हैं. विशप जी.एच.वेस्टकॉट कबीर के 84 ग्रंथों की सूची प्रस्तुत किए हैं, वहीं रामदास गौड़ ने हिन्दुत्व में 71 ग्रंथों का विवरण दिया है. कबीर की वाणी संग्रह बीजक के नाम से प्रचलित है इसमें रमैनी, सबद और सारवी नामक तीन भाग हैं. ये बीजक पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अवधी, पूरबी, ब्रजभाषा आदि कई भाषाओं का मिला-जुला रूप है.

ऐसा माना जाता है कि कबीर ने 1518 ई में अपना देह त्याग दिया था. आज उनके निर्वाण के 500 वर्ष बीत चुके हैं. मगहर में अपना शरीर त्यागने से पूर्व कबीर ने कहा था

जा मरने सो जग डरे, मेरे मन आनंद.
कब मरिहो कब भेंटिहो, पूरण परमानंद..

मगहर, जहां कबीर दास की समाधि एवं मजार एक साथ

कबीर का स्वभाव मस्त मौला एवं फक्कड़ था. वह जानकारी नहीं बल्कि अपने कर्म से वंदनीय हुए. व्यक्ति से अभिव्यक्ति बने और फिर विचार से व्यवहार बनकर लोगों की आस्था का केन्द्र बने. उनके इस दोहे में यह स्पष्ट नजर आता है:

कबीरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर..

खलीलाबाद के नवाब के आग्रह पर मगहर पहुंचने के बाद कबीर ने वहां एक जगह धूनी रमाई. ऐसा माना जाता है कि धूनी रमाते ही वहां चमत्कारी रूप से एक जलस्रोत निकल आया और तालाब का रूप ले लिया इसे आज भी गोरख तलैया के नाम से जाना जाता है. संत कबीरदास ने वहीं एक आश्रम स्थापित किया तथा लोगों की सेवा में लग गए. कबीर के शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल थे. अपनी मृत्यु का पूर्वाभास होते ही उन्होंने अपने शिष्यों को सूचित किया. गुरू की सूचना पर कई शिष्य तुरंत वहां पहुंच गए. अपने शिष्यों की मौजूदगी में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया. गुरू के शरीर छोड़ते ही उनके शिष्यों ने अपनी साम्प्रदायिक मानसिकता से वशीभूत होकर अपने गुरू के शरीर के अंतिम संस्कार को लेकर आपस में लड़ने लगे. हिन्दू शिष्य उनके शरीर को जलाना तथा मुस्लिम शिष्य उन्हें दफनाना चाहते थे. हिन्दू काशी (रीवा) नरेश बीर सिंह के नेतृत्व में शस्त्र सहित कूच कर गए तथा मुसलमान नवाब बिजली खान पठान की सेना में गोलबंद हो गए. इसी दौरान कबीर के शव पर लिपटी चादर हवा के झोंके से खिसक गई और लोगों ने देखा कि उनका शरीर वहां से अचानक गायब हो गया था और वहां सिर्फ फूल बचे थे. उन फूलों में से आधे-आधे फूल हिन्दुओं और मुसलमानों ने बांट लिया और अपनी–अपनी मान्यताओं के अनुसार उनका अंतिम संस्कार किया.

कबीर चौरा

कबीर चौरा, नगर पंचायत के आमी नदी के तट पर स्थित है. कबीर की मृत्यु के उपरांत उनके हिन्दु अनुयायियों ने आधी जमीन पर अपने गुरू के लिए समाधि बना दी तथा मुसलमानों ने बाकी के आधी जगह पर मकबरा और आश्रम को समाधि स्थल बना दिया. इसे कबीर चौरा के नाम से जाना जाता है. समाधि और मजार के बीच की दूरी केवल 100 फीट है. कबीर के मजार का निर्माण सन 1518 में तथा समाधि का निमार्ण 1520 में कराया गया. कबीर के मजार के पास उनके शिष्य एवं फकीर कमाल साहब की भी मजार है. कबीर के मजार में प्रवेश हेतु केवल चार फीट से भी कम ऊंचाई का एक द्वार है. स्मारक के द्वार पर कबीर के दोहे लिखे गए हैं. समाधि स्थल के पास ही कबीर की गुफा है जिसका संरक्षण पुरातत्व विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है. इसके अलावा एक मूल कबीर गुफा भी है, जिसका जीर्णोद्धार दो शताब्दी पूर्व किया गया था. इस गुफा में जमीन से 60 सीढ़ियां नीचे उतरकर गुफा तक पहुंचना होता है. कहा जाता है कि कबीर कभी-कभी साधना अथवा एकांतवास के लिए इस गुफा में प्रवेश कर जाते थे. बाद में कुछ कबीरपंथियों द्वारा साधना के लिए इसका उपयोग किया जाता था. यह गुफा फिलहाल बंद है. मगहर स्थित कबीर निर्वाण स्थल का पूरा परिसर 27 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें 1982 में उद्यान निर्माण हेतु अधिग्रहित की गई 15 एकड़ जमीन भी शामिल है. यह परिसर हरा-भरा है तथा परिसर में कई बड़े पेड़ पर्यटकों को शांति का अहसास कराते हैं.

मगहर महोत्सव एवं अन्य आयोजन

मगहर में हर वर्ष कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें मगहर महोत्सव सबसे महत्वपूर्ण है. पहले यहां हर वर्ष मकर संक्रांति के दिन मेला लगता था. सन् 1932 में तत्कालीन कमिश्नर एस.सी. राबर्ट ने मगहर के व्यवसायी स्वर्गीय प्रियाशरण सिंह उर्फ झिनकू बाबू के सहयोग से 1955 से 1957 तक लगातार तीन वर्ष भव्य तरीके से यहां मेला आयोजित कराया, जिसमें राबर्ट ने अपने परिवार सहित भाग लिया. 1987 में इस मेले का स्वरूप परिवर्तित करने की योजना बनाई गई, तदुपरांत 1989 तक इस महोत्सव को 7 दिन और उसके बाद इसे 5 दिनों के आयोजन में परिवर्तित कर दिया गया. अब हर वर्ष 12-16 जनवरी तक मगहर महोत्सव मनाया जाता है. मगहर महोत्सव व कबीर मेले में विभिन्न विषयों पर परिचर्चा, संगोष्ठी, विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियां व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर कबीर के विचारों व संदेशों का प्रचार-प्रसार किया जाता है.

कबीरपंथियों की मूल गद्दी वाराणसी का कबीरचौरा मठ है. इसी मठ में स्थिति बलुआ मठ द्वारा मगहर के कबीर निर्वाण स्थल का भी संचालन किया जाता है जिसके वर्तमान महंत विचार दास हैं. इस संस्थान द्वारा संगीत, संत्संग, साधना, कबीर साहित्य का प्रचार-प्रसार, शोध साहित्य, कबीर बाल मंदिर, संत आश्रम, वृद्धाश्रम एवं गोसेवा तथा धर्मशाला आदि का भी संचालन किया जाता है. इसके अलावा माघ शुक्ल एकादशी को तीन दिवसीय कबीर निर्वाण दिवस समारोह और कबीर जयंती समारोह आयोजित किए जाते हैं. 1993 में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा ने संत कबीर शोध संस्थान की स्थापना कराई, जो इसी परिसर में स्थित है. यहां शोधार्थियों के सारे खर्चे की व्यवस्था संस्थान उठाता है.

आज के परिप्रेक्ष्य में मगहर एवं संत कबीर की चर्चा इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि आज भारत ही नहीं, पूरे विश्व में सांप्रदायिक उन्माद अपने चरम पर है. ऐसे में कबीर जैसे संत की विचारधारा, उन्माद भरे इस माहौल को समाप्त करने में बड़ी भूमिका निभा सकती है. संत कबीरदास हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक के तौर पर याद किए जाते हैं और वह धार्मिक सामंजस्य और भाईचारे की विरासत छोड़ गए हैं, जिसे कबीरधाम परिसर में जीवंत देखा जा सकता है.

राजेश कुमार
क्षे. का., राँची

हम गांव से निकले बच्चे

हम गांव से निकले बच्चे पाँचवी तक घर से तख्ती लेकर स्कूल गए थे. स्लेट को जीभ से चाटकर अक्षर मिटाने की हमारी स्थाई आदत थी, कक्षा में स्लेट खाकर हमने तनाव मिटाया था. स्कूल में टाट पट्टी की अनुपलब्धता में घर से खाद या बोरी का कट्टा बैठने के लिए ले जाया करते थे. कक्षा छः में पहली दफा हमने अंग्रेजी का कायदा पढ़ा और पहली बार ए, बी, सी, डी देखी. स्माल लेटर में बढ़िया एफ बनाना हमें बारहवीं तक भी नहीं आया था. करसिव राइटिंग तो आज तक भी नहीं आई. हम गांव के बच्चों की अपनी एक अलग दुनिया थी, कपड़े के बस्ते में किताब और कॉपियाँ लगाने का तरीका हमारा अधिकतम रचनात्मक कौशल था. तख्ती पोतने की तन्मयता हमारी एक किस्म की साधना थी. हर साल जब नई कक्षा के बस्ते के साथ नई किताबें मिलती, तब उन पर जिल्द चढ़ाना हमारे जीवन का स्थाई उत्सव था. आठ दस किलोमीटर दूर के कस्बे में साइकिल से रोज सुबह कतार बनाकर चलना और रेस लगाना हमारे जीवन की अधिकतम स्पर्धा थी. हर तीसरे दिन हवा भरने वाले पम्प को बड़ी युक्ति से दोनों टाँगों के मध्य फंसाकर साइकिल में हवा भरते फिर भी खुद की पेंट को काली होने से ना बचा पाते. स्कूल में मार पड़ती, मुर्गा बनते, लेकिन हमारा अहम् (इगो) हमें कभी परेशान नहीं करता था. हम गांव के बच्चे शायद तब जानते ही नहीं थे कि इगो क्या होती है. कक्षा की पिटाई का दर्द अगले घंटे काफूर हो जाता. रोज सुबह प्रार्थना के समय पीटी के दौरान एक हाथ फासला लेना होता था, मगर फिर भी धक्का मुक्की में सावधान विश्राम करते रहते. हम गाँव से निकले बच्चे सपने देखने का सलीका भी नहीं सीख पाते, अपने माँ -बाप को ये कभी नहीं बता पाते कि हम उन्हें कितना प्यार करते हैं. हम गांव से निकले बच्चे गिरते–संभलते, लड़ते-भिड़ते हुए दुनिया का हिस्सा बनते हैं. कुछ मंजिल पा जाते, कुछ यूं ही खो जाते हैं. कितना ही बड़ा क्यों ना बन जाए हम आज भी दोहरा चरित्र नहीं जी पाते हैं. हम गांव से निकले बच्चे थोड़े अलग नहीं पूरे अलग होते हैं.

आसमानी शर्ट और खाकी पैंट छोड़कर जब हम कॉलेज पहुंचे तो पहली दफा खुद के बड़े होने का अहसास हुआ.अंग्रेजी माध्यम शिक्षा का चयन तो कर लिया, लेकिन अंग्रेजी का भूत हमारे सपनों में आने लगा. आज भी याद है, कॉलेज का वो पहला दिन जब सभी विद्यार्थियों को अंग्रेजी में अपना परिचय देने को कहा गया. तीसरी पंक्ति में बैठा मैं अपने आप को किसी दूसरी दुनिया में महसूस कर रहा था. अपनी बारी आने पर अपने जीवन में प्राप्त सारे अंग्रेजी ज्ञान का प्रयोग अपना परिचय देने में कर डाला. अंग्रेजी के भूत को भगाने का निश्चय फिर उसी दिन कर डाला. फिर आरंभ हुआ जीवन की भाग दौड़ का सिलसिला. अंग्रेजी बोलना और लिखना सीख तो लिया, लेकिन आज भी हिन्दी जैसा अपनापन नहीं मिल पाया. स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण करने के बाद नौकरी पाना जैसे जीवन का एक मात्र उद्देश्य रह गया. पैसे का महत्व जीवन में बढ़ने लगा. परिवार की ज़िम्मेदारी, समाज में पहचान बनाने का दबाव, मेरे कंधों पे पड़ने लगा. अपनी लगन और कठिन परिश्रम से इस प्रतिस्पर्धा के दौर में सरकारी बैंक में नौकरी पाना दुनिया जीतने जैसा था.

फिर शुरू हुआ बैंकिंग क्षेत्र का सफर. अपने घर, गाँव, और राज्य से बाहर पूरे भारत भ्रमण का दौर. गुजरात में पहली नियुक्ति एक अलग अनुभव सिखा रही है. अब तो मानो घर से ऑफिस और ऑफिस से घर ही मेरी दुनिया है. आज की इस व्यस्त जीवन शैली में अपने ऑफिस, परिवार और अपने सपनों में सामंजस्य बैठाना ही जीवन का उत्सव बन गया है. शहरों की इस भीड़-भाड़ में गाँव की मिट्टी की खुशबू कहीं खो ना जाए, बस यही डर रहता है. हम गाँव से निकले बच्चे अपनी यादों में पूरा भारत बसा के चलते हैं. हम गांव से निकले बच्चे हैं. हम गांव से निकले बच्चे थोड़े अलग नहीं पूरे ही अलग होते हैं.

गौरव बाकलीवाल
क्षे. का., महेसाणा

महेसाणा के दर्शनीय स्थल

महेसाणा गुजरात प्रान्त का एक शहर जो कि अहमदाबाद से 74 कि.मी. दूर है. यह गुजरात के उत्तरी क्षेत्र के अंतर्गत आता है. महेसाणा लगभग 900 साल पुराने सूर्य मंदिर के लिए बहुत प्रसिद्ध है. 9027 वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल में फैला यह जिला लोहे और स्टील के सबसे बड़े बाज़ारों में है. यहाँ पर स्थित तरंगा, मोदहरा, पाटन, शङ्खेश्वर और महुड़ी जैन मंदिरों के लिए लोकप्रिय है. जिले का वडनगर हडकेश्वर मंदिर काफी चर्चित है. थोल वन्य जीव अभयारण्य अहमदाबाद से 40 कि.मी. दूर प्रमुख दर्शनीय स्थल है. जीव जन्तुओं और वनस्पतियों की विविध प्रजातियां यहाँ देखी जा सकती हैं. महेसाणा का निकटतम एयरपोर्ट अहमदाबाद है, जो यहाँ से करीब 100 कि.मी. की दूरी पर है.

महेसाणा जिले का इतिहास:- महेसाणा नगर की स्थापना चावडा वंश के संस्थापक मेंहसाजी चावडा ने की थी, उन्होंने ही तोरण द्वार और तोरण देवी को समर्पित मंदिर का निर्माण 1414 विक्रम संवत में करवाया था. 19 वीं शताब्दी में जब गायकवाड़ों ने बोरदा को विजित किया तो उसका विस्तार करते हुए 1902 में उन्होंने महेसाणा को अपनी राजधानी बना लिया, अर्थात महेसाणा अब बड़ौदा राज्य बन गया था और जब देश स्वतंत्र हुआ तब बड़ौदा भारत संघ में विलीन हो गया, ये तब बॉम्बे राज्य में गया और 1960 में जब गुजरात बना तो ये गुजरात में आ गया.

महेसाणा के प्रसिद्ध स्थान :-

मोढेरा सूर्य मंदिर:- इस महेसाणा के सूर्य मंदिर का निर्माण सम्राट भीमदेव सोलंकी प्रथम (ईसा पूर्व 1022-1063) ने करवाया था. मोढेरा सूर्य मंदिर गुजरात के पाटन नामक स्थान से 30 कि.मी. दक्षिण की ओर मोढेरा नामक गाँव में स्थापित है. वर्तमान समय में इस मंदिर में पूजा निषेध है. कहा जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने मंदिर तोड़ कर खंडित कर दिया था.

वडनगर:- वडनगर भारतीय रेलमार्ग व सड़क मार्ग से जुड़ा है. यह भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का जन्म स्थल है. बौद्ध और जैन धर्म लगभग एक साथ वडनगर में आए. किन्तु, जैसा भारत के अन्य प्रदेशों में हुआ, वैसे ही यहाँ से आठवीं सदी के बाद धर्म लुप्त हो गया. यह शांति और समृद्धि का काल था. वडनगर में बहुत से दर्शनीय स्थल हैं जैसे - हाटकेश्वर महादेव, ताना रिरि की समाधि, जैन देरासर, संग्रहालय, शर्मिता झील, गौरीकुण्ड पंचम मेहता का कुआँ, खोखा गणपति, प्राचीन पुस्तकालय, कीर्ति तोरण या नरसिंह मेहता की छोरी, नाग मंदिर, अमरकुंड, महाकालेश्वर मंदिर, सप्तर्षि इत्यादि.

पाटन:- मध्ययुगीन काल के दौरान कभी गुजरात की राजधानी रह चुका, पाटन आज बीते युग के साक्ष्य के रूप में खड़ा है. पाटन 8वीं सदी के दौरान, चालुक्य राजपूतों के चावडा साम्राज्य के राजा वनराज चावडा द्वारा बनाया गया एक गढ़वाली शहर था. इसे अन्हिलवाड़ पाटन भी कहा जाता है, जिसका नाम राजा वनराज के चरवाहे मित्र अन्हिल के नाम पर पड़ा. वर्तमान में, शहर कभी दिल्ली के सुल्तान, कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा तबाह किए गए एक राज्य के खंडहरों के बीच खड़ा है. मुस्लिम आक्रमण के परिणामस्वरूप, पाटन में कुछ मुस्लिम आर्किटेक्चर हैं, जो अहमदाबाद में स्थित आर्किटेक्चर से भी पुराने हैं. हाल ही में भारिबैं ने 100 रुपए के नोट की डिज़ाइन में यह सात मंजिला बावड़ी लिया. मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली और जल संग्रह प्रणाली का नायाब उदाहरण है एवं इसमें भगवान विष्णु के दस अवतारों की कलाकृतियाँ उकेरी गई हैं. पाटन में सोलंकी युग के दौरान निर्मित हिन्दू और जैन मंदिर पाये जा सकते हैं. वर्तमान में, पाटन पटोला साड़ियों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो सलविवाड में मश्रु बुनकरों द्वारा बनायी जाती है. पाटन में बुने रेशम पाटन को पटोला के नाम से जाना जाता है. वे रेशम की बुनाई के लिए 'दोहरी इक्त शैली' का उपयोग करते हैं. इस विशेष शैली का प्रयोग पटोला बुनकरों के अलावा सिर्फ इन्डोनेशिया में ही प्रयोग किया जाता है.

अम्बाजी:- भारत का सबसे पुराना और पवित्र तीर्थ स्थान है. ये शक्ति की देवी सती को समर्पित बावन शक्तिपीठों में से एक है. गुजरात और राजस्थान की सीमा पर बनासकांठा जिले की दान्ता तालुका में स्थित गब्बर पहाड़ियों के ऊपर अम्बाजी माता स्थापित हैं. यह स्थान अरावली पहाड़ियों के घने जंगलों से घिरा है. यह स्थान पर्यटकों के लिए प्राकृतिक सुंदरता और अध्यात्म का संगम है. गब्बर पहाड़ियों पर कैलाश हिल सूर्यास्त बिन्दु जैसे स्थान हैं, जहाँ से पर्यटक न केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं बल्कि रोपवे पर भी घूम सकते हैं. पवित्र कुण्ड के दोनों ओर दो मंदिर स्थित हैं, एक महादेव जी को और दूसरा माता अम्बाजी की बहन अजय देवी को समर्पित है.

तरंगा हिल्स:- अहमदाबाद से 140 कि.मी. दूर स्थित तरंगा हिल्स को जैन मंदिरों के लिए जाना जाता है. इस पहाड़ी को जैन मंदिर सिद्ध क्षेत्र कहा जाता है. माना जाता है कि इन पहाड़ियों के शिखर पर अनेक संतों ने मोक्ष प्राप्त किया था. 12वी शताब्दी में श्वेतांबर सोलंकी राजा कुमारपाल ने भगवान अजीतनाथ के सम्मान में यहाँ एक खूबसूरत मंदिर का निर्माण करवाया था.

शंखेश्वर पदमावती तीर्थ:- शंखेश्वर में स्थित यह जैन तीर्थस्थल 125 फिट ऊंची पदमावती देवी की आकर्षक प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है. पदमावती देवी की मूर्ति के अलावा सरस्वती देवी, महालक्ष्मी देवी, नकोड़ा भैरवजी और मनीभद्रवीर की प्रतिमाएं भी यहाँ देखी जा सकती हैं. इस तीर्थ के निकट ही 108 भक्तिविहार, विहार पार्श्वनाथ, श्री अगम मंदिर तीर्थ, भक्तामर मंदिर और गुरुमंदिर भी देखे जा सकते हैं.

घंबू तीर्थ:- यह लोकप्रिय जैन तीर्थस्थल महेसाणा के घंबू में स्थित है. गंबीरा पार्श्वनाथ यहाँ का प्रमुख आकर्षण है. हर साल हजारों की तादाद में सैलानियों का यहाँ आगमन होता है.

रुनी तीर्थ:- रुनी गाँव में स्थित यह तीर्थ, 126 सेमी. ऊंची भगवान गोडीजी पार्श्वनाथ की सफ़ेद प्रतिमा के लिए लोकप्रिय है. यह मूर्ति पद्मासन में स्थापित है. माना जाता है कि इसे हेमचन्द्राचार्य ने 450 साल पहले स्थापित किया था.

अड़ालज:- अड़ालज में अड़ालज की बावड़ी बहुत प्रसिद्ध है, यह एक सीढ़ीनुमा कुआँ है, इसका निर्माण कार्य रणवीर सिंह द्वारा प्रारम्भ करवाया गया था. कुएं में उस समय की वास्तुकला की छवि और निपुणता आपको साफ दिखेगी जो आपको सम्मोहित कर दुबारा उसी काल में ले जाएगी. स्थापत्य का एक अद्भुत नमूना है. इसकी वास्तुकला में भारतीय शैलियों के साथ-साथ इस्लामी शैलियों को भी उकेरा गया है. यह बाव पाँच मंज़िला और अष्टभुजाकार बनी हुई है. वास्तुकला का अद्भुत नमूना 16 स्तंभों पर खड़ा है. यहाँ सूरज की रोशनी बहुत कम वक़्त के लिए अंदर तक पहुँच पाती है, इसलिए इसके अंदर का तापमान बाहर के तापमान से 6 डिग्री कम ही रहता है. बाव की दीवारों व स्तंभों पर कई देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी उकेरी गयी हैं, जिनकी पूजा करने, गाँव वाले रोज सुबह आते हैं. यहाँ के लोगों का कहना भी है कि, इसकी दीवारों पर बनी नव ग्रह की प्रतिमाएँ, इस बावड़ी की रक्षा करती हैं. इसकी पहली मंजिल पर लगे संगमरमर के पत्थर पर लिखे आलेख से मालूम होता है कि इसे सन् 1499 में रानी रुदाबाई ने अपने पति राजा रणवीर सिंह की याद में बनवाया था. भारत में इस तरह के कई सीढ़ीनुमा कूप हैं, अड़ालज गाँव गांधीनगर जिले के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और गांधीनगर से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर है. यह छोटा-सा गाँव पहिन काल में दांडई देश के नाम से जाना जाता था.

थोल झील:- यह कृत्रिम झील महेसाणा के कलोल में थोल गाँव के पास स्थित है. 1912 में इसका झील के रूप में निर्माण किया गया. थोल बर्ड अभयारण्य 1988 में घोषित किया गया था. यहाँ पक्षियों की 150 प्रजातियों का निवास स्थान है, जल पक्षी के बारे में 60% है. इस झील को शुरुआत में गायकवाड़ शासन द्वारा एक टैंक के रुप में किसानों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए स्थापित किया था. थोल झील के रूप में इसे 1912 में बनाया गया था. इस झील के पानी का उपयोगकर्ता अधिकार की स्थापना की.

महेसाणा बहुत ही शांत एवं दर्शनीय स्थान है, यहाँ पर बहुत से पर्यटन स्थल और तीर्थ स्थल भी है!

अनिता मीना
क्षे. का., महेसाणा

महिला दिवस की आवश्यकता क्यों?

8 मार्च

विश्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस प्रति वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है. यह दिन प्रति वर्ष विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा एवं प्यार प्रकट करते हुए महिलाओं के आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में मनाया जाता है. 1975 में, महिला दिवस को आधिकारिक मान्यता उस वक्त दी गयी थी, जब सयुंक्त राष्ट्र ने इसे वार्षिक तौर पर एक विषय के साथ मनाना शुरू किया. इस साल महिला दिवस की थीम "I am generation equality: Realizing Women's Right" है. इसका मतलब महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और जेंडर इक्वेलिटी पर बात करना है.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास:

ऐतिहासिक रूप से इस दिन की नींव प्राचीन ग्रीस की महिला लिसिसट्राटा ने रखी थी तथा वर्ष 1909 में सोसलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका द्वारा पहली बार पूरे अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया गया. वर्ष 1910 में सोसलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा कोपेनहैगेन में महिला दिवस की शुरुआत हुई. शुरुआत में इसके मुख्य उद्धेश्य में नौकरी में भेदभाव खत्म करने से लेकर सरकारी संस्थानों में समान अधिकार के साथ मताधिकार जैसे कई अहम मुद्दे शामिल थे.

भारत में महिला दिवस की महत्ता किसी समाज एवं शासन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ की महिलायें कितनी सुरक्षित, पोषित एवं आत्मनिर्भर हैं. देश के विकास में महिलाओं के विकास की अहम भूमिका समझते हुए भारत का संविधान ना सिर्फ समानता का अधिकार देता है बल्कि राज्यों को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक प्रावधान का निर्णय लेने को भी कहता है. लेकिन कई आर्थिक एवं सामाजिक करणोंवश हम उन लक्ष्यों को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो पाये हैं. दुर्भाग्यवश परंपरागत रूप से महिलाओं को समाज में कमजोर वर्ग के रूप में देखा गया है, जिस कारण हमारे समाज में औरतों के प्रति कई कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया जैसे कि लिंग आधार में असमानता, तीन तलाक कुप्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, उचित शिक्षा का अभाव, शारीरिक दुष्कर्म, घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या आदि कई आर्थिक एवं सामाजिक कुरीतियाँ, जो महिलाओं के विकास के साथ-साथ देश के विकास में भी बाधक साबित हो रही हैं. हालांकि सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कई तरीक़ों से महिलाओं की सुरक्षा एवं आत्मनिर्भरता के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं. हमारे

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 मार्च, 2018 को देश के बच्चों, महिलाओं एवं गर्भवती माताओं के पोषण को सुनिश्चित करने के लिये पोषण अभियान का उद्घाटन किया. इस वर्ष महिला दिवस, 2020 पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पर #sheinspiresus मुहिम की शुरुआत भी की.

सरकार द्वारा प्रयासरत योजनायें/कानून:

1. दहेज निषेध अधिनियम, 1961
2. बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006
3. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्या योजना
4. प्रधानमंत्री मातृ वंदना योज़ना, 2017
5. सबला योज़ना, 2011
6. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, 2015
7. जननी सुरक्षा योज़ना, 2005
8. वन स्टॉप सेंटर स्कीम, 2015 द्वारा निर्भया फ़ंड की स्थापना
9. शी बॉक्स पोर्टल 2018
10. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, 2016
11. कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकधाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013
12. घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005
13. स्वाधार स्कीम, 2002
14. नारी शक्ति पुरस्कार, 1999
15. महिला-ई-हाट, 2016
16. राष्ट्रीय महिला कोष, 1993

महिला परिवार एवं समाज को आकार ही नहीं देती बल्कि इनका समुचित विकास करने में एक अग्रणी भूमिका रखती है. सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपालानी, विजयलक्ष्मी पंडित, किरण बेदी, अरुणा आसफ अली, कस्तूरबा गांधी एवं ऐसी अन्य कई महिलाओं ने देश में जागृत नारी शक्ति का उदाहरण पेश किया है. देश के विकास में आज शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जिसमें महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज ना करवायी हो. हालांकि सरकार इस क्षेत्र में महिलाओं के समग्र विकास के लिये हरसंभव प्रयास कर रही है और इसी का परिणाम है कि महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन भी देखने को मिला है. उपर्युक्त योजनाओं के माध्यम से सरकार ने महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दशा -सुधार के लिए कई अहम कदम उठाए हैं परंतु इसका उचित फल प्राप्त करने के लिए प्रत्येक नागरिक को कदम उठाने होंगे. एक जागरूक नागरिक बनके हमें अपने आगे आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य एवं वर्तमान को बेहतर बनाने के लिए पुरजोर कोशिश की आवश्यकता है. सभी का साथ होकर ही विकास की अपेक्षा की जा सकती है. शास्त्रों के अनुसार: यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: अर्थात जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं. देश के विकास में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है.

महिलाओं के खिलाफ़ भेदभाव को खत्म करके उनके विकास पर ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से इस दिन की महत्ता है. महिलाओं के योगदान को देखते हुए महिला दिवस की आवश्यकता का महत्व अधिक बढ़ जाता है. समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं का उचित प्रतिनिधित्व देश के सामाजिक एवं राजनैतिक विकास में एक प्रबल नींव का पत्थर साबित हो सकता है. सरकार के साथ -साथ देश के हर नागरिक का ये कर्तव्य बनता है कि वो महिलाओं के विकास में सहायक बने ना कि बाधा. इसी सकारात्मक सोच के साथ हम उम्मीद करते हैं कि आने वाले पलों में एक बेहतर भविष्य की कामना करते हुए विभिन्न कोशिशों के परिणाम स्वरूप सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेंगे.

ऋतु सिंह
यू. एस. के., गुरदासपुर

राजभाषा हिंदी में डिजिटल क्रांति

- डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा

लेखन/अनूदित कार्य:

** 1979 डॉ.एस. राधाकृष्णन द्वारा लिखित 'हमारी विरासत' और 'रचनात्मक जीवन' का हिंदी में अनुवाद * 1982 'राजभाषा के नए आयाम' * 1996 हिंदी में कंप्यूटर के भाषिक आयाम * 2015 पं. अजय भांबी द्वारा लिखित Planetary Meditation का हिंदी अनुवाद * 2003 से अब तक अमेरिका स्थित Centre of Advanced Study of India, पैसिल्वेनिया वि.वि के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों का हिंदी अनुवाद * 2018 अमेरिकन वि.वि, वाशिंगटन डी.सी. के लिए स्वास्थ्य संबंधी लेखों का हिंदी अनुवाद.*

पुरस्कार:

** 5 वर्षों तक लगातार माइक्रोसॉफ्ट का सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार MVP(Microsoft Valuable Professional). * महामहिम राष्ट्रपति द्वारा उत्कृष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन के लिए आत्माराम पुरस्कार से सम्मानित.*

राजभाषा हिंदी की उन्नति के लिए प्रयासरत एवं इस क्षेत्र में डिजिटल क्रांति लाने वाले एक ऐसे ही शख्सियत से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हुई भेंटवार्ता के कुछ अंश हम आपके लिए लेकर आए हैं, जिन्होंने ना सिर्फ बैंक में अपितु रेलवे, शिक्षा, पत्रकारिता जैसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें आपने योगदान दिया है. माइक्रोसॉफ़्ट जैसी कंपनी में भाषा सलाहकार के तौर पर रहे हैं. आपने सीडेक पुणे में भी भाषा सलाहकार के रूप में योगदान दिया है. सौभाग्य की बात है कि आप हमारे बैंक के पहले प्रथम राजभाषा अधिकारी रहे हैं. एक ऐसा नाम जिन्होंने ना सिर्फ भारत में बल्कि देश-विदेश में भी राजभाषा का परचम लहराया है. आज भी आप भाषा के तकनीकी विकास के क्षेत्र में कार्यरत हैं और इस क्षेत्र में कई देशों में आपको व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया जाता है.

जी हाँ ! बिलकुल सही समझा है आपने, हम बात कर रहे हैं डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा की.

28 अगस्त, 1946 को पंजाब में जन्म लेने वाले मल्होत्रा जी वर्ष 2002 में माइक्रोसॉफ़्ट में भाषा सलाहकार बनने से पूर्व 1978-2002 तक भारत सरकार के रेल मंत्रालय में निदेशक(राजभाषा) के पद पर रहे हैं. इससे पूर्व आप यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के राजभाषा प्रभारी रहे हैं. लेखन और अनुवाद के क्षेत्र में भी आप सक्रिय हैं. पेश है 21 मार्च, 2020 को हुई उनसे भेंटवार्ता के कुछ अंश :

प्र. सबसे पहले आप अपने बचपन और शिक्षा-दीक्षा के बारे में हमें बताइए.

मेरा जन्म फिरोजपुर (पंजाब) में हुआ. जन्म के बाद ही माँ गुजर गई, पिताजी भी साधू बन गए तो दादी मुझे गुरुकुल छोड़ आई. अत: बचपन की कोई याद नहीं है. याद है तो बस गुरुकुल की. मैं खुद को शान से गंगा पुत्र कहता हूँ. प्रकृति ही मुझे माँ लगती है और यह मेरे तन-मन में रची बसी है. जो कुछ भी पाया, जो कुछ भी सकारात्मकता मिली सब प्रकृति से मिली. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से स्नातक किया फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया. भाषायी विकास हेतु यू.के. और अमेरिका में कुछ शोध भी किया. अनुवाद और भाषायी तकनीक मेरी उच्चतर शिक्षा का केंद्र रहा है.

प्र. आपके व्यावसायिक जीवन की बात करें तो आपकी शुरुआत हिन्दी पत्रकारिता से हुई है. वैसे आपका सपना क्या था तथा हिन्दी के प्रति झुकाव कैसे आया?

हिन्दी के प्रति मेरा झुकाव शुरू से था. मेरी शिक्षा - दीक्षा भी हिन्दी माध्यम से ही हुई है. जहां तक व्यावसायिक जीवन का सवाल है यह बात सच है कि मेरे व्यावसायिक जीवन की शुरुआत हिन्दी डाइजेस्ट, मुंबई में अंशकालिक पत्रकार के रूप में हुई. हिन्दी के लिए यूनियन बैंक में आने से पूर्व मैंने भारतीय रिजर्व बैंक में 3 वर्षों (1970-73) तक कार्य किया, यहाँ पर हमने प्रशासनिक शब्दावली पर काम किया और पहली बार प्रशासनिक शब्दावली बनी.

प्र. माइक्रोसॉफ़्ट में आपका सफर, लैङ्ग्वेज इनपुट टूल यूनिकोड में आपका योगदान, एक ऐसा क्षेत्र जिसके बारे में सभी जानना चाहेंगे. कृपया इस बारे में बताएं.

इसकी एक दिलचस्प कहानी है. बात वर्ष 2000 की है जब मैं रेलवे में निदेशक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत था. उसी वर्ष माइक्रोसॉफ़्ट ने यूनिकोड वर्जन 2000 की घोषणा की. इसके लॉन्च के समय मुझे आमंत्रित किया गया. मुझसे सुझाव मांगा गया, मैंने पूरा परिदृश्य उनके सामने रखा और कहा कि भविष्य यूनिकोड का होगा और सबको उसी के साथ चलना होगा. सौभाग्यवश 2 साल बाद वर्ष 2002 में मेरे पास माइक्रोसॉफ़्ट से कॉल आया और पूछा गया कि "कैन यू लीड अवर टीम" (क्या आप हमारी टीम को लीड कर सकते है)? यह मेरा ध्येय भी था और रुचि भी, इस प्रकार से वर्ष 2002 में मैं माइक्रोसॉफ़्ट से जुड़ गया और 2009 तक भाषा सलाहकार के रूप में कार्य किया. जहां तक यूनिकोड की बात है, यही एकमात्र माध्यम है, जिससे हम सभी विश्वस्तरीय उन्नत भाषाओं के समकक्ष खड़े हो सकते हैं. स्पेल चेकर, ऑटो करेक्ट, थिसॉरस आदि सभी सुविधाएं इसमें भी उपलब्ध हैं जिसका अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए. एक बात और इनस्क्रिप्ट टाइपिंग जरूर सीखें. इससे कुछ शब्दों के वर्णों को टाइप करने में होने वाली समस्या नहीं रहेगी.

प्र. आप टेक सेवी हैं, ऐसे में नई पीढ़ी के लोगों को हिन्दी की स्वीकार्यता के साथ कार्य - कौशल के लिए क्या सुझाव देना चाहेंगे?

एक बात समझनी पड़ेगी कि जब तक हिन्दी में तकनीक का दखल नहीं होगा. हिन्दी के विकास की आप कल्पना नहीं कर सकते हैं. हिन्दी में अनंत संभावना है. मैं रेलवे में कहा करता था "हिन्दी जमीन से जुड़ने वाली और अंग्रेज़ी आसमान छूने वाली भाषा है". हमें सहअस्तित्व के साथ इसे देखना होगा और इसमें संभावनाओं को समझना होगा. आपको

क्षेत्रीय भाषाओं के साथ इसे लेकर चलना होगा. सम्पूर्ण सिस्टम समय की मांग पर निर्भर करता है. हमारे पास राजभाषा नीति, नियम व अधिनियम हैं, जिससे हम बंधे हुए हैं, लेकिन आपको पता है पेप्सी, कोला जैसी कई कंपनियों के वैबसाइट हिन्दी में हैं. इनपर ऐसा कोई नियम लागू नहीं होता है. यह आप जितनी जल्दी समझ लें उतना बेहतर होगा.

प्र. रेलवे में द्विभाषिक चार्ट बनाने से संबंधी वाक़या आप स्पष्ट करें.

उस समय स्व. माधव राव सिंधिया रेल मंत्री थे, जब उनके समक्ष मैंने यह बात रखी तो सबको अजूबा सा लगा. फिर समझाया तो बात हुई कि कन्वर्ट कैसे होगा, टाइप कैसे होगी, प्रिंटिंग कैसे होगी? फिर इस शर्त पर अनुमति मिली कि अगर एक भी दिन देर हुई तो यह सुविधा नहीं मिलेगी. आज परिणाम आपके सामने है. समस्त भारत में एक साथ द्विभाषिक आरक्षण चार्ट उपलब्ध होता है. इसके लिए एक टेक्निकल टीम बनी, जिसका मैं सदस्य सचिव था. मैंने उपलब्ध सभी संभावनाओं की तलाश की, सभी प्रिंटर रीड किए और सॉफ्टवेअर पर काम किया. अब मैं गर्व के साथ यह कहता हूं. इतनी बड़ी क्रांति मेनुवली संभव नहीं थी. अब टिकट प्रिंटिंग भी हिन्दी में संभव हो गया है. एक बात और, राजनीतिक इच्छा शक्ति के बिना आप कुछ नहीं कर सकते. आप ऑर्डर देकर ऐसा नहीं कर सकते है. साथ बैठकर करेंगे तो प्रशासनिक लोग भी आपके साथ रहेंगे. इस क्रांति के लिए सारा रेलवे तंत्र मेरे साथ हो गया था.

प्र. यूनियन बैंक से आपका संबंध कैसा रहा एवं आपने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्यों छोड़ा?

एक बात स्पष्ट कर दूँ कि यूनियन बैंक में सरकारी तंत्र की बू नहीं आती थी. कट्टा साहब (तत्कालीन एमडी) ने जिस सम्मान से मुझे रखा, इतना प्यार मिला, मानो एकदम घर जैसा आनंददायक. तनाव बिलकुल नहीं था. गोपालन साहब (एमडी) के समय भी काफी कार्य करने का अवसर मिला. राजभाषा में पदों का सृजन, बैंकिंग की मुख्य धारा में हिन्दी, राजभाषा अधिकारी को सामान्य बैंकिंग का प्रशिक्षण, मूल रूप से कहें तो हिन्दी को मास बैंकिंग से लेकर क्लास बैंकिंग ले जाने हेतु हमनें प्रयास किया. वह समय था, जब सब आप पर निर्भर था, आपके काम करने का तरीका एवं आपकी छवि कैसी है, यह सब इस बात पर निर्भर था. उस समय रेलवे में सबसे बड़ी पोस्ट आई थी जो आईएएस से भी बड़ा पद था. मैंने आवेदन दे दिया. मेरे इंटरव्यू पैनल में अन्य लोगों के साथ स्वयं हरिवंश राय बच्चन साहब भी थे. चयनित हुआ तो रेलवे में आ गया. फिर भी ऋणी हूँ 'यूनियन बैंक' का कि यहाँ कोई तकलीफ नहीं हुई. हमारा बैंक इतना स्वायत्त था कि हम पर कोई दवाब नहीं था.

प्र. आप तकरीबन 50 वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत हैं. आज जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो कितनी बदल गई है हिन्दी?

आज जिस रूप में आप हिन्दी को देख रहे हैं, यह इतना व्यापक होगा, कल्पना से परे था. हिन्दी के क्षेत्र में इतना कॅरियर नहीं था. बने - बनाए मानदंड नहीं थे, सब अपने हिसाब से नीति बना लेते थे. बैंकों के राष्ट्रीयकरण के साथ ही राजभाषा से अधिक जनभाषा के रूप में हिन्दी आई. आज हिन्दी को कॅरियर के रूप में देखा जाता है. कई तरह के पद सृजित हैं. उस समय ऐसी कोई व्यापकता नज़र नहीं आती थी ना ही हिंदी का ऐसा कोई कॅरियर उन्मुख क्षेत्र था.

प्र. नौकरी कई बार उबाऊपन साथ लेकर आती है, इसे सरस बनाने के लिए आप क्या करते थे? अर्थात आपके शौक क्या-क्या थे?

हिन्दी में रोजगार की संभावना एक ऐसा विषय था जिसके बारे में मैं सोचता था. अत: इनोवेशन के अवसर मिलते रहते थे. उबाऊपन कम ही महसूस हुआ. अंग्रेज़ी में कमजोर थे, अत: अंग्रेज़ी पढ़ने की आदत डाली. जब रेलवे में आया तब टेक्निकल बूस्ट मिला. यूनियन बैंक में यह बात मेरी समझ में नहीं आई. जब अमेरिका - इंग्लैंड में पढ़ाने लगा तब यह बात समझ आई.

प्र. पत्र - पत्रिकाओं के प्रकाशन में सम्पादन एवं ले आउट डिजाइनिंग में कोई सुझाव ?

निश्चित रूप से यह भाषा के साथ-साथ प्रोफेशनल काम है. सामग्री का चयन, साहित्यिक रचना, बैंकिंग इनपुट आवश्यक है. सामग्रियों की संख्या पर ध्यान रखना होगा ताकि पत्रिका सिर्फ बैंकिंग या सिर्फ साहित्यिक ना दिखे. पत्रिका बोरिंग नहीं होनी चाहिए. एक बात और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी का प्रयोग करें, क्योंकि यह राजभाषा अधिकारी का कार्य नहीं है, आप कितने इनोवेटिव हैं, कितने क्रिएटिव हैं, इस बात पर निर्भर करता है. हाँ भाषा की मौलिकता का ध्यान अवश्य रखें.

प्र. आजकल अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा का चलन है. नयी पीढ़ी में हिन्दी और अंग्रेज़ी की शिक्षा में बड़ा गैप आ गया है. इस प्रकार की मौजूदा शिक्षा पद्धति में आप हिंदी का कैसा भविष्य देखते हैं?

अब आप इसे दुर्भाग्य या सौभाग्य जो भी कहें, शिक्षा-पद्धति कभी भी आदर्श मूलक नहीं होती है, अपितु व्यावहारिक होती है. मजदूर भी कहता है मैं अपने बच्चे को अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाना चाहता हूँ. हिन्दी माध्यम के विद्यालय में जाने को कोई तैयार नहीं है. इसका मूल कारण ही यही है कि हिन्दी में रोजगार के अवसर दिखाई नहीं पड़ते. थोड़ी बहुत भी अंग्रेज़ी आती है तो मॉल वगैरह में नौकरी लग जाती है. सबको लगने लगा है कि बिना अंग्रेज़ी के रोजगार संभव नहीं है. स्थिति आज ऐसी है कि एक पूरी पीढ़ी बिना अंग्रेज़ी के जवान हो गयी. दरअसल शिक्षा पद्धति में हमें ईमानदार होना होगा. प्राथमिक शिक्षा भले ही हिन्दी माध्यम से करें, अंग्रेज़ी विषय आवश्यक हो या फिर हिन्दी विषय अगर माध्यम अंग्रेज़ी हो तो कम उम्र के बच्चों में बौद्धिक स्तर (आईक्यू) ज्यादा होती है. हमें तो सामान्य बैंकिंग चाहिए जिससे लोगों से संवाद हिन्दी माध्यम से हो.

प्र. इस बदलते परिदृश्य में राजभाषा अधिकारियों के लिए कोई सुझाव?

सच यही है कि हिन्दी की नौकरी बिना अंग्रेज़ी के नहीं मिलती है. अत: भाषा में खासकर हिन्दी एवं अंग्रेज़ी में अपनी पकड़ मजबूत करनी होगी. पढ़ने में रुचि रखें. और हां! तकनीक एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें हर नई चीज़ सीखने की ललक होनी चाहिए. जहां तक राजभाषा का प्रश्न है, तो आप यह मान कर चलिए कि आपको हिन्दी को जनभाषा के रूप में, अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साथ जोड़कर चलेंगे, साथ ही अंग्रेज़ी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यक मानकर चलेंगे तो कोई दिक्कत नहीं होगी. आपको भाषा को उसके सामान्य एवं व्यावहारिक पक्ष के साथ देखना होगा.

- सावन सौरभ
के. का., मुंबई

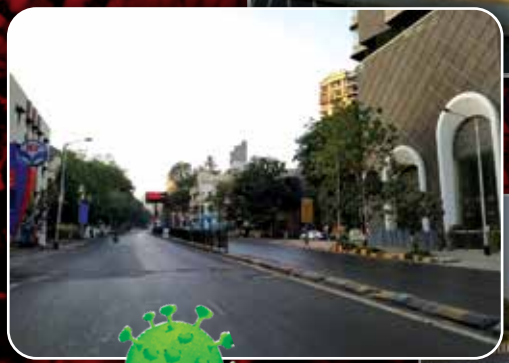

देश की आर्थिक राजधानी, सपनों का शहर, म
इसकी रफ्तार रुक सी गई है, सड़कें खाली है, ट्रेने
इसकी वजह है, कोरोना ! कोरोना, एक ऐसा सूक्ष्म
ही दिखाने शुरू किए थे और उ
घरों में बंद है और मुंबई बेजान सी
फिर से मुंबई
मुंबई के इन

शाहिद खान मंसूरी
के. का., मुंबई

लॉक डाउन मुंबई

मायानगरी, हमेशा जागते चलते रहने वाली 'आमची मुंबई' जो आज थम सी गई है,
ं चल नहीं रही है, भीड़ का कहीं नामोनिशान नहीं है, मुंबई सोई हुई दिखाई देती है और
ा वायरस, जिसने पूरी दुनिया में दहशत मचा दी है. भारत में तो इसने अपने रंग मार्च में
न रंगों ने मुंबई में सन्नाटा फैलाया है. लोग मजबूर हैं, दहशत जदा हैं,
सड़कों पर लुढ़क रही हैं. हमें विश्वास है कि यह कुछ दिनों की बात है,
दौड़ेगी, भागेगी और जागेगी लेकिन तब तक...
पलों को कैमरे में कैद करने की यह कोशिश...

राजेश जोशी
के. का., मुंबई

लेह - लद्दाख अनुभव और रोमांच

"यात्राएं- पहले तो आपको निःशब्द करती हैं, फिर आपको कथाकार में बदल देती हैं"

लेह सर्किट में बाइक राइडिंग एक 'अवचेतना (Trance)' है. जब तक आप अपनी सभी इंद्रियों द्वारा इसे प्रत्यक्षत: महसूस नहीं करते तब तक फोटो या वीडियो के पीछे मौजूद वास्तविक सुंदरता को महसूस नहीं कर सकते. हर बाइकर चाहे वह लड़का हो या लड़की, अपने जीवनकाल में एक बार लेह-लद्दाख बाइक यात्रा पर जाने का सपना जरूर देखता है. सपने में तो यह यात्रा बड़ी आसान और मनमोहक लगती है, जबकि वास्तविकता में यह यात्रा बहुत सारी कठिनाइयों और रोमांच से भरी हुई है. पुरानी कहावत है "हर जगह की अपनी सुंदरता है, हमें बस चारो ओर देखना और अपनी नज़र फेरनी होती है" यह कथन लेह-लद्दाख के लिए एकदम उपयुक्त है. लेह - लद्दाख यात्रावृतांत बर्फ से ढके पहाड़ों, बीहड़ परिदृश्य, ऊंची चोटियों, खतरनाक मार्गों और बाइक इंजन की गर्जना से परिपूर्ण भावना है. संक्षेप में, लद्दाख बाइकटूर रगों में दौड़ते रोमांच, पॉज़िटिव वाइब्स और एक बाइक - सवार की अटूट जिजीविषा से संबंधित है. यह जिजीविषा सकारात्मक संघर्ष से उत्पन्न होती है, जिसका अनुभव अपने गंतव्य की ओर जाते हुये हर पड़ाव, हर रास्ते के हर मोड़ पर होता है.

रोहतांग दर्रा और जिस्पा : मनाली से आगे रोहतांग दर्रा साहसिक राइड का आनंद लेने के लिए मशहूर पर्यटन स्थल है. हमने यहाँ लगभग आधा दिन बिताया और फिर अगले गंतव्य के लिए कदम बढ़ाया, जो जिस्पा था. कहते हैं "कोई भी व्यक्ति समुद्र की गहराई को नहीं पा सकता जब तक वह किनारों से दृश्य का मोह नहीं छोड़ता." शाम होने तक हम अपने गंतव्य जिस्पा पहुँचे जो मनाली से 140 किमी दूर एक शिविर स्थल है. शिविर में रात गुजारने का अनुभव एकदम अलग और रोमांचकारी था. नदी के पास बने साधारण तंबुओं में सोना, प्रकृति की सुंदरता और कंपाने वाली ठंड एकदम अलग और मिश्रित अनुभव था. रात बिताने के बाद हम अपने अगले गंतव्य सरचू की ओर बढ़े.

सरचू का रोमांच और A.M.S (एक्यूट माउंटेन सिकनेस) : सरचू समुद्र तल से लगभग 4290 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है. पूरे साल इस जगह का तापमान लगभग माइनस में ही रहता है. यहाँ न केवल कम तापमान की समस्या, बल्कि अधिकांश व्यक्तियों को हवा में ऑक्सीजन के गिरते प्रतिशत के कारण सांस की तकलीफ का भी सामना करना पड़ता है. इन सभी के अलावा, इस स्थान का मौसम किसी भी समय एक अलग मोड़ ले सकता है. मौसम खराब होने पर शिविरों के अंदर रहने की सिफारिश की जाती है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको सूर्यास्त के बाद इस स्थान पर या उसके आसपास नहीं घूमना चाहिए. इस जगह रातें बहुत डरावनी और असहनीय होती हैं. अपने ऊबड़-खाबड़ पठारों, असीम नीले आसमान और बंजर पहाड़ों के घूमते नज़ारों की कीमत के लिए हम इतने असहनीय, हड्डियों को गला देने वाली ठंड को भुगत रहे थे. एक्यूट माउंटेन सिकनेस (AMS) यह एक सामान्य टर्म है, जो दुर्गम यात्राओं के दौरान अक्सर सुना जाता है; हमने पहली बार, सरचू में इस शैतान का सामना किया.

खारडुंग-ला में अपनी सवारी क्षमताओं का परीक्षण करें : खारडुंग-ला 18,739 फीट की ऊंचाई पर स्थित दुनिया की सबसे ऊंची मोटरेबल सड़क है. यह दर्रा लेह के उत्तर में काराकोरम रेंज में स्थित है. तेज हवा, तीव्र बर्फबारी, एक्यूट माउंटेन सिकनेस, ऑक्सीजन की कमी और अतिसुंदर राहें दुनिया के शीर्ष पर महसूस होने की भावना ने खारदुंग-ला को एक लोकप्रिय तथा आकर्षक पर्यटन केंद्र बना दिया है.

नुब्रा घाटी का जादू : "अपनी आँखों में आश्चर्य समेटते हुए ऐसे जियो, जैसे कि अगले पल मृत्यु होने वाली है."

प्रसिद्ध नुब्रा घाटी में पहुंचते ही जो अनुभव दिलो-दिमाग पर असर करती है वह है **प्रशांति.** नुब्रा घाटी को 'फूलों की घाटी' के रूप में जाना जाता है. यहाँ पहुँच कर ऐसा लगता जैसे यह घाटी सुंदर और रंगीन खिले फूलों से आपका स्वागत करती हो. यह लद्दाख में अब तक पाए गए सबसे अच्छे खजानों में से एक है जिसे आपको अपनी लद्दाख बाइक यात्रा में जरूर शामिल करना चाहिऐ.

पैंगोंग-त्सो : एक इटालियन कहावत है, "यदि आपकी जिंदगी लंबी नहीं है तो इसे गहरी बनानी चाहिए."

पैंगोंग झील के नाम से प्रसिद्ध, लद्दाख की गोद में स्थित यह प्राकृतिक चमत्कार, हमारी यात्रा का अगला आकर्षण था. हिमालय की गोद में स्थित यह शानदार झील लगभग 134 किलोमीटर की दूरी तक फैली हुई है. यह झील एशिया की सबसे बड़ी झीलों में से एक है, जिसका लगभग साठ प्रतिशत हिस्सा चीन में है. इसी स्थान पर अमिर खान की मशहूर फिल्म '3 इडियट्स' की शूटिंग हुई थी.

शे-मठ एवं शांति स्तूप में एकांत का पता लगाएं : राजधानी शहर लेह से 15 किलोमीटर की दूरी पर, शे मठ पहले शाही परिवार का ग्रीष्मकालीन निवास था. सिंधु नदी के तट पर स्थित यह मठ अन्य कई स्तूपों से सुशोभित है. यहाँ का मुख्य आकर्षण 17.5 मीटर ऊंची, नीली बालों वाली मैत्रेय बुद्ध की शानदार प्रतिमा है. कहते हैं "यात्राएं आपको उदात्त बनाती हैं, आपको अंदाज़ा होता है कि इस दुनिया के आगे आप कितने छोटे हो." प्रसिद्ध शांति स्तूप 4267 मीटर की ऊँचाई पर एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है. यह शांति तलाशने और शांति पाने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है. आपको मंदिर के अंदर पुराने बौद्ध धर्म के अवशेष भी मिल सकते हैं. यह शांति स्तूप लेह के मनोरम सूर्योदय या सूर्यास्त दृश्य का साक्षी है जिसे एक बार अवश्य अनुभव करना चाहिए.

चुंबकीय हिल : चुंबकीय हिल चारों तरफ सिंधु नदी से घिरा, लगभग 14,000 फीट की ऊँचाई तक बढ़ता है. यहाँ एक अद्वितीय चुंबकीय बल है, जो बाइक और कारों को ऊपर की ओर खींचती है अर्थात बिना किसी मेहनत के आपकी गाड़ी या बाइक ऊपर की ओर खिंची चली जाती है. सुनने में काफी जादुई सा लगता है न? मेरी सिफ़ारिश है कि जीवन में इसे एक बार अवश्य महसूस करें.

यात्रा का हासिल - मोरे प्लेन्स

सरचू से पैंग तक की दुष्कर यात्रा के बाद, गाटा लूप्स, नाकी-ला और लाचलंग-ला के दर्द को झेलने के बाद प्रकृति का सबसे सुंदर पुरस्कार नज़र आता है. पैंगोंग के बाद सड़कों में तुरंत सुधार होता है. कुछ हेयरपिन मोड़ों से गुजरने के बाद, आप पहाड़ों से घिरे ऐसे दृश्य से रूबरू होते हैं जो शाब्दिक रूप से आपको ब्रेक मारते है! एक सीधी खींची सड़क जो क्षितिज के आगे बढ़ती है, खूबसूरत पक्की सड़क के दोनों तरफ बाहें फैलाये समतल मैदान, और बादलों की चादर ओढ़े खड़ा हिमालय, चारो तरफ ढलती-पिघलती प्राकृतिक सुंदरता, शायद इसीलिए इसे पृथ्वी का टेबल-टॉप कहा जाता है.!

वैसे तो, ज्यादातर लोग रगों में रोमांच महसूस करने के लिए स्पीड-ड्राइव या पहिए को पॉप करना और कुछ ड्राइविंग ट्रिक आजमाते हैं. हाँ, ये सभी गतिविधियां कारगर हो सकती हैं, लेकिन पृष्ठभूमि में हवाओं के सुंदर संगीत और आसपास बाहें फैलाए पर्वत, सपाट मैदान में बाइक सवारी, आपके जेहन को एक अद्भुत और अविस्मृत रोमांच से भर देती है. कहते हैं "यात्राएं आपके जीवनरूपी बक्से से सब कुछ निकालकर आपको बताती है कि आप वास्तव में क्या हो"

लेह लद्दाख सड़क यात्रा में शामिल होना भावनाओं के रोलर-कोस्टर की सवारी है. जब आप उन्हें अनुभव करते हैं तो ऐसा लगता है कि जीवन, भागदौड़ सब कुछ ठहर-सा गया है, सभी महत्वपूर्ण चिंताएं कहीं हैं नहीं, सभी डर और आशंकाएँ खाड़ी में डूब चुकी हैं. जीवन कितना सरल लगता है, जिस शांति की तलाश थी अचानक उसे हम अपने भीतर महसूस करने लगते हैं. यह यात्रा वास्तव में प्रकृति के संतानों के लिए एक दुर्लभ रत्न है. मेरे लिए लेह यात्रा का हर एक सेकेंड 'The Wow moment' रहा है. हर जगह जहां थोड़ा रुककर आप सफर को छोटा विश्राम देते हुए कैमरा को थामते हैं, तब आपको एहसास होता है कि प्रकृति और पहाड़ एक नए रूप में आपके सामने खड़े हैं. दूसरी सबसे विस्मयकारी वस्तु थी, 'प्रशांति' शब्द को प्रत्यक्ष रूप में महसूस करना. इसके अतिरिक्त इस जगह की अपनी कई सारी विशिष्टताएँ जैसे बर्फ से ढकी पर्वत - चोटियाँ, शानदार रास्ते, रास्तों के किनारे लगे बार्डर रोड्स ऑर्गनाइज़ेशन (BRO) के अनूठे बोर्ड जो हर मोड़ पर 'Julley' शब्द के साथ आपका स्वागत करती नज़र आती है, मोनेस्ट्री जिसने शहरों में दुर्लभ-सी जान पड़ने वाली शांति को हमारे भीतर ही ढूंढकर बता दिया और अंत में दुनिया का स्वर्ग कहा जाने वाला लद्दाख, जिसने हमें यह बताया की धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो आपके मन-मस्तिष्क में बसी शांति में है. निश्चित रूप से आपको जीवन का सार सिखाता है, लेह-लद्दाख!

कुमार धीरज गौरव
क्षे. का., बड़ौदा

केन्द्रीय कार्यालय में दिनांक 10.01.2020 को विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बैंक के सभी कार्यालयों एवं विदेश में स्थित शाखाओं में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन अत्यंत उत्साह पूर्वक किया गया. केन्द्रीय कार्यालय के सामान्य बैंकिंग परिचालन विभाग एवं अनुपालन विभाग द्वारा हिन्दी शब्द वर्ग पहेली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

क्षे. म. प्र. का., रांची एवं क्षे. का., रांची के स्टाफ सदस्यों के लिए राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

क्षे. का., रायपुर द्वारा अम्बिकापुर शाखा में राजभाषा विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया.

क्षे. का., सूरत एवं सरल के स्टाफ सदस्यों के लिए कार्यशाला स्वरूप डेस्क प्रशिक्षण का आयोजन किया गया.

क्षे. म. प्र. का., कोलकाता एवं क्षे. का., कोलकाता में स्टाफ सदस्यों के लिए राजभाषा प्रश्नावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

क्षे. का., नासिक के स्टाफ सदस्यों के लिए आशु चित्र, कविता लेखन प्रतियोगिता आयोजित कर पुरस्कार वितरण किया गया.

क्षे. का., चंडीगढ़ द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए आशु-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

क्षे. का., सिलीगुड़ी द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला एवं समाचार वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी एवं अहिंदी वर्ग के प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया.

क्षे. म. प्र. का., मुंबई के तत्वावधान में वेतनमान 5 एवं अधिक के कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया.

क्षे. का., हावड़ा द्वारा हावड़ा शिक्षा निकेतन विद्यालय में कक्षा VIII के विद्यार्थियों के लिए आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

क्षे. का., भोपाल द्वारा भोपाल क्षेत्राधीन शाखाओं से आए स्टाफ सदस्यों के लिए एक दिवसीय हिन्दी क्लासरूम कार्यशाला सह राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यशाला के अंत में पुरस्कार प्रदान किए गए.

क्षे. का., पटना द्वारा हिंदी कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया. श्री निरज निरूपम को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित करते हुए श्री जी बी त्रिपाठी, क्षेत्र प्रमुख, पटना

स्टा. प्र. कें., भुवनेश्वर में समस्त स्टाफ सदस्यों के साथ केंद्र प्रमुख श्री दिवाकर लेंका की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई एवं राजभाषा प्रगति के संबंध में विचार - विमर्श किए गए. इस अवसर पर केक काटकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.

नो. क्षे. का., बेंगलूरु में अंचल प्रमुख द्वारा केक काटकर विश्व हिन्दी दिवस का शुभारंभ किया गया एवं बेंगलूरु क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

क्षे. का., जबलपुर द्वारा जबलपुर शहर शाखा में बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. सभी स्टाफ सदस्यों ने प्रतियोगिता में भाग लिया एवं शाखा प्रमुख, श्री संजीव आनंद द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये.

क्षे. म. प्र. का., अहमदाबाद द्वारा कार्यालय एवं अंचल के अधीन समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए मोबाइल आधारित ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

प्लास्टिक प्रदूषण: खतरे की घंटी

"प्लास्टिक प्रदूषण के बढ़ते खतरे से, अब है जन-जन को अवगत करवाना, जरूरत सिर्फ देश को ही नहीं वरन विश्व को भी है, सम्पूर्ण प्लास्टिक प्रदूषण मुक्त बनाना."

- **प्रारूप :**

  प्लास्टिक का आविष्कार 1862 ई. में अलेक्ज़ेंडर पार्क्स ने इंग्लैंड में किया था और आज यह आम जन मानस के लिए किसी वरदान से कम नहीं है. वरदान इसीलिए क्योंकि आज घर से लेकर कार्यालय तक, विद्यालय से लेकर व्यापार तक हर जगह प्रतिदिन कई रूपों में हम प्लास्टिक का उपयोग कर रहे हैं, मसलन अगर हम अपने गृह स्थान पर नजर डालें तो सुबह हमारी प्लास्टिक के टूथ ब्रश से होती है और फिर नहाने में बाल्टी का प्रयोग, नाश्ते का डब्बा कार्यालय या विद्यालय ले जाने के लिए, कलम, पानी की बोतलें, चम्मच, थाली, बाजार से क्रय की गई वस्तु ले जाने के लिए प्लास्टिक बैग का प्रयोग किया जाता है, इसी तरह से हर जगह आज प्लास्टिक का उपयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है.

  प्लास्टिक या प्लास्टिक से बने उत्पादों का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व में इतनी बड़ी मात्रा में होने के पीछे के कारणों को देखें तो कुछ अहम बातें सामने परिलक्षित होती हैं:

  - प्लास्टिक या प्लास्टिक उत्पादों की उपलब्धता सहज है, यह आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाता है.
  - कम लागत होने की वजह से प्लास्टिक उत्पाद सस्ते होते हैं, मतलब इसके समकक्ष कपड़ा या धातु से बने उत्पाद की कीमत ज्यादा होती है.
  - प्लास्टिक उत्पादों में कचीलापन होने की वजह से इसमें अपने वजन से कई गुना अधिक वजन ढोने की क्षमता होती है.
  - प्लास्टिक उत्पादों का वजन हल्का होता है, जिससे किसी भी जगह लाने, ले जाने में सुविधा होती है.
  - प्लास्टिक दो प्रकार के होते हैं - एकल प्रयोग में आने वाले प्लास्टिक जैसे प्लास्टिक के थैले, प्लास्टिक के चम्मच, प्लास्टिक के प्लेटस इत्यादि जिनका केवल एक बार प्रयोग होने के बाद फेंक दिया जाता है. दूसरे तरह के प्लास्टिक में पुनर्निर्माण वाले प्लास्टिक आते हैं, जिन्हें पुनर्निर्माण संयंत्र द्वारा प्रयोग में आने वाले उत्पादों का निर्माण किया जाता है.

- **दुष्प्रभाव**

  15 अगस्त, 2019 को लाल किले की प्राचीर से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती- दिनांक 02 अक्तूबर, 2019 से सम्पूर्ण देश में प्लास्टिक एवं प्लास्टिक उत्पादों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की उद्घोषणा की और यह अचानक से लिया गया फ़ैसला नहीं था, बल्कि प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध की बात तो दो दशकों से भी अधिक समय से होती आ रही है, परंतु अब प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण का स्तर इस कदर बढ़ चुका है कि यह संपूर्ण विश्व के लिए खतरे की घंटी है.

  प्लास्टिक से पैदा होने वाले प्रदूषण पर कुछ शोध और अनुसंधान के आधार पर कुछ तथ्य और आंकड़े ऐसे हैं जो चौंकाने वाले हैं, जिनका जिक्र यहाँ पर करना लाजिमी है और ये तथ्य इस बात का पुरजोर समर्थन करते हैं कि आखिर प्लास्टिक प्रदूषण की वजह से प्लास्टिक पर प्रतिबंध क्यों होना चाहिए.

  - संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत 109 किलोग्राम है. जबकि चाईना में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत लगभग 38 किलोग्राम है. और हमारे देश भारत में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत लगभग 11 किलोग्राम है.
  - सम्पूर्ण विश्व में तेल की खपत का 8 प्रतिशत प्लास्टिक उत्पादन में होता है.
  - सम्पूर्ण विश्व में 500 खराब प्लास्टिक थैले का प्रयोग होता

है और इस आंकड़े के हिसाब से एक मिनट में 20 लाख प्लास्टिक थैले का उपयोग होता है. सम्पूर्ण विश्व में एक मिनट में 10 लाख प्लास्टिक पानी की बोतलों की खरीद होती है.

- सिर्फ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में एक सेकंड में 60000 प्लास्टिक थैले का उपयोग होता है.
- अमेरिका में 5 वर्ष से ऊपर के 93% व्यक्तियों में प्लास्टिक रसायन पाया जाता है.
- सम्पूर्ण विश्व में लगभग 6 अरब किलोग्राम प्लास्टिक कचरे का उत्पादन एक वर्ष में होता है.
- अगर एक वर्ष में जमा हुए प्लास्टिक कचरे का आकलन करें तो इससे पृथ्वी के चार घेरे बन सकते हैं.
- विश्व के सम्पूर्ण प्लास्टिक कचरे का लगभग 79 प्रतिशत प्राकृतिक भूभाग मसलन समुद्र, भूमि, और वायु में समाहित है.
- एक शोध के अनुसार दिल्ली के 80% जल में प्लास्टिक के छोटे कण (माइक्रो पार्टिकल्स) पाये जाते हैं.
- पूरे विश्व के लगभग 1,00,000 (एक लाख) जीव जंतुओं की मृत्यु प्लास्टिक खाने/ निगलने के कारण प्रतिवर्ष होती है.
- एकल प्रयोग प्लास्टिक को समाप्त होने में 500 से 1000 वर्ष लगते हैं.

अगर हम उपरोक्त आंकड़ों को देखें तो हमें प्लास्टिक से होने वाले दुष्प्रभावों की भयावहता का अनुमान हो जाएगा. प्रतिवर्ष लाखों टन प्लास्टिक हमारे घरों से होते हुए नालों द्वारा प्रवाहित होता है और विभिन्न जल स्रोतों से होते हुए समुद्र में जा मिलता है. समुद्र, महासागर की गहराइयों में इतना प्लास्टिक इकठ्ठा हो चुका है कि यह बड़े पैमाने पर जल प्रदूषण का कारण बन रहा है. अगर हम प्लास्टिक को जलाने का प्रयास करें तो भी जिन रासायनिक वस्तुओं के इस्तेमाल से प्लास्टिक का निर्माण होता है, उनके जलाने से विषैली गैस, वायु में मिश्रित होती है और वायु को प्रदूषित करती है.

एकल प्रयोग प्लास्टिक को भूमि के अंदर दबाने से भूमि और मृदा की उर्वरक क्षमता नष्ट होती है. फसल की उत्पादकता प्रभावित होती है एवं फसल में भी विषैले रसायन के आने का खतरा बना रहता है.

कचरे के ढेर में खाना ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जीव, जन्तु, पशु, मवेशी एकल प्रयोग प्लास्टिक थैले को खा जाते हैं और फिर प्लास्टिक न पचने की दशा में उनके आंतरिक सिस्टम्स को प्रभावित करता है और फिर उन्हें भूख नहीं लगती और उनकी मृत्यु हो जाती है, जो कि बहुत दुखद है.

जल में रहने वाले जीव भी जल में प्रवाहित होने वाले प्लास्टिक को खाना समझकर खा लेते हैं और अंतत: मृत हो जाते हैं.

प्लास्टिक प्रदूषण हर वर्ग, हर जनजाति को प्रभावित कर रहा है जिसकी रोकथाम आवश्यक है.

- **रोकथाम के उपाय :**

भारतवर्ष में सिक्किम एक ऐसा राज्य है जहाँ प्लास्टिक का प्रयोग नगण्य है और इस दिशा में सिक्किम राज्य में 1998 से प्रयास किये जा रहे हैं. प्लास्टिक प्रतिबंध की दिशा में सिक्किम राज्य से अन्य राज्यों को सीखने की आवश्यकता है.

रोकथाम के अन्य उपायों में निम्नलिखित हैं:

- एकल प्लास्टिक उत्पादों के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध.
- प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों को लेकर जन जागरूकता अभियान.
- केवल पुनर्निर्माण में उपयोग में आने वाले प्लास्टिक का उपयोग करना.
- प्लास्टिक को नाश करने के नए तरीकों की खोज हो.
- प्लास्टिक पुनर्निर्माण के और विकसित संयंत्रों का निर्माण.
- प्लास्टिक थैले के बजाय कपड़े के थैले के प्रयोग को प्रोत्साहन देना.
- उपरोक्त के अलावा कुछ ऐसे उपाय भी हैं, जिन्हें हम अपनी दिनचर्या के उपयोग में शामिल कर सकते हैं, जैसे पानी के लिए प्लास्टिक बोतलों के बदले धातु की बोतलों का प्रयोग, जिनमें हम अधिक समय तक पानी को उसके नियत तापमान पर नियंत्रित कर सकते हैं.
- घर में प्लास्टिक के बर्तनों को बदलकर धातु या मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग कर सकते हैं.

सारांश यह है कि अगर सम्पूर्ण विश्व का भविष्य प्रदूषण से सुरक्षित करना है तो प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ जन अभियान शुरू करने की जरूरत है और इसमें सम्पूर्ण भागीदारी अपेक्षित है.

कौशिक कौशल
क्षे. का., सिलीगुड़ी

ईमानदारी एक जीवन शैली

भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु हमारी ईमानदारी एक व्यक्ति-विशेष के साथ-साथ समाज-घटक के रूप में भी काफी महत्वपूर्ण है. यहां हम कुछ ऐसे अहम् सिद्धांतों की चर्चा करेंगे, जिनका ईमानदारी से पालन करने की हमारी सामूहिक आदत ईमानदारी को एक जीवन शैली बना देती है. इस ईमानदारी युक्त जीवन शैली से भ्रष्टाचार का निवारण मात्र स्वप्न ना रहते हुए आज नहीं तो कल निश्चित ही हकीकत बन सकता है. आइये, ईमानदारी को जीवन शैली बनाने की दिशा में ईमानदारी से पहल करें.

1. कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी एवं पारदर्शिता बनाए रखना

किसी भी सुधार का प्रारंभ स्वयं से ही होता है. यदि मैं स्वयं ही किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के मोह से निश्चय पूर्वक और निरंतर दूर रहूं, तो ही मुझे अन्य किसी को इस विषय में टोकने का अधिकार है. अर्थात मुझे भ्रष्टाचार या रिश्वत लेने से स्वयं को निरंतर दूर रखने के साथ-साथ अपना काम कराने के लिए किसी और को रिश्वत देना भी मना है. भ्रष्टाचार दोनों ही सूरतों में मेरे लिए निषिद्ध होना चाहिये; तब भी जब मैं संभाव्य लाभार्थी हूं और तब भी, जब दूसरा कोई मेरे काम के कारण संभाव्य लाभार्थी है. इस दोहरे सत्याचरण को ही ईमानदारी कहा जाता है और इस सत्याचरण की बारम्बारता ईमानदारी को ही जीवन शैली बना देती है.

ईमानदारी के सिक्के का दूसरा समतुल्य पहलू है पारदर्शिता. दैनिक जीवन में हमारा संपूर्ण आचरण एवं क्रियाकलाप पारदर्शी होना आवश्यक है. इसका अर्थ यह है कि हमारे किसी भी क्रियाकलाप के अवलोकन पर यदि संदेह की स्थिति बनती है, तो हम भले ही ईमानदार हों, लेकिन पारदर्शिता के अभाव में हमारी ईमानदारी भी शक के दायरे में आ सकती है. और जहाँ पर संदेह की जरा सी भी गुंजाईश है, वहां ईमानदारी एक जीवन शैली नहीं बन सकती.

2. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु ईमानदारी से कार्यरत रहना

दैनिक जीवन में हम अलग-अलग स्तर पर अलग-अलग भूमिका में कार्यरत हो सकते हैं. उदाहरण के तौर पर -

क) यदि मैं मेरे हाऊसिंग सोसायटी के कार्यकारी समिति पर कार्यरत हूं, तो मुझे यह सुनिश्चित करना चाहिये कि मेरे साथ-साथ कार्यकारी समिति के अन्य सदस्य भी ईमानदारी से कार्य करें.

ख) यदि मैं बैंक में पहुंचने के लिये लोकल ट्रेन पकड़ता हूं और बैठने के प्रयास में हूं, तो मुझसे पहले कतार में खड़े सारे यात्रियों को बैठने के लिए सीट मिलने के बाद ही मैं बैठने के विषय में सोचूं. अगर मैं किसी और को पीछे कर पहले ही सीट हथिया लेता हूँ, तो इतने छोटे स्तर पर भी बेईमानी पनपती है. साथ ही, मेरी इस बेईमानी के कारण जो यात्री सीट नहीं पा सका, उसके मन में भी बेईमानी का बीज बोया जाता है, जिसके लिए भी मैं ही उत्तरदायी हूं.

ग) बैंक में तो मुझे सर्वाधिक ईमानदार रहना है. न मैं भ्रष्टाचार करूं, न ही अपने सहकर्मियों को करने दूं. क्यों कि हम में से कोई एक भी भ्रष्ट है, तो ग्राहक की दृष्टि

में तो मेरा अच्छा बैंक ही भ्रष्ट हो गया ना ! इस प्रकार भ्रष्टाचार उन्मूलन ग्राहक सेवा का भी एक अभिन्न तथा महत्वपूर्ण अंग है.

3. अपनी संस्था के विकास और प्रतिष्ठा के प्रति ईमानदार रहते हुए कार्य करना

हमारे बैंक के विकास और प्रतिष्ठा का दायित्व हम सभी सहकर्मियों पर समान रूप से है. हमारे ग्राहक के लिये उससे संबंधित शाखा या कार्यालय के काउंटर के पीछे उपस्थित व्यक्ति ही समूचा बैंक है. यदि 100 में से एक भी बैंकर बेईमान है, तो उसकी बेईमानी बैंक की सकल छवि को इस तरह मैला कर देती है, जैसे बैंक के शत-प्रतिशत कर्मचारी बेईमान हों. बैंक का विकास उसकी प्रतिष्ठा पर निर्भर है और बैंक की प्रतिष्ठा निर्भर है, हम सभी की ईमानदारी युक्त जीवन शैली पर.

4. सामूहिक ईमानदारी से अपनी संस्था को गौरवशाली बनाना

किसी भी संस्था में कार्यरत सभी कर्मचारी निरंतर ईमानदार बने रहें, तो यह उस संस्था को गौरवशाली सिद्ध करने की प्रक्रिया में नींव के समान है. इसी नींव पर गौरवशाली संस्था खड़ी रहती है और साथ ही साथ गौरवान्वित होता है उसमें कार्यरत हर एक कर्मचारी. सतर्कता जागरुकता सप्ताह के आरंभ में सामूहिक शपथ लेना उन सामूहिक प्रयासों का ही एक अंग है, जो आगे चलकर 'ईमानदारी को बैंक की जीवन शैली' ही बना देंगे.

5. अपने देशवासियों को ईमानदारी पूर्वक सेवा प्रदान करना

हमारा सबसे बड़ा परिवार है हमारा देश. अत: देशवासियों को सेवा प्रदान करना हमारा सर्वोच्च कर्तव्य है. किंतु यह सेवा तभी उचित सेवा कहलायी जाएगी, जब वह ईमानदारी पूर्वक प्रदान की जाएगी. ईमानदारी की अनदेखी सेवा को भी भ्रष्ट आचरण का स्वरूप दे सकती है, अत: हमारी सेवा का आधार होना चाहिये ईमानदारी युक्त जीवन शैली.

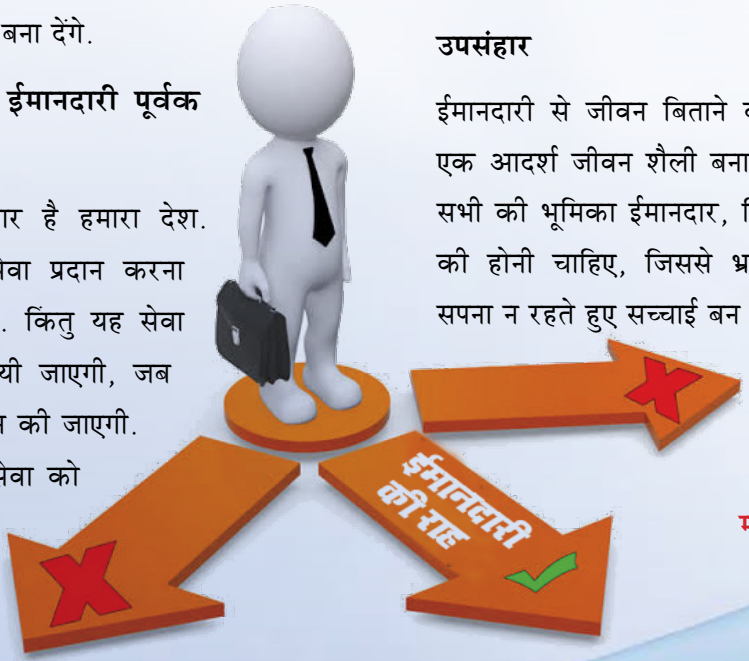

6. अपने कर्तव्य का पालन संपूर्ण ईमानदारी से करना

हमारे सभी कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करना अत्यावश्यक तथा अनिवार्य है. ईमानदारी का अभाव ही भ्रष्टाचार का जन्म-स्थान है. इस प्रकार जो भ्रष्टाचार छोटे रूप में जन्म लेता है, वही आगे जाकर राष्ट्रद्रोहियों एवं आतंकवादियों से सांठ-गांठ कर बम-ब्लास्ट एवं द्वेषमूलक दंगों को अंजाम देता है. इसीलिए ईमानदारी से कर्तव्य पालन ही यथार्थ रूप में कर्तव्य-पालन कहलाता है.

7. कोई भी काम भय अथवा पक्षपात के बिना करना

यदि हम कोई भी काम ईमानदारी के बदले किसी के दबाव या दहशत में आकर करते हैं, तो हम स्वयं ही असामाजिक तत्वों को भय अथवा आतंक फैलाने के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं, जो देशद्रोह से कहीं कुछ कम नहीं है. हमारे राष्ट्र ने अभी तक जितने आतंकी हमलों को झेला है, उनकी नींव बेईमान भारतवासियों ने ही लालच और भय के कारण रखी थी.

पक्षपात-पूर्ण ढंग से काम करना भी एक अलग तरह की बेईमानी है. क्योंकि पक्षपात में काम के बजाए इस बात को अहमियत दी जाती है कि काम किसका होना है और उसके साथ काम करने वाले के संबंध कैसे हैं ? इस प्रकार व्यक्तिगत संबंधों को कर्तव्य से जोड़ना बेईमानी ही तो है.

उपसंहार

ईमानदारी से जीवन बिताने की सामूहिक आदत ईमानदारी को एक आदर्श जीवन शैली बना देती है. भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु हम सभी की भूमिका ईमानदार, निष्पक्ष तथा स्वच्छ चरित्र वाले प्रहरी की होनी चाहिए, जिससे भ्रष्टाचार-मुक्त भारत का सपना मात्र सपना न रहते हुए सच्चाई बन जाएगा.

मंदार रामदास वैद्य
के. का., मुंबई

कालचक्र

रिया कुछ दिन से बहुत खुश थी. पापा की छुट्टियाँ जो चल रही थीं. अभी पिछले रविवार को ही रिया ने अपने भाई आरुष, पापा व मम्मी के साथ घर की बॉलकनी में खड़े होकर थाली-ताली बजाई थी. रिया को यह सब करते हुए बहुत मजा आया था. उसके दो दिन बाद से ही पापा ने ऑफिस जाना बंद कर दिया. पापा ने बताया था कि कोरोना वायरस के चलते 21 दिन तक सभी ऑफिस / स्कूल बंद रहेंगे तथा रिया को पापा के साथ भरपूर खेलने का मौका मिलेगा. रिया के पिता प्राइवेट कंपनी में बड़े पद पर कार्य करते थे, जिस कारण उन्हें कार्य से बाहर भी जाना पड़ता था, प्राय: वह ऑफिस से लेट ही घर आते थे. अधिकतर समय बच्चे पिता के आने से पहले ही सो जाते थे. सुबह बच्चों का स्कूल जल्दी होने के कारण पिता से मिलने का समय न होता था, इस तरह कभी-कभी तो पिता से मिले हुए भी 2-2 हफ्ते निकल जाया करते थे. लॉकडाउन की खबर ने जैसे रिया में नया जोश भर दिया था, पूरे दिन पिता के साथ खेलती. कभी लूडो, कभी कैरम तो कभी छुपा छुपाई. मन ही मन वह यही दुआ कर रही थी कि छुट्टी और बढ़ जाएँ.

पूजा की माँ लक्ष्मी, रिया के घर काम किया करती थी. कोरोना की खबर के चलते पिछले 15 दिन में लगभग सभी जगह से उसे काम से निकाल दिया गया था. पूजा अपने 4 भाई बहनों में सबसे छोटी थी. पिता के गुजरने के बाद से ही पूजा की माँ दूसरों के घर काम करके घर चलाती थी. चारो भाई बहन सरकारी स्कूल में पढ़ते थे तथा सामान्यत: सुबह का नाश्ता व दोपहर के खाने के लिए स्कूल के मिड डे मील पर निर्भर रहते थे. माँ की कमाई से बमुश्किल शाम के खाने का इंतजाम हो पाता था. काम से निकाले जाने तथा लॉकडाउन ने तो जैसे पूरे परिवार को भूखा ही मार दिया था. अक्सर बच्चे माँ से पूछते, 'माँ, तुम फिर से काम पर कब जाओगी. माँ, स्कूल दोबारा कब खुलेंगे'. जो भी घर में था वह सब खत्म हो चुका था और अब भूखा मरने की नौबत आ रही थी. भूख से बिलखते बच्चों को देखते हुए अब लक्ष्मी के भी सब्र का बांध टूट गया था. हारकर लक्ष्मी ने रिया की माँ को फोन कर अपना वृत्तांत सुनाया तथा कुछ पैसे की मांग की. लक्ष्मी ने सुना था कि पुलिस किसी को जाने नहीं दे रही है तथा घर से निकलने पर डंडे बरसा रही है, परंतु पापी पेट की भूख के सामने, पुलिस के डंडे की मार और जालिम कोरोना वायरस का खौफ जैसे कोई मज़ाक सा लग रहा था

वास्तव में परिस्थिति की ही वेदना है कि जहां रिया के पिता को लॉकडाउन में अपने परिवार को समय देने का अवसर प्राप्त हुआ, वहीं पूजा तथा पूजा जैसे कई परिवारों पर भारी विपदा आन पड़ी है. विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संभवत: पहली बार ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी जारी करने पर सम्पूर्ण विश्व में जहां अर्थव्यवस्था के पहिये रुक गए हैं, वहीं गरीबी में जीवन जीने वालों पर यह दोधारी तलवार है. एक ओर कोरोना का खतरा, वहीं दूसरी ओर पेट की आग. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि कोरोना वायरस संकट की वजह से इस साल दुनिया भर में लगभग 20 करोड़ लोगों की पूर्णकालिक नौकरी जा सकती है. आईएलओ ने इसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे भयानक संकट बताया है. इसके अनुसार भारत हालात से निपटने के लिए कम संसाधन वाले देशों में से है. कोरोना संकट से भारत में असंगठित क्षेत्र के करीब 40 करोड़ लोग गरीब हो सकते हैं.

वास्तव में ऐसे गरीब परिवारों की स्थिति जितनी मार्मिक है, वहीं अमरीका, इटली, जर्मनी जैसे विकसित देशों ने भी इस कहर के आगे घुटने टेक दिये हैं. महाभारत में कलियुग के अंत में प्रलय होने का जिक्र है, जिस प्रकार मानव सुख की चाह में धरती माता के साथ छल किए जा रहा था, उससे यही प्रतीत होता है कि पाप का

प्रकोप असीम हो गया है. हो सकता है कि कोरोना नामक वायरस भगवान का वह दूत हो जो हमें सचेत करने आया है कि हमें अब आत्ममंथन करने की जरूरत है. हमें प्रकृति की दिखाई राह पर चलने की जरूरत है.

अनवरत ही ऐसा होता है कि तूफ़ान, महामारी या दुर्घटना ज़िंदगी को परेशान कर दे तथा दुनिया हिलाती दिखे. एक विकासशील देश के राष्ट्राध्यक्ष के नामकरण के अनुसार 'चाइनीज वायरस' ने वास्तव में चीन समेत पूरी दुनिया में खौफ का माहौल पैदा कर दिया है, इसमें विज्ञान के नकारात्मक प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता. जहां द्रुतगति, अतिसंचार व्यवस्था ने नगण्य समय में सम्पूर्ण विश्व की सरकारों को बेदम सा कर दिया है. मृत्यु दर और सांख्यिकी की बात की जाये तो अभी तक सिर्फ एक ही चीज मिली है इस वायरस से..... अफसोस और सिर्फ अफसोस!

जिस तरह दु:ख में सुख भी छिपा होता है. उसी प्रकार नकारात्मकता की हद से ऊपर उठकर सकारात्मकता की बात करेंगे तो पाएंगे कि भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध नायक मिस्टर इंडिया की तरह अदृश्य रहने वाला यह वायरस उसके खलनायक मोगाम्बो की तरह सम्पूर्ण विश्व का खात्मा करने को आतुर है, परंतु इसने खौफ की आड़ में मनुष्य को नए नियम समझा दिये हैं. भारतीय सभ्यता में हाथ जोड़कर अभिवादन करने की प्रथा का आज सम्पूर्ण विश्व पालन कर रहा है. आर्थिक सुस्ती तथा मोटर के पहिये रुकने के कारण नाइट्रोजन डाइऑक्साइड जैसी खतरनाक चीज़ यानि प्रदूषण कम हो गया है. ज़िंदगी खुश है क्योंकि सांस बेहतर तरीके से ली जा रही है. हिन्दू शास्त्रों के अनुसार चमगादड़ का घर में प्रवेश करना अशुभ माना जाता है, जिसकी वजह से चमगादड़ समाज हमेशा ही उपेक्षित रहा है, परंतु अब चमगादड़ को भी खुद को साबित करने का मौका मिल गया और संभवत: अब लोगों ने सांप, चमगादड़, कुत्ते जैसे कई अन्य खाद्यों को छोड़कर सदा के लिए शाकाहारी खाने की तरफ कदम बढ़ा दिए हों. दुनिया में स्वस्थ शरीर और जीवन के प्रति प्यार और जागरूकता काफी बढ़ गई है, वर्षों से भागती हुई दुनिया ने मानों आपको ये वरदान दिया है कि आप अपने परिवार... सिर्फ अपने परिवार के साथ समय बिता सकें. कुछ समय निकालकर उन रिश्तों की गर्माहट महसूस कर सकें, जिनको पदोन्नति, तरक्की, संवर्धन, पैसे की भूख और न जाने किन-किन कारणों ने अनुगामित कर दिया था. मशहूर शोले फिल्म का प्रसिद्ध डायलाग 'ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर' और 'गब्बर ! ये हाथ मुझे दे', में हाथ के महत्व पर जोर दिया गया था, कोरोना की वजह से अपना हाथ अपना विकास फिर से चरितार्थ हो रहा है. हाथ धोना और सफाई रखना इन्हीं आदतों के नए आयाम हैं.

कोरोना ने बता दिया कि एक पिद्दी सा वायरस कैसे महाशक्तिशाली देशों का बैंड बजा सकता है. इनके पास शक्तिशाली मिसाइलें हैं, तोपे हैं, एटम बम हैं, लेकिन कोरोना वायरस का इलाज नहीं है. यानी जिस खतरनाक जीव से युद्ध है, उससे लड़ने के हथियार ही नहीं हैं. जिससे युद्ध कभी होना नहीं, उसके लिए युद्ध की ऐसी तैयारी की जा रही है मानो ग्राम प्रधान पद का दावेदार राष्ट्रपति पद की शपथ लेने की तैयारी में सफेद कुर्ता-पायजमा सिलवाने रोज दर्जी की दुकान पर पहुंच जाए.

हमारा देश भी इस जैविक हमले से निबटने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है, परंतु अखंड भारत का नागरिक होने के गौरव के प्रति हमसे भारतीय संविधान के मूलभूत कर्तव्यों का पालन किया जाना अपेक्षित है. अगर हम रिया के माँ बाप या भाई बहन होने की श्रेणी में हैं तो लक्ष्मी, पूजा तथा उस जैसे अन्य परिवारों पर आए खतरे को भाँपते हुए हर संभव मदद करने की कोशिश की जानी चाहिए. "पहचान" फिल्म के गीत "बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ" से आजकल "दोस्ताना" तर्ज पर जो मतलब निकलता है उससे ऊपर उठकर इस गीत का अर्थ समझने की जरूरत है. अपने देश के संविधान में निहित तथा सरकार द्वारा अपेक्षित नियमों का सख्ती से पालन किए जाने की जरूरत हर भारतीय नागरिक को है. इतिहास यह भी कहता है कि अमेरिका में 9/11 हमले के बाद विवाह ज्यादा होने लगे थे. शायद लोगों को समझ में आ गया था कि 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा'. उम्मीद है कोरोना की दस्तक भी बेहतर, स्वस्थ, सुरक्षित और सतर्क शैली में जीवन यापन को प्रेरित करेगी.

अभिषेक राज
क्षे. का., बड़ौदा

जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त व्यंग्य

उस दिन एक कहानीकार मिले. कहने लगे, "बिल्कुल नयी कहानी लिखी है, बिल्कुल नयी शैली, नया विचार, नयी धारा". हमने कहा, 'क्या शीर्षक है?'

वे बोले, "चांद सितारे अजगर सांप बिच्छू झील". (नयी धारा, व्यंग्य - हरिशंकर परसाई)

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, अंग्रेजी में इसे सटायर भी कहा जाता है. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, व्यंग्य पद्य या गद्य किसी भी रचना में हो सकता है, इसमें प्रचलित दोषों या मूर्खताओं का कभी - कभी कुछ अतिरंजना के साथ मज़ाक उड़ाया जाता है. साधारण शब्दों में कहें तो व्यंग्य करके किसी व्यक्ति विशेष या समूह का उपहास करना होता है. सटायर द्वारा व्यक्ति अथवा समाज की बुराई स्पष्ट शब्दों में न करके उल्टे या टेढ़े शब्दों में व्यक्त किया जाता है. हिन्दी मुहावरा में इसे व्यंग्यबाण कहा जाता है. इसके अलावा हास्य, उपालंभ, कटाक्ष, विडम्बना, अर्थ-भक्ष्य, ठिठोली, आक्षेप, निंदा-विनोद, रूपक, प्रभर्त्सना, स्वांग, अपकर्ष, चुहल, चुटकुला, मसखरी, भडैंती, ठकुरसुहाती, मज़ाक, दंतनिपौरी, गाली-गलौज ऐसे अनेक शब्द हैं, जिसमें कहीं न कहीं व्यंग्य ही छुपा हुआ है.

हिंदी में व्यंग्य का आरंभ संत-साहित्य से माना जाता है. साहित्यिक विधा के प्रसिद्ध कवि कबीर 'व्यंग्य' के आदि प्रणेता हैं. मध्यकाल की सामाजिक विसंगतियों पर उन्होंने व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रहार किया है. साथ ही जाति - भेद, हिंदू - मुसलमानों के धर्माडंबर, गरीबी - अमीरी, रूढ़िवादिता आदि पर भी कबीर के व्यंग्य बड़े मारक हैं.

'जो तू बामन-बमनी जाया. आन द्वार काहे नहिं आया'.,
'क्या तेरा साहिब बहरा है',
'कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई चुनाय. ता चढ़ि मुल्ला बांगि दे क्या बहरा हुआ खुदाय'

व्यंग्य करने वाले कवियों में कबीर के बाद भी कई ऐसे कवि अथवा रचनाकार हुए हैं, जिन्होंने सामाजिक विषमताओं, गुलाम भारत की विडंबनापूर्ण परिस्थितियों, अंग्रेजी साम्राज्यवाद और उनकी शोषक दृष्टि, राजनीति और तत्कालीन शासन-व्यवस्था से टकराव, समसामयिक परिस्थितियों आदि के प्रति व्यंग्य को अपना हथियार बनाया. इन कवियों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', रांगेय राघव, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी और व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी इनके नाम को कैसे भूला जा सकता है? केवल हिन्दी साहित्य की विधा में ही नहीं बल्कि दुनिया के अलग अलग देशों में भी ऐसे कई विद्वान हुए हैं, जिन्होंने व्यंग्य करते हुए उस समय की तत्कालीन व्यवस्था का मज़ाक उड़ाया था. यूरोप में डिवाईन कॉमेडी, दांते की लैटिन में लिखी किताब, मार्क ट्वेन, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, जॉनथन स्विफ्ट, चेखव ये सब कुछ ऐसे रचनाकर हैं, जो व्यंग्य को एक महत्वपूर्ण कार्य मानते हैं.

मूलत: सुप्रख्यात हरिशंकर परसाई को इनकी व्यंग्यकार रचनाओं के लिए जाना जाता है. परसाई जी का मानना है ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है.'' इनकी सारी रचनाएँ चाहे वो लघुकथा हों, कहानियाँ हों या लेख हों, ये सब व्यंग्य के माध्यम से ही लिखी गई हैं. इसके अलावा उन्होंने कई हास्य-व्यंग्य भी लिखे हैं. इनमें से एक आप यहाँ देख सकते हैं -

एक छोटी - सी समिति की बैठक बुलाने की योजना चल रही थी. एक सज्जन थे जो समिति के सदस्य थे, पर काम कुछ करते नहीं थे. बस गड़बड़ पैदा करते थे और कोरी वाहवाही चाहते. वे लंबा भाषण देते थे.

वे समिति की बैठक में नहीं आवें, ऐसा कुछ लोग करना चाहते थे, पर वे तो बिना बुलाए पहुंचने वाले थे. फिर यहां तो उनको निमंत्रण भेजा ही जाता, क्योंकि वे सदस्य थे.

एक व्यक्ति बोला, 'एक तरकीब है. सांप मरे न लाठी टूटे. समिति की बैठक की सूचना' नीचे यह लिख दिया जाए कि बैठक में बाढ़ - पीड़ितों के लिए धन - संग्रह भी किया जाएगा. वे इतने उच्चकोटि के

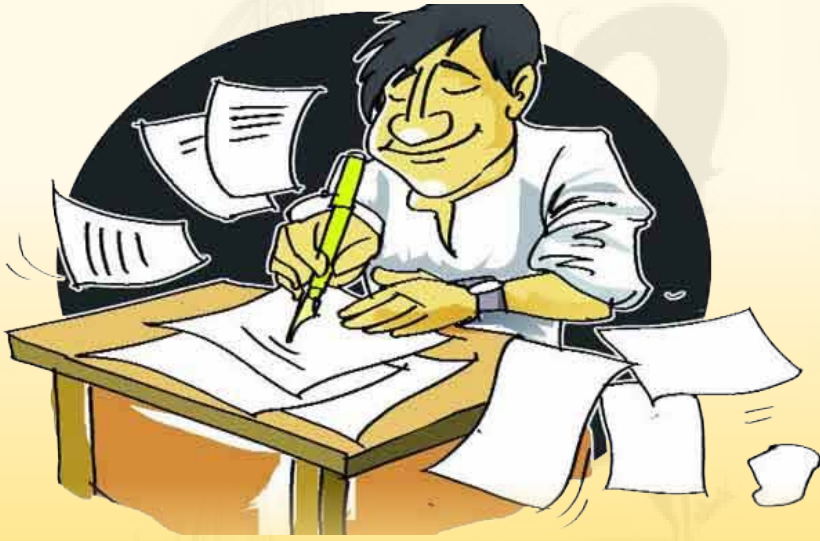

कंजूस हैं कि जहां चंदे वगैरह की आशंका होती है, वे नहीं पहुंचते. (चंदे का डर- हरिशंकर परसाई)

ये तो बात हुई साहित्य विधा की जिसका संक्षिप्त में यहाँ वर्णन किया गया है. पर मेरा ऐसा मानना है कि हम सब अपने रोज की दिनचर्या में इसका प्रयोग करते है. ऐसी कई बातें होती है जो हमें बुरी लग जाती हैं परंतु उसका प्रत्यक्ष जवाब हम नहीं दे पाते हैं.... वो कहते हैं ना, मार की चोट उतनी नहीं लगती जितनी कि किसी के द्वारा कही गई बात बुरी लग जाती है. इसलिए हमें जैसे ही उचित अवसर मिलता है, उसका व्यंग्य में जवाब दे देते हैं.

समाचार पत्र, पत्रिका इन सब में तो मुख्य रूप से व्यंग्य के लिए एक कॉलम ही होता है, जिसमें वर्तमान के उभरते रचनाकार अथवा व्यंग्यकार अपनी रचनाएँ देते हैं. कुछ पत्रिकाएँ तो विशेष रूप से व्यंग्य पर ही आधारित होती हैं. व्यंग्य जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है.

अक्सर आप सुनते होंगे कि अलग - अलग स्थानों पर या कई बार टीवी पर भी कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है. उन सम्मेलनों में मुख्य रूप से व्यंग्य ही समाहित होता है. इसका मतलब सिर्फ यही है कि अगर सभी चीजें सही तरीके से चलें, कहीं कोई खोट न हो तो वह मजाक हो सकता है, हास्य हो सकता है पर व्यंग्य नहीं हो सकता.यह सही है कि व्यंग्य के साथ हास्य को मिला देने से व्यंग्य की पठनीयता और प्रभाव में वृद्धि हो जाती है. जरूरी नहीं कि व्यंग्य हमेशा किसी को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाए. कुछ व्यंग्य तो हास्य - व्यंग्य होते हैं, जिन्हें सुनाकर श्रोतागणों के चेहरे पर मुस्कुराहट लाना होता है. टीवी पर कई ऐसे कॉमेडी कार्यक्रम भी आते हैं, जिनके हास्य मुख्य रूप से व्यंग्य पर ही आधारित होते हैं. मैं उन कार्यक्रमों का नाम नहीं लूँगी, आप खुद ही देखें और समझें.

दरअसल व्यंग्य तभी पैदा होता है जब जीवन में असंतुलन, असमानता, असंगति, कटुता, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, अनुशासनहीनता और असामंजस्य आदि के दर्शन होते हैं. व्यंग्य का गुण ही है, मार्मिक चोट करना और चोट उसी पर की जाती है जो गलत हो, इतिहास और मानवता के विरूद्ध हो.

अपने बारे में मैं कहूं तो मैं अपनी बातों में कई बार व्यंग्य का प्रयोग करती हूं, लेकिन ये व्यंग्य हास्य व्यंग्य होते हैं, जो अपने से जुड़े लोगों के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने के लिए होते हैं. अब आप सोचिए, क्या आपने अपनी बातों में व्यंग्य का प्रयोग किया है और अगर किया भी है तो किस रूप में किया?

- प्रीति साव
क्षे. का., हावड़ा

'यूनियन सृजन' के स्वामित्व एवं अन्य विवरण से संबंधित कथन फॉर्म 4 (नियम 8 देखें)

1.	प्रकाशन स्थान	:	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई 400 021
2.	प्रकाशन अवधि	:	तिमाही
3.	संपादक, प्रकाशक और प्रिन्टर का नाम, राष्ट्रीयता और पता	:	डॉ. सुलभा कोरे भारतीय, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई 400 021
4.	समाचार पत्र (पत्रिका) के मालिकों का नाम और पता	:	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई 400 021

मैं डॉ. सुलभा कोरे, एतदद्वारा घोषणा करती हूँ कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी जानकारी एवं मान्यता के अनुसार सही है.

डॉ. सुलभा कोरे
प्रकाशक के हस्ताक्षर

मार्च, 2020

कुदरत का अद्भुत करिश्मा
हिमालय

हिमालय शब्द संस्कृत के दो शब्दों हिम+आलय से मिलकर बना है. जिसका अर्थ है 'बर्फ का घर', वैसे तो कहने को सिर्फ पर्वतमाला है, किन्तु इसकी विशेषताएँ इसे सबसे अलग बनाती हैं. उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के अलावा विश्व में सर्वाधिक बर्फ हिमालय में ही पाई जाती है. हिमालय पर्वत का क्षेत्र 5 देशों में विस्तारित है, जो कि भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल एवं पाकिस्तान है. विश्व की सबसे ऊँची चोटी 'माउंट एवरेस्ट' यहीं पर स्थित है. इसे नेपाली में 'सागरमाथा' संस्कृत में देवगिरि आदि नाम से जाना जाता है. विश्व के सर्वोच्च शिखरों में सर्वाधिक शिखर यहीं स्थित हैं. जिसमें सागरमाथा, अन्नपूर्णा, शिवशंकर, लांगतंग, मनसलु इत्यादि प्रमुख हैं. धरती का स्वर्ग, कश्मीर हिमालय घाटी में ही है.

हिमालय की उत्पत्ति बड़ी रोचक है. करीब दो लाख वर्ष पूर्व, यहाँ टेथिस सागर नाम का जल स्रोत हुआ करता था, किन्तु भूगर्भीय क्षेत्र में दो प्लेटों के टकराने से इस विशाल पर्वत का निर्माण हुआ, हिमालय पर्वत तीन श्रेणियों में विभाजित है. ये श्रेणियाँ है - 1.महान हिमालय 2.मध्य हिमालय 3.शिवालिक श्रेणी

भारत भूमि के लिए हिमालय का अत्यंत महत्व है. भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, पर्यावरण आदि क्षेत्र में हिमालय का उल्लेख मिलता है. हिमालय से निकलने वाली गंगा एवं ब्रम्हपुत्र नदी से उत्तर एवं पूर्व के मैदान निर्मित हैं, जो कि बेहद उपजाऊ हैं. इसकी पर्वत मालाएँ मानसूनी हवाओं में अवरोध पैदा करके समस्त भारतदेश में बारिश कराने के लिए कारक बनती हैं. प्रात: काल सूर्य किरणें जब इन पहाड़ों पर पड़ती हैं, तो समस्त पर्वत स्वर्णिम रोशनी से नहा उठता है. पर्यावरण की दृष्टि से हिमालय भारतीय जलवायु के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. साइबेरिया से आने वाली शीतल हवाओं को रोककर देश को अत्यधिक ठंडा होने से बचाता है. इससे निकलने वाली नदियाँ सदैव बहने वाली होती है जो कि 5 देशों के बड़े भाग के लिए जीवनदायिनी हैं.

2400 कि.मी. क्षेत्र में फैले इस पर्वत में अनेक जानवर जैसे -चीता, भालू, हिरण, बंदर, गेंडा प्रमुख हैं, यहाँ पाई जाने वाली औषधियाँ विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं मिलती. इस कारण विभिन्न देशों ने यहाँ प्रयोगशालाएँ स्थापित की हुई हैं. यहाँ की जलवायु, जैविक विविधता, ऊंचाई, यहाँ की मिट्टी सब मिलकर इस पर्वत को खास बनाती हैं. गंगा नदी जो कि भारत की सबसे लंबी नदी भी है, इसका जलस्रोत हिमालय से है जो कि कभी खराब नहीं होता. अनेक जैव प्रजातियाँ इसके जल में पाई जाती है. डॉलफ़िन मछली विश्व में सिर्फ गंगा के पानी में पाई जाती है.

धार्मिक दृष्टि से भी हिमालय अत्यंत महत्वपूर्ण है. अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कैलाश मानसरोवर, म्यांमार के समस्त बौध्दस्थल, नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर सब हिमालय की गोद में समाहित हैं. कई देवी-देवताओं का निवास स्थल, ऋषि मुनियों का तपस्या स्थल, हिमालय की तराई में हैं. धार्मिक दृष्टि से हिमालय एक अति पवित्र पर्वत है. कई वेद पुराणो में हिमालय का जिक्र किया गया है. जिसमें इसको पूजनीय बताया गया है.

सामरिक नजरिए से हिमालय सदैव भारत का रक्षक प्रहरी रहा है उत्तर के आक्रमणकारियों के लिए ये पहाड़ अभेद रहा है. कश्मीर एवं सियाचिन जैसे विवादित क्षेत्र यहाँ स्थित हैं. इसके बावजूद इसकी खूबसूरती हमेशा सम्पूर्ण विश्व को आकर्षित करती है. पूरी दुनिया हिमालय की खूबसूरती की कायल है. लाखों पर्यटक यहाँ हर साल आते हैं एवं यहाँ के रोमांच का आनंद उठाते हैं. अंत में हिमालय अपने में एक संसार है जिसका जितना वर्णन किया जाए कम है,. दुनिया भर के लेखकों ने अपने साहित्य में हिमालय का समय -समय पर जिक्र किया है. कुदरत के इस अद्भुत करिश्मे को जीवन में एक बार अवश्य देखना चाहिए.

पराग जैन
सेवा शाखा इंदौर

यूनियन समृद्धि केंद्र-गुरदासपुर

हमारे उच्च प्रबंधन द्वारा दीर्घकालिक रणनीति के तहद, ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी शाखाओं में ऋण वितरण में केन्द्रीकरण हेतु, बैंक ने गुणवत्ता एवं त्वरित मूल्यांकन, बेहतर अनुपालन तथा बेहतर ग्राहक अनुभव, दक्षता और लाभप्रदता में सुधार, बैंक में ग्राहकों हेतु तकनीक विकसित करने, बैंकिंग उत्पाद और सेवाओं के लेन -देन के लिए केंद्रीकृत ऋण प्रसंस्करण के लिए एक प्रणाली बनाने का फैसला दिनांक 06 जुलाई, 2018 से लिया गया. इसी परिपेक्ष्य में, हमारे बैंक ने हब एवं स्पोक मॉडल का प्रारम्भ कर रुसू (RUSU) (ग्रामीण तथा अर्ध शहरी) शाखाओं के लिए नया परिचालन मॉडल कार्यान्वित करने का निर्णय लिया है, जहाँ हब केंद्रीकृत प्रक्रिया कक्ष तथा स्पोक मैप की गयी रुसू शाखाएँ हैं. केंद्रीकृत प्रक्रिया कक्ष का नाम यूनियन समृद्धि केंद्र (usk) है. इसी क्रम में पायलट आधार पर करनाल तथा नासिक में दो यूनियन समृद्धि केंद्र (usk) की स्थापना की गयी. इन केन्द्रों की सफलता को देखते हुए उच्च प्रबंधन द्वारा अन्य 05 क्षेत्रीय कार्यालयों में इस मॉडल को अपनाते हुए 05 यूनियन समृद्धि केंद्र (usk) की स्थापना की गयी, जिसमें हमारे क्षेत्रीय कार्यालय जालंधर के अधीन यूनियन समृद्धि केंद्र, गुरदासपुर की स्थापना वर्ष 2018 में की गई. यूनियन समृद्धि केंद्र, गुरदासपुर के अधीन कुल 12 शाखाएँ सम्मलित हैं.

यूनियन समृद्धि केंद्र का मूल उद्देश्य :-

1) RAM में ऋण के प्रवाह को तेज करना
2) TAT के प्रवाह को सुधार कर ग्राहक सेवा में सुधार
3) कुशल निगरानी प्रणाली
4) नए युग के डिजिटल चैनल को बढ़ावा देना
5) शाखाओं को ऋण कार्य से मुक्ति प्रदान कर बैंक व्यापार हेतु समय देना

यूनियन समृद्धि केंद्र के मुख्य स्तंभ

यूनियन समृद्धि केंद्र के मुख्यत: चार स्तंभ हैं, जिस पर यूनियन समृद्धि केंद्र कार्य करता है जो कि इस प्रकार हैं:

1) सहज :- ऋण हेतु आसान प्रक्रिया
2) संपर्क :- आसान एवं तुरंत संपर्क
3) सुविधा : निर्बाध सेवा
4) समृद्धि: विविध कृषि ऋण

यूनियन समृद्धि केंद्र, गुरदासपुर की कर्मचारी संरचना :- यूनियन समृद्धि केंद्र, गुरदासपुर, मंडी बोर्ड कार्यालय, गुरदासपुर के नजदीक, गुरदासपुर पठानकोट जीटी रोड पर एक खूबसूरत कार्यालय में स्थित है, जिसमें एक बैठक सह प्रशिक्षण कक्ष के अलावा प्रोसेसिंग हॉल, केंद्र इंचार्ज कक्ष तथा एक कैंटीन है. केंद्र में एक केंद्र प्रभारी (स्केल -III) के अलावा दो प्रोसेसिंग अधिकारी एवं एक विकास प्रबंधक तैनात है. केंद्र के अधीन जिला गुरदासपुर, पठानकोट, तथा अमृतसर की कुल 12 कृषि शाखाएं मैप हैं. केंद्र में उक्त 12 शाखाओं से संबंधित सभी प्रकार के ऋण प्रस्ताव स्वीकृत (ऋण जैसे GOLD loan, Loan Against Deposit /NSC /KVP /LIC / ODPMJD को छोड़कर) किए जाते हैं. केंद्र में स्पोक शाखाओं द्वारा भेजे गए ऋण आवेदनों को बैंक नियमानुसार प्रोसैस एवं स्वीकृत किया जाता है.

यूनियन समृद्धि केंद्र द्वारा ऋण प्रवाह :- सर्वप्रथम स्पोक शाखा में कार्यरत ग्रामीण विकास अधिकारी ऋण आवेदन प्राप्त कर, अन्य दस्तावेज़ प्राप्त कर, आवेदनकर्ता का ड्यू डिलीजेंस, पूर्व स्वीकृति निरीक्षण रिपोर्ट आदि तैयार करके, बैंक द्वारा दिये गए टैब से ऋण आवेदन यूनियन समृद्धि केंद्र में प्रेषित करेगा. ऋण से संबंधित सभी दस्तावेज़ स्कैन करके यूनियन समृद्धि केंद्र में भेजे जाएंगे. कृषि ऋण के अलावा जो ऋण योजना टैब में नहीं हैं, उसका आवेदन शाखा प्रमुख द्वारा LAR बनाके LAS के द्वारा यूनियन समृद्धि केंद्र में प्रेषित किया जाएगा. तदनुसार यूनियन समृद्धि केंद्र के प्रोसेसिंग अधिकारी ऋण आवेदन को बैंक नियमानुसार LAS में प्रोसैस कर केंद्र प्रभारी की LAS आईडी में स्वीकृति हेतु प्रेषित करेगा और यदि आवेदन केंद्र की डेलीगैसन से ऊपर है तो आवेदन स्वीकृति हेतु उच्च कार्यालय में प्रेषित किए जाते हैं.

यूनियन समृद्धि केंद्र :- सकारात्मक प्रभाव

1) स्पोक शाखाओं की ऋण स्वीकृति के पूर्व की सभी औपचारिकतायें पूर्ण करने में सरलता
2) स्पोक शाखाओं के ऋण गुणवत्ता में सुधार हुआ है
3) स्पोक शाखाओं की ऋण आस्तियों में सुधार हुआ है
4) स्पोक शाखाओं की ऋण स्वीकृति के TAT में सुधार होना
5) शाखाओं में कार्यरत कर्मचारियों का पूर्ण एवं सही उपयोग

केंद्र की प्रगति की समीक्षा:- अनुदेश परिपत्र 1560-2019 दिनांक 30-04-2019 द्वारा दिये गए दिशा निर्देशों के द्वारा स्पोक शाखाओं में कार्यरत ग्रामीण विकास अधिकारियों की समीक्षा संबंधित शाखा प्रमुख द्वारा प्रतिदिन तथा क्षेत्र प्रमुख द्वारा प्रति माह की जाएगी. उसी प्रकार केंद्र की समीक्षा क्षेत्र प्रमुख द्वारा प्रति 15 दिनों तथा अंचल प्रमुख द्वारा प्रति माह की जाएगी. केंद्र में पदस्थ विकास प्रबंधक की समीक्षा क्षेत्र प्रमुख / उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा प्रति माह की जाएगी.

अतुल धीमान
यूएसके, गुरदासपुर

गौरवान्वित कामकाजी माँ

पुरानी परिवार परंपरा में सभी आर्थिक मामलों और व्यय की ज़िम्मेदारी पुरुष की होती थी. औरतों का काम बच्चों की परवरिश और घर को संभालना होता था. किन्तु समाज में बदलाव हुए हैं और परिवार का ढांचा भी बदल गया है. आज की महिला अपने पति पर पड़ने वाले आर्थिक दबाव को नौकरी आदि के माध्यम से कम करती है.

आज की महिला पहले से अधिक आत्मनिर्भर और शिक्षित है, उनके पास समान अधिकार हैं और समान जिम्मेदारियाँ भी हैं. किन्तु जब एक नौकरीपेशा महिला शादी कर बच्चे और परिवार बनाने के साथ नौकरी करते रहने का निर्णय लेती है, तब घर और नौकरी की अपनी भूमिकाओं में संतुलन बनाने की जद्दोजहद भी आरंभ होती है. यह एक आम धारणा है कि महिला दोनों भूमिकाएँ एक साथ नहीं निभा सकती. जबकि वास्तविकता बहुत अलग है. समाधान भी उपलब्ध है जो कि अक्सर नौकरी पेशा महिलाएं बच्चों, पति और अपनों की खुशी के अनुसार प्रयोग करती हैं.

नौकरीपेशा माँ के कई फायदे और कई नुकसान हैं

इस माँ को घर के साथ-साथ ऑफिस भी संभालना होता है, जिसके लिए उसे चीजों को व्यवस्थित और तेजी से करना सीखना होगा. अपने निजी और व्यावसायिक जीवन के साथ न्याय करने के लिए उसे अपने समय का अच्छा प्रबंधन और मल्टी टास्किंग करना ही होगा.

उनके बच्चों को अन्य की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर होना होगा. वे लगातार किसी पर निर्भर नहीं रह सकते. उनकी मां हर समय उपलब्ध नहीं है, इसलिए उन्हें दूसरों से ज्यादा निपुण और आत्मनिर्भर बनना होगा.

कई लोग तर्क देते हैं कि माँ जब सारा दिन बच्चे के पास रहती है तो बच्चे और माँ का प्रेम अधिक गहरा होता है. लेकिन प्रचलित कथनों के अनुसार 'दूरी हृदय से अधिक लगाव उत्पन्न करती है' अपने बच्चे से दूर रहना माँ की भावनाओं को अधिक प्रगाढ़ और मजबूत करता है और बच्चा जब अपनी माँ को एक अंतराल के बाद देखता है तो उसमें आकर्षण और लगाव बढ़ता है, चाहे वह अंतराल कुछ घंटों का हो या कुछ दिनों का.

बाहर काम करने से महिला को एक संतुलन का आभास होता है और उसे अपनी घरेलू भूमिका से आगे बढ़कर व्यवसायी इकाई बनाने का अवसर देता है. यह एक सशक्त एहसास है जो महिला को साहस और आत्मविश्वास से भर देता है.

हांलाकि, इस सफर में कई कठिनाइयाँ भी हैं. सबसे पहले, काम पर एक लंबे दिन के बाद अपने बच्चे के साथ बिताए हर पल का मूल्य समझने के बावजूद, पूरा दिन बिना अपने बच्चे को देखे रहना एक माँ के लिए बहुत कठिन है. बच्चे से दूर रहने की स्थिति में महिलाएं पूरा दिन चिंता और तनाव में बिताती हैं. कई बार ऑफिस जाने के साथ ही अपने बढ़ते हुए बच्चे के कई अनमोल क्षण जैसे पहला शब्द, पहला कदम और छोटे - छोटे कई पल एक माँ से छिन जाते हैं. ऐसे में नौकरी पेशा माँ अपने बच्चे के साथ पर्याप्त समय न रह पाने और ऐसे अनमोल क्षणों से वंचित होने के पछतावे और अपराध बोध से कभी उबर नहीं पाती.

इस उठापठक के जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक महिला को उसके पति और परिवार के सपोर्ट सिस्टम की जरूरत होती है. सभी तथ्यों को देखें तो नौकरी पेशा में रूपान्तरण उतना सरल नहीं है जितना समाज द्वारा समझा जाता है.

अंतत: नौकरीपेशा माँओं के लिए मैं कहना चाहूंगी, 'सबसे अच्छी माँ वे नहीं हैं, जिन्हें कठिनाई नहीं झेलनी पड़ी बल्कि वे हैं जिन्होंने लाख कठिनाइयों के बाद भी कभी हार नहीं मानी'

रुचिता कपाड़िया
सरल, पुणे

नारी – आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

आत्मिक शक्ति की परिचायक !
पावनता की प्रतीक !!
धैर्य, विश्वास की प्रतिमा !!!
ममतामयी माँ...., भार्या...., पुत्री:...
प्रेयसी ..... आनंदमयी नारी:...../

ये हीं वे सम्बोधन हैं जो परिभाषित करते है नारी के व्यक्तित्व को, उस नारी को जो कारण है सृजन का, जो माध्यम है जीवन को अस्तित्ववान बनाने का. विभिन्न संबोधितों से परिभाषित एक नारी के स्वयं की परिभाषा क्या है, यह एक विचारणीय विषय है. 'नारी' शब्द के साथ ही मानव मन में अनेक पंक्तियां कौंधने लगती है. मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियां यथार्थ लगती है कि – 'अबला जीवन हाय ! तेरी यही कहानी। आंचल में है दूध और आंखों में पानी'

लेकिन विचारणीय विषय यह है कि जिस नारी के कंधे पर हमें जीवन को जीवंत और खुशहाल बनाने का दायित्व डाल दिया है, क्या हमने उसके अस्तित्व को बनाए रखा है? 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' के सिद्धान्त का वाहक भारतीय समाज उसके व्यक्तित्व की रक्षा हेतु सजग अथवा संवेदनशील है? निश्चित रूप से इन सभी प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक हीं मिलेगा. क्यों? हम आज नारी को घरों से दफ्तरों तक तो ले आये है, पर आज हमारा दृष्टिकोण वहीं सदियों पुराना है, हम आज भी उसे इंसान होने का दर्जा नहीं दे पाये है, महिलाओं पर तेजाब फेकने से संबंधित घटनाएं इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है.

अणु की उत्पत्ति से लेकर एटम बम की उत्पत्ति तक की यात्रा में नारी ने अपने विभिन्न रूपों में इस समाज के रंग-मंच पर अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है. मानव सभ्यता ने प्रादुर्भाव के साथ भारतीय समाज ने नारी समानता व स्वतंत्रता के सिद्धान्त को अपना जीवन दर्शन बनाया. यही कारण है कि वैदिक सभ्यता ने भी नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकृति प्रदान की और भारतीय समाज को लोपामुद्रा, अनाया, विश्वावरा, सावित्री, मैत्रेयी, गार्गी जैसे दृढ़ सशक्त नारी चरित्र प्राप्त हो सके. किन्तु मध्यकाल में बाह्य संस्कृति के अतिक्रमण ने हमारे भारतीय मूल्यों को धराशायी कर दिया. लेकिन मध्यकाल में नारी की स्थिति में ह्रास का आरोप बाहरी आक्रमण पर थोपना पूर्णत: ठीक नहीं है जबकि वास्तविकता यह है कि उक्तकाल की रूढ़ियों व संकीर्णताओं को हम आज भी स्वयं से चिपकाये हुए हैं.

आज 21 वीं सदी की दहलीज पर खड़े होकर भी यदि उसे हम इन्सान होने का हक नहीं दे रहे हैं तो नि:संदेह हमारा अपराध क्षम्य नहीं है. यदि हम चाहते हैं कि एक स्वस्थ समाज की स्थापना हो तो उसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी सोच को बदलें एवं सामाजिक चेतना द्वारा नारी उत्पीड़न को रोककर विकृत मानसिक सोच से छुटकारा पाएं. इस हेतु कानून का संरक्षण, शिक्षा का प्रसार आवश्यक है क्योंकि नारी उत्थान की जिम्मेदारी पुरुष समाज की न होकर सम्पूर्ण समाज की है. यदि हमने नारी उत्थान की ओर सशक्त कदम नहीं उठाया तो न केवल हमारा ही नैतिक पतन होगा अपितु आने वाली पीढ़ी के चरित्र निर्माण पर भी प्रश्न चिन्ह लग जायेगा.

रविंद्र सिंह
क्षे. का., सूरत

मुश्किलें झेलें, दुनिया जीतें

हम सब महान हस्तियों जैसे आइन्स्टीन, न्यूटन, एडिसन इत्यादि को जानते हैं, लेकिन इन सभी महान लोगों का बचपन बहुत ही कष्ट और मुश्किलों से गुजरा है. हम सब जिन महान हस्तियों को जानते हैं, उनकी जिंदगी की शुरुआत भी स्कूली शिक्षा से गुजरते हुए ही हुई है, ये सभी अनगिनत बार स्कूली शिक्षा में असफल हुए थे, स्कूल जाने में भी हिचकिचाते थे एवं किताबों को देखकर डर जाते थे. ऐसी कई छोटी बड़ी जिंदगी के उतार चढ़ाव को पार करके उन्हें महान हस्तियों की उपाधि मिली. आइए, इनके बचपन के कुछ यादगार लम्हों को याद करें.....

1) अध्यापक से मिली डांट फटकार - थॉमस अल्वा एडिसन

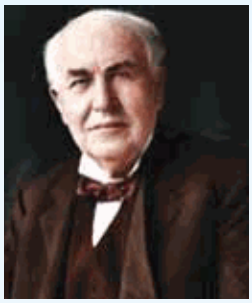

हम सब एडिसन को बिजली बल्ब एवं फोनोग्राफ जैसे महान आविष्कारकर्ता के रूप में जानते हैं. यह वैज्ञानिक अमेरिका के मिलन नामक स्थान में पैदा हुए थे. हम एडिसन के आविष्कारों को भली भाँति जानते हैं, लेकिन उन्हें इस आविष्कार में सफलता प्राप्त करने हेतु एड़ी-चोटी का जोड़ लगाना पड़ा. एडिसन के स्कूली शिक्षा के समय उनके अध्यापक उन्हें "तुम कुछ भी सीख नहीं सकते हो" कहकर डांटते थे. पढ़ाई में कमजोर होने के कारण स्कूल के अध्यापक ने उन्हें हमेशा–हमेशा के लिए स्कूल से निकाल दिया और उसके बाद एडिसन ने अपनी माता के पास पूरी लगन से अपनी पढ़ाई पूरी की. इतना ही नहीं, जब वह पैसे कमाने हेतु नौकरी करते थे, वहाँ पर भी उन्हें काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा. एडिसन बल्ब के आविष्कार में हजार बार असफल हुए अर्थात हजार तरीके जाने कि बल्ब को कैसे नहीं बनाया जा सकता है. उनकी अगली कोशिश में ही उन्हें सफलता मिली और बिजली के बल्ब का आविष्कार किया. इसके बाद भी वह मानव जाति के लिए अत्यंत प्रभावित करने वाले कई आविष्कार करते रहे.

2) गणित से डरता था - अल्बर्ट आइन्स्टीन

अल्बर्ट आइन्स्टीन का नाम एक बड़े भौतिक वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है. आइन्स्टीन का बचपन भी काफी अनोखा

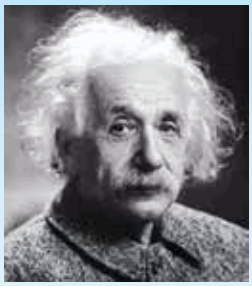

रहा है. वह बचपन में काफी सालों के बाद बात करना शुरू किये. उनकी इस कमजोरी के कारण उनकी प्रारम्भिक शिक्षा की शुरुआत साढ़े छः साल की उम्र में हुई. गणित उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता था और इसी कारण वह कई बार परीक्षा में असफल हुए थे. आइन्स्टीन हमेशा कक्षा की अंतिम श्रेणी में रहने वाले छात्र थे. वही मंदबुद्धि, अंतिम श्रेणी में रहने वाला, गणित से जी चुराने वाले बालक ने ही बाद में $e = mc^2$ जैसा महान फॉर्मूला का आविष्कार किया और बाद में भी कई तरह के भौतिक फॉर्मूला एवं भौतिक शास्त्र सिद्धांत का आविष्कार किया और इन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया.

3) अधूरी स्कूली शिक्षा - अलेक्जेंडर ग्राहम बेल

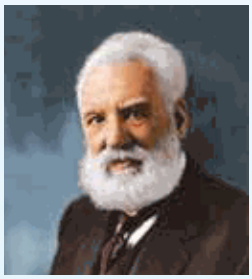

आज लोग फोन के बिना रह ही नहीं सकते हैं. मानो फोन हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया हो. इस फोन के आविष्कारकर्ता की स्कूली शिक्षा अधूरी रही थी. उनकी प्राथमिक शिक्षा अपने पिताजी के पास ही पूरी हुई. उनके पिताजी, दादाजी जब परिशोधन करते थे तो बेल उन परिशोधनों को बहुत ही ध्यान से देखा करता था. बेल को शिक्षा प्राप्त करने हेतु 11 साल की उम्र में हाईस्कूल में दाखिला करवाया गया. लेकिन स्कूल जाना एवं परीक्षा देना उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं आता था, इसी कारण 15 साल की उम्र में ही शिक्षा पूरी होने से पहले उन्होंने स्कूल छोड़ दिया. लेकिन बाद में सीधे विश्वविद्यालय में दाखिला लेकर अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी की. उनकी माताजी कान की समस्या से पीड़ित थीं. अपनी माँ से बात करने के संदर्भ में शब्द शास्त्र का भी अध्ययन किया और टेलीफ़ोन का आविष्कार कर एक बहुत बड़े आविष्कारकर्ता बने.

4) पाठ कंठस्थ कर तुरंत भूलना - चार्ल्स डार्विन

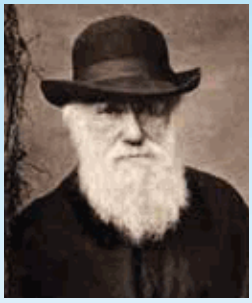

धरती पर जीव के अस्तित्व पर परिशोधन करने के कारण हम सब डार्विन को उनके 'ओरिजिन आफ स्पीशीस सिद्धांत' से जानते हैं. डार्विन इंग्लैंड के शूसबरी नामक स्थान में पैदा हुए थे. वह जब आठ साल के थे, उसी समय उनके माताजी का स्वर्गवास हो गया और उसके बाद ही उन्होंने स्कूल जाना शुरू किया. स्कूली शिक्षा के दौरान उन्हें पढ़ाई में दिलचस्पी न होने का कारण घर लौट आया करते थे और अपने कक्षा और पढ़ाई दोनों में भी अंतिम श्रेणी में रहा करते थे. कभी-कभी कुछ पाठ्यांश कंठस्थ करना पड़ता था जो उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं था. प्रकृति प्रेमी होने के कारण बचपन से ही वह तरह-तरह के कीड़े -मकौड़े इकट्ठा किया करते थे और इसी दिलचस्पी के कारण उन्होंने 'जीव के अस्तित्व का सिद्धांत' पर कई परिशोधन किये तथा दुनिया में एक विशेष स्थान प्राप्त किया.

5) सौतेली माँ द्वारा भेजने पर स्कूल गए - अब्राहम लिंकन

लिंकन जिन्हें हम अमेरिका के सर्वोपरि राजनेता के रूप में जानते हैं, वह अमेरिका के केंटकी नामक स्थान में एक छोटे से किसान परिवार में पैदा हुए थे. एक छोटे से फार्म हाउस के एक ही कमरे में उन्होंने अपने बचपन को बिताया था. उनका यह छोटा सा फार्म हाउस और खेती करने की जमीन कानूनी विवाद के कारण उनके हाथों से चली जाने पर उन्हें केंटकी छोड़ना पड़ा और वह अपने परिवार सहित इंडियाना चले आए और वहीं सरकारी जमीन में तात्कालिक घर बनाकर रहा करते थे. लिंकन का बचपन मछली पकड़ने एवं जानवरों का शिकार करते बीता और नौ साल की उम्र में सौतेली माँ ने लाड़-प्यार से उनको स्कूल में दाखिला करवाया जबकि लिंकन को स्कूल जाना पसंद नहीं था, उन्हें सभी विषय खुद ही सीखना था. लेकिन माँ के लाड़-प्यार के कारण स्कूल जाया करते थे. इस तरह लिंकन का बचपन भी काफी मुश्किलों से गुजरा है और बाद में लिंकन अमेरिका के सर्वोपरि राजनेता बने एवं राजनीति में उन्होंने अपना एक विशेष स्थान प्राप्त किया.

6) प्रारम्भिक शिक्षा से वंचित - सर आइज़क न्यूटन

न्यूटन के नियमों से आज दुनिया का कोई भी शख्स वंचित नहीं है, लेकिन न्यूटन जैसे बड़े वैज्ञानिक जो इंग्लैंड के लिंकनशायर नामक जगह में पैदा हुए, अपनी प्रारम्भिक शिक्षा से वंचित रहे. न्यूटन के बचपन में ही उनके पिता के गुजर जाने के कारण उनका बचपन उनके दादा-दादी के पास गुजरा. परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी स्कूल में नहीं हुई. खेती में सहायता हेतु उनकी दादी उनको स्कूल में दाखिला नहीं करवाई. खेती के समय जब वह अपने दादा के पास बैठा करते थे, तभी से पेड़ से सेब हमेशा नीचे ही क्यों गिरता है, इस बात पर सोचा करते थे और उनकी दीर्घ सोच ने ही गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार करवाया. कुछ सालों के बाद न्यूटन ने अपने खुद की दिलचस्पी से दुबारा शिक्षा शुरू की और बाद में उन्होंने भौतिक, गणित, खगोल वैज्ञानिक के रूप में खूब नाम कमाया.

ऐसे बहुत सारे वैज्ञानिक हैं, जिनकी बचपन में स्कूली शिक्षा अच्छी नहीं होने के बावजूद उन्होंने अपना वर्चस्व दुनिया में स्थापित किया और लोगों को अपने आविष्कारों से प्रभावित किया. गणित से डरने वाले अल्बर्ट आइन्स्टीन जब गणितज्ञ बन सकते हैं, तो उसी तरह समाज में रहने वाले बहुत से कमजोर व्यक्तियों को कमजोर समझने की भूल न करें. वे भी कुछ अनोखा कर सकते हैं. आपके साथ रहने वाला ही कोई शायद ऐसा आविष्कर कर दें, जिसकी आप ने कभी कल्पना भी न की हों.

एन वी एन आर अन्नपूर्णा
क्षे. का., विशाखापट्टनम

डिजिटल बैंकिंग - ग्राहक सेवा और भाषा

बैंकिंग के बदलते स्वरुप के समक्ष दो महत्वपूर्ण आयाम हैं, ग्राहक सेवा और भाषा. समय के साथ-साथ बैंकिंग के स्वरुप में नित नये बदलाव आ रहे हैं. आज की बैंकिंग को अब नये नाम से पुकारा जाने लगा है, जैसे इंटरनेट बैंकिंग, ग्रीन बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग इत्यादि. किंतु उपरोक्त दो आयाम अर्थात ग्राहक सेवा और भाषा इस बदलती हुई बैंकिंग के परिप्रेक्ष्य में सदैव स्थिर व महत्वपूर्ण बने हुए हैं. परम्परागत बैंकिंग हो या डिजिटल बैंकिंग, दोनों की सफलता, इस बात पर निर्भर रही है कि ग्राहक सेवा का स्तर तथा भाषा की अनुकूलता का स्तर क्या है.

हम ग्राहक सेवा और भाषा को 'पानी' की संज्ञा दे सकते हैं. जिस प्रकार पानी सामने स्थित वस्तु के अनुरुप अपना रुप बदल लेता है, उसी प्रकार ग्राहक सेवा तथा भाषा को भी बैंकिंग के बदलते स्वरुप के अनुरुप समय-समय पर ताल में ताल मिलाना होगा. ग्राहक सेवा और भाषा का यही ताल में ताल मिलाना, डिजिटल बैंकिंग की सफलता हेतु आवश्यक है.

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत देश 'डिजिटल इंडिया' नये मुकाम की ओर बढ़ रहा है, सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव पर है, आज भारत के हर नागरिक के पास मोबाइल और इंटरनेट सुविधा है, किंतु आज भी देश में 'डिजिटल बैंकिंग' लगभग 30% के आसपास ही है. तो क्या मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया की इतनी उपयोगिता भी डिजिटल बैंकिंग के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती? ऐसे में कि हम डिजिटल बैंकिंग को हर भारतीय के हाथों तक कैसे पहुचाएं? वर्तमान डिजिटल बैंकिंग में किन बातों पर ध्यान दें, जिससे भारत सरकार के डिजिटल इंडिया के सपने को शत-प्रतिशत साकार किया जा सके? इस हेतु हमें भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को समझना होगा.

वर्तमान पीढ़ी, तकनीकी पीढ़ी के रुप में जानी जाती है. कम्प्यूटर के आविष्कार के बाद से ही एक नये युग का आरम्भ हुआ. यह युग है, डिजिटल युग - डिजिटल भारत. इस डिजिटल भारत में ग्राहक सेवा का स्वरुप भी तदनुरुप बदल गया है. परम्परागत बैंकिंग में जहां ग्राहक सेवा का मतलब निर्विवाद रुप से, व्यक्तिगत तौर पर ग्राहक को सेवाएं प्रदान करना था और ग्राहकों को इसके लिए शाखा में जाना आवश्यक था, वहीं डिजिटल बैंकिंग में ग्राहक सेवा का दायरा कुछ अलग तथा अधिक विस्तृत हो गया है. डिजिटल बैंकिंग में ग्राहक को सेवाएं प्राप्त करने के लिये अनिवार्यत: बैंक शाखा में आना जरूरी नहीं बल्कि, बैंकिंग सेवाएं डिजिटल माध्यम से न सिर्फ शाखा से दूर एक देश में वरन दूसरे देश में भी प्राप्त कर सकता है. आज ग्राहक सेवा का अर्थ शाखा परिसर में सुधार से नहीं बल्कि डिजिटल बैंकिंग एप में सुधार से हो गया है. किसी बैंक की ग्राहक सेवा के स्तर का आकलन, उस बैंक के मोबाइल बैंकिंग एप, इंटरनेट बैंकिंग एप, यू.पी.आई. एप, इत्यादि के यूजर फ्रेण्ड्ली होने से किया जाने लगा है. ऐसे में डिजिटल बैंकिंग व ग्राहक सेवा एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं तथा यह कहना बिल्कुल भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि, डिजिटल बैंकिंग ही ग्राहक सेवा है और ग्राहक सेवा ही डिजिटल बैंकिंग है.

चूंकि मैं एक बैंकर हूं पर शायद यदि बैंकर ना होती तो हिन्दी भाषी होने के कारण डिजिटल बैंकिंग से मेरा परिचय उतना ही होता, जितना शायद कॉलेज के दिनों में था. अंग्रेजी भाषा से लदे हुए, डिजिटल बैंकिंग एप की संख्या तो शायद आज 50 से ज्यादा पार कर चुकी है. प्रत्येक नेशनलाइज्ड बैंकिंग एप, मोबाइल बैंकिंग एप, पे-टीएम और ना जाने ऐसे कितने ही बैंकिंग एप हैं, जो अधिकांश अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हैं. आज डिजिटल बैंकिंग के कई साधन उपलब्ध हैं. एटीएम, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एस.एम.एस बैंकिंग, यू.पी.आई., एन.ई.एफ.टी., आर.टी.जी.एस., आई.एम.पी.एस. ऐसे कितने ही माध्यम हैं, जिनसे भारत सरकार के पूर्ण डिजिटल भारत के सपने को सच बनाया जा सकता है. फिर क्यों हम भारतीय सिर्फ 30% ही डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर रहे हैं. भारत देश जिसकी प्रथम भाषा हिन्दी है, तो फिर हमारे डिजिटल बैंकिंग की प्रथम भाषा अंग्रेजी क्यों है? तो फिर क्यों डिजिटल बैंकिंग में हिन्दी भाषा को दोयम स्थान दिया जा रहा है? इस 30% को शत प्रतिशत में बदलने के लिये हमें जरुरी है कि डिजिटल बैंकिंग की प्रथम भाषा के रुप में हिन्दी भाषा को स्थान दिया जाए.

डिजिटल बैंकिंग ग्राहक सेवा में जिस प्रकार डिजिटल बैंकिंग की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार भाषा की अनुकुलता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. भारत देश के सन्दर्भ में वह भाषा हिन्दी ही है. अद्यतन तकनीकों के उपयोग के साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग ही, डिजिटल बैंकिंग ग्राहक सेवा को उच्चतम स्तर पर पहुंचा सकता है तथा वर्तमान बैंकिंग अपने शीर्ष स्थान को प्राप्त कर सकती है.

"चलो चलें कुछ नया करें, तकनीकी के साथ हिन्दी का लिए हाथ
डिजिटल बैंकिंग ग्राहक सेवा, सर्वश्रेष्ठ बना दें हम."

प्रियंका इंदूरकर
क्षे. का., नागपुर

भाषा दर्शन

एक अध्ययन के अनुसार अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति के लिए मानव मस्तिष्क में 100000 से लेकर 350000 शब्दों का विशाल भंडार होता है. हाँ, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वो भाषा है कब की और कहां की. उस भाषा की विकास यात्रा कितनी पुरानी है. उस भाषा का मूल स्रोत कहाँ निहित है. किसी भी भाषा के समृद्ध होने के मूल कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक है उस भाषा की निरंतरता और उस भौगोलिक क्षेत्र की विविधताएं एवं सांस्कृतिक विकास क्रम-काल.

भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार भाषाओं को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है. जीवित, मृत और लुप्त भाषाएं.

जीवित भाषा वो सभी भाषाएं हैं जो बोलचाल और संवाद स्थापित करने के लिए उपयोग में हैं. ऐसी लगभग 19700 भाषाएं सिर्फ भारतवर्ष में ही हैं. ऐसी सभी भाषाएं जो व्याकरण के कठोर अनुशासन से मुक्त हैं और समय एवं स्थान के साथ-साथ अपना स्वरूप बदलती रहती हैं, वो जीवित भाषा की श्रेणी में आती हैं.

लुप्त भाषाएँ, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, वो सारी ज्ञात-अज्ञात, पठित-अपठित भाषाएँ, जो विलुप्तप्राय हो चुकी हैं और दुनिया के किसी भी समूह द्वारा वर्तमान में प्रयोग नहीं हो रही हैं.

भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक आबादी, (लगभग 47 करोड़) द्वारा उपयुक्त खड़ी बोली जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जिसे मगही, अवधी, बुंदेलखण्डी, भोजपुरी इत्यादि भाषाओं का सामूहिक प्रतिनिधित्व प्राप्त है, उसे भारतीय संविधान में राजभाषा की प्रतिष्ठा प्राप्त है. लेकिन जैसा कि हिंदी की अपनी पूर्णत: स्थापित व्याकरण है और हर लिखे और बोले जाने वाले वाक्य की व्याकरण की कसौटी पर जाँच की जा सकती है, इस शर्त के कारण हिंदी राजभाषा, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और जिसका अपना पूर्णत: परिभाषित व्याकरण है, मृत भाषा की श्रेणी में आती है. परिणामत: यह अपरिहार्य है कि हिंदी के शब्दों (कभी-कभी तत्सम शब्दों) के लिए आग्रह भी स्वमेव उपस्थित हो जाता है. ऐसे में राजभाषा के रूप में हिंदी के स्थापित होने की राह में एक मुख्य अड़चन यह आती है कि उपयुक्त शब्द ज्ञान के अभाव में हम हिंदवी (पारसी, अरबी) और ज्यादातर अवसरों पर अंग्रेजी शब्दों का सहारा लेने लगते हैं. हालांकि, हिंदी शब्दकोश, संस्कृत सूत्र के कारण दुनिया का सबसे समृद्ध शब्दकोश है.

लेकिन सबसे त्रासदपूर्ण स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब हम अपने शब्द-दारिद्रय को छुपाने के लिए एक ऐसी भाषा का सहारा लेते हैं, जिसमें हमारी बहुसंख्यक आबादी लगभग अनपढ़ है. जी हाँ, हम एक ऐसी भाषा की चादर ओढ़ लेते हैं, जो मूल रूप से अपरिभाषित और दरिद्र है. वो भाषा है अंग्रेजी, जिसके पास अपना शब्दकोश इतना छोटा है कि इसका वाक्य-विन्यास बिना सहायक और पूरक शब्दों के संभव ही नही हो सकता.

तमाम शोधों से यह साबित हो चुका है कि किसी को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बोलने के लिए उसके पास मात्र 800 से 1000 शब्द ही होते है, जिन्हें वह तोड़-मरोड़कर अपनी बात कहता है. दूसरी भाषा में लिखने वाले ज्यादातर लोग अधिकतम 5000 शब्दों का ज्ञान रखते हैं. कुछ मामलों में 300 से 500 अतिरिक्त शब्द भंडार उस व्यक्ति के पास तब होता है, जब वह इंसान किसी खास क्षेत्र में अध्ययन किया हो. उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक या रसायनशास्त्री या अर्थशास्त्री अपने अध्ययन क्षेत्र के कुछ अतिरिक्त शब्दों का धनी हो सकता है.

अन्य भाषा में बोलने और लिखने के प्रति उसके प्रयास के पीछे अपने अतिरिक्त ज्ञान का बखान करने और दूसरे को नीचा दिखाने की हिंसक प्रवृत्ति काम करती है. हर समाज में एक ऐसा वर्ग होता है जो इस मानसिक विकृति का शिकार होता है, जो अपने आपको प्रबुद्ध और अभिजात्य वर्ग का समझता है. जैसे ब्रिटेन का अभिजात्य वर्ग, फ्रेंच भाषा में बोलना अपनी शान समझता है, वैसे ही हिंदुस्तान में टूटी-फूटी अंग्रेजी में लिखने और बोलने का प्रयास करता हुआ एक बड़ा वर्ग मिल जाएगा. ऐसा व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति क्षमता की विफलता पर शर्मिंदा होने से बचने के लिए हमेशा कुछ क्लिष्ट शब्दों के तलाश में रहता है.

हाल ही में एक नई प्रवृत्ति देखने को मिली है, जब नए शब्दों का सृजन और प्रयोग प्रचलन में आया है. किंतु इनमें ज्यादातर शब्द प्रतिक्रियात्मक, भड़काऊ और अपमानजनक पाये गए हैं. ये शब्द भी मूल शब्द नहीं होते और मात्र शब्द-संग्रह होते हैं, जो भाषायिक-शब्द परिभाषा के परिधि में नहीं आते. इसलिए वे सभी बधाई के पात्र हैं, जो राजभाषा को राष्ट्र निर्माण का सूत्र मानते हैं.

राजेश कुमार श्रीवास्तव
क्षे. का., सूरत

दि.30.01.2020 को न.रा.का.स.(बैंक), जयपुर द्वारा क्षे.का.जयपुर को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु पिछले वर्ष की भांति वर्ष 2019 हेतु भी 'सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार' प्रदान किया गया. यह पुरस्कार भारतीय रिजर्व बैंक, जयपुर के क्षेत्रीय निदेशक, श्री अरुण कुमार सिंह द्वारा प्रदान किया गया.

दि.30.01.2020 को न.रा.का.स. (बैंक) रायपुर की 47वीं बैठक में क्षे. का., रायपुर को वर्ष 2019 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. साथ ही नराकास की वार्षिक पत्रिका 'क्षितिज' के संपादन एवं प्रकाशन हेतु यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया.

दि. 09.01.2020 को वर्ष 2018-19 में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास बैंक, कोयंबटूर से क्षे. का. कोयंबटूर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री टी सरावनई, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री रोहित साव, राजभाषा अधिकारी, नराकास अध्यक्ष पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

दि. 28.01. 2020 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा क्षे. का., भोपाल को प्रशासनिक वर्ग के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्री गुरतेज सिंह ने पुरस्कार व शील्ड प्राप्त किया.

दिनांक 23.01.2020 को न.रा.का.स. (बैंक), इंदौर द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान वर्ष 2019-20 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन के लिए क्षे. का., इंदौर को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. क्षेत्र प्रमुख, इंदौर श्री मनोज कुमार एवं राजभाषा अधिकारी सुश्री निधि सोनी द्वारा, नराकास अध्यक्ष एवं भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबन्धक श्री राजीव कुमार के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण किया गया.

दि.17.01.2020 को न.रा.का.स., भिलाई की अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक में यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, भिलाई शाखा को वर्ष 2019 के लिए राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यों हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दि. 27.01.2020 को न.रा.का.स.,ठाणे द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए क्षे.का., मुंबई (उत्तर) को द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री विश्वनाथ झा (उप निदेशक, भारत सरकार, हिन्दी शिक्षण योजना) तथा नराकास, ठाणे अध्यक्ष श्री सतीश तलरेजा से पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (उत्तर) श्री कबीर भट्टाचार्य एवं राजभाषा अधिकारी, कुन्दन भगत.

दि.15.01.2020 को पटना, न.रा.का.स.(बैंक) की बैठक के अवसर पर क्षे.का. पटना की गृह पत्रिका, 'यूनियन पाटलिपुत्र' के लिए श्री जी. बी. त्रिपाठी, क्षेत्र प्रमुख, को तृतीय पुरस्कार की शील्ड प्रदान करते हुए श्री देवश लाल, अध्यक्ष, नराकास (बैंक) पटना सह क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, पटना तथा श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता.

दि. 09.01.2020 क्षे.का., नेल्लूर को नराकास, नेल्लूर से वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा हिन्दी में किए गये उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. यह क्षे. का., नेल्लूर को राजभाषा हेतु पुरस्कार मिलने का पहला अवसर है. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख, श्री एस आर मणिवन्नन एवं राजभाषा अधिकारी श्री प्रदीप कुमार.

दि.10.01.2020 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में क्षे. का. पटना में पदस्थ राजभाषा अधिकारी, डॉ. विजय कुमार पाण्डेय को बिहार साहित्य सम्मेलन, पटना की ओर से साहित्य सेवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष, डॉ. अनिल सुलभ तथा मगध विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति, डॉ. बलबीर सिंह भसीन.

दि.21.01.2020 को क्षे.का. भुवनेश्वर को वर्ष 2018-19 में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु नराकास (बैंक) भुवनेश्वर द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. श्रीमती प्रवीणा काला, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, भुवनेश्वर व अध्यक्ष नराकास (बैंक) भुवनेश्वर कर कमलों से शील्ड प्राप्त करते हुए उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रकाश चन्द्र पति तथा अभिजित कुमार गिरी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाण पत्र देते हुए, श्रीमती सोनाली दास, महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, भुवनेश्वर कार्यालय और साथ में श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय.

दि. 28.01.2020 न.रा.का.स., सूरत की 18 वीं अर्ध-वार्षिक बैठक में, सिडबी एवं यूको बैंक के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं आशुभाषण प्रतियोगिता में श्री भोला कुमार सिंह को द्वितीय एवं श्री विश्वास कुमार आनंद को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. बैठक में उपस्थित सुश्री अनीता पाल, कार्यालय प्रमुख, सिडबी; श्री रमण कुमार सिंह, अंचल प्रमुख, यूको बैंक; श्री अशोक कुमार महाकुल, अध्यक्ष, नराकास (बैंक) तथा विभिन्न बैंकों के कार्यालय प्रमुख एवं सदस्य सचिव.

दि.23.01.2020 को न.रा.का.स.(बैंक), इंदौर द्वारा आयोजित बैठक में नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में सुश्री प्रभाती शुक्ला एवं श्री आदर्श अग्निहोत्री को नराकास अध्यक्ष श्री राजीव कुमार द्वारा पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, इंदौर श्री मनोज कुमार भी उपस्थित थे.

नो.क्षे.का.,बेंगलूरु द्वारा दि.04.02.2020 को अंतर बैंक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन, श्री आलोक कुमार, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु की अध्यक्षता में संपन्न हुआ. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सर्वेश कुमार रस्तोगी, उ.म.प्र. सह मुख्य राजभाषा अधिकारी, नराकास बैंक ऑफ बड़ौदा, सुश्री पद्मसुधा सी.एस., मु.प्र.(राभा) सदस्य सचिव नराकास, श्री जे.महेशा (निर्णायक) स.म.प्र.,यूनियन बैंक, सुश्री सैयदा अफजल उन्नीसा, स.म.प्र.(राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक के अतिरिक्त विभिन्न बैंकों से अनेक प्रतिभागी व राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे.

24.02.2020 को अहमदाबाद के सम्मेलन कक्ष में स्केल-IV एवं ऊपर के कार्यपालकों के लिए राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसकी अध्यक्षता क्षेत्र महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार सोनी ने की. इस कार्यक्रम में उप अंचल प्रमुख, श्री लुक़मान अली ख़ान के अतिरिक्त कुल 18 कार्यपालक उपस्थित रहे.

दि. 02.01.2020 को श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक अहमदाबाद की अध्यक्षता में अहमदाबाद अंचल के सभी राजभाषा अधिकारियों की अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

नराकास, मऊ द्वारा दि. 27.01.2020 को अर्द्ध-वार्षिक बैठक तथा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन अग्रणी जिला, प्रबंधक श्री मनोज कुमार वर्मा की अध्यक्षता में किया गया. इस बैठक में राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र-2, गाजियाबाद से प्रभारी उप निदेशक, श्री अजय मलिक उपस्थित रहे. नरईबांध शाखा द्वारा नराकास के तत्वावधान में दिनांक 06.01.2020 को आयोजित हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता के विजेताओं को भी उप निदेशक महोदय के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया.

दि. 07.03.2020 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में नराकास के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा महिला विशेष अंतर बैंक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता में सभी सदस्य बैंकों की लगभग 28 महिला सदस्यों द्वारा सहभागिता दी गयी. भोपाल क्षेत्र प्रमुख, श्री गुरतेज सिंह ने सभी सदस्य बैंकों से उपस्थित महिला प्रतिभागियों का स्वागत किया.

नराकास(बैंक), गोरखपुर के तत्वावधान में क्षे.का., गोरखपुर द्वारा दि.05.02.2020 को सभी सदस्य कार्यालयों हेतु स्मृति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में हमारे बैंक से श्री रवि प्रकाश सिंह, प्रबंधक तथा श्री राजन सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक द्वारा क्रमश: प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया गया.

क्षे.का. रायपुर द्वारा बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के तत्वावधान में दि. 04.01.2020 को 'स्मरण शक्ति' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में विभिन्न बैंकों के कुल 24 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता दी.

मुंबई अंचल के तत्वावधान में संयुक्त एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला को संबोधित करते हुए श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), के. का., मुंबई. इस अवसर पर उपस्थित श्री अशोक कुमार दाश, उप अंचल प्रमुख, क्षे. म. प्र. का., मुंबई तथा श्री मनोहर सिंह, केंद्र प्रभारी, स्टा. प्र. के., पवई.

दि. 05.03.2020 को नराकास (बैंक), सूरत के तत्वावधान में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री अजीत कुमार, सदस्य सचिव (नराकास) का स्वागत करते हुए, श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्रीय प्रमुख, सूरत.

बेंगलूरु के तत्वावधान में दि. 13-14 जनवरी, 2020 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में आयोजित दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिन्दी कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों से उपस्थित प्रतिभागियों के साथ प्राचार्य, श्री सर्वेश रंजन; उप प्राचार्य श्री शेषाचल हेगड़े,; साथ में उपस्थित श्री एस.के. शुक्ला, सहायक महाप्रबंधक व संकाय एवं राजभाषा अधिकारी श्री कृष्ण कुमार यादव; श्री दीपक कुमार; श्री सिद्धार्थ शेखर.

दि. 22 जनवरी, 2020 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता ने क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर का निरीक्षण किया. इस अवसर पर उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रकाश चन्द्र पति द्वारा श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया.

दि.14-15 फरवरी 2020 को अहमदाबाद के संयोजन में दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 21 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की.

सुपर फूड 'गुड़'

नेचुरल मिठाई के नाम से पहचाना जाने वाला तथा सोंधी सोंधी महक बिखेरनेवाला गुड़ न सिर्फ खाने में स्वादिष्ट है बल्कि सेहत के लिए भी खजाने जैसा है. सर्दियों में गुड़ पॉवर बूस्टर का काम करता है. यह हमारे शरीर के तापमान को न सिर्फ रेगुलेट करता है बल्कि उसे डिटॉक्सिफाई भी करता है. 10 ग्राम गुड़ में 38 कैलोरी होती है. गुड़ बहुत सारे पदार्थों से बनता है, जैसे खजूर के गूदे, नारियल के ज्यूस आदि. लेकिन इसे बनाने में सबसे ज्यादा उपयोग गन्ने के रस का होता है और ज्यादातर लोग इसी का उपयोग करते हैं. गुड़ में विटामिन और मिनरल्स की भरपूर मात्रा पाई जाती है. गुड़ एक ऐसा सुपर फूड है जिसे साल भर खाया जा सकता है. गुड़ की तासीर गर्म होती है. गुड़ की एक खासियत यह भी है कि इसे डायबिटीज के मरीज भी खा सकते हैं. और दिलचस्प बात यह भी है कि इसके सेवन से शरीर में खुशी का एहसास दिलाने वाले हार्मोन के स्राव में भी मदद मिलती है. तो चलिए एक नजर डालते हैं गुड़ के गुणों पर !

- गुड़ लौह का अच्छा स्त्रोत है इसलिए यह शरीर में खून की कमी को दूर करने में सहायक होता है.
- गुड़ खून को साफ भी रखता है और यह गले और फेफड़े के संक्रमण को ठीक करने में सहायक होता है.
- खाना खाने के बाद गुड़ खाने से खाना अच्छे से पचता है और गैस की तकलीफ़ में आराम मिलता है. गुड़ को अजवाइन के साथ खाने से पाचन दुरुस्त रहता है. फाइबर से भरपूर होने के कारण कब्ज में भी आराम देता है.
- मोटापे से पीड़ित लोगों के लिए गुड़ का सेवन ज्यादा बेहतर होता है. शरीर में जमा अतिरिक्त वसा को खत्म करने में यह सहायक होता है. पोटैशियम या इलेक्ट्रोलाइट के स्तर को काबू में रखता है. गुड़ खाने से मेटाबॉल्जिम ठीक रहता है.
- गुड़ के नियमित सेवन से कफ, खाँसी में आराम मिलता है. गुड़, हल्दी और देसी घी के साथ गर्म करके खाने से कफ में राहत मिलती है, आवाज भी साफ होती है. अदरक के रस को गुड़ के साथ गर्म करके खाने से गले की खराश और कफ में राहत मिलती है.
- गुड़ फेफड़ों और गले में जमी गंदगी साफ करता है, अत: यह धूल और मिट्टी से हुई सांस की समस्या में फायदा करता है. गुड़ में काले तिल मिलाकर बनाए गए लड्डू का सेवन सर्दियों में अस्थमा के अटैक और सांस लेने में होने वाली दिक्कत में राहत पहुंचाता है. सांस संबंधी रोगों के लिए पांच ग्राम गुड़ को समान मात्रा में सरसों के तेल में मिलाकर खाने से सांस संबंधी समस्याओं से छुटकारा मिलता है.
- गुड़ का काढ़ा अदरक के रस के साथ बनाकर पीने से गठिया के रोग में आराम मिलता है. गुड़ के एक टुकडे के साथ अदरक या सोंठ खाना भी जोडों के दर्द से राहत देता है.
- गुड़ शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालता है और खून की अशुद्धियां दूर करता है. इसे स्क्रीन क्लीनर भी कहा जाता है.
- गुड़ से बने हलवे के नियमित सेवन से हमारे मस्तिष्क का स्वास्थ्य ठीक रहता है. शरीर के तापमान को नियंत्रित करने और याददाश्त को बनाए रखने में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.
- गुड़ में कैल्शियम के साथ फॉस्फोरस भी होता है, जो हड्डियों को मजबूत करने में सहायक माना जाता है.
- रोजाना गुड़ खाने से आँखों की रौशनी में वृद्धि होती है. इसलिए आँखों की कमजोरी में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है.
- गुड़ में पोटैशियम और सोडियम अच्छी मात्रा में होती है जो हमारे शरीर में मौजूद एसिड को कम करने में मदद करता है. इससे रक्त कोशिकाओं को स्वस्थ रखने और खून के संचार को सही रखने में मदद मिलती है और उच्च रक्तचाप में फायदा होता है.
- पीलिया हो जाने पर पांच ग्राम सोंठ में दस ग्राम गुड़ मिलाकर एक साथ खाने से काफी लाभ मिलता है.
- गुड़ में मूत्रवर्धक विशेषता होती है. ये पेशाब को उतरने और उसमें हो रही कठिनाई को कम करने में मदद करता है. यह मूत्राशय की सूजन को कम करने में मदद करता है.
- सोने से पहले और सूर्योदय से पहले सुबह में खाली पेट 5 मिलीलीटर गाय के घी के साथ 10 ग्राम गुड़ एक दिन में दो बार लेने से माइग्रेन और सिरदर्द से आराम मिलेगा.
- गुड़ एक अच्छा मूड बूस्टर है, यह आपके मूड को खुशनुमा बनाने में मदद करता है.

लेकिन गुड़ की तासीर गर्म होती है इसलिए गर्मियों में इसका इस्तेमाल कई लोगों के नाक से रक्त स्राव का कारण बन सकता है. अत: इसका कम मात्रा में सेवन करें. यह रक्तचाप को ठीक करता है लेकिन आपको साथ में मधुमेह की शिकायत है तो गुड़ का सेवन ना करें. गुड़ खाने से वजन बढ़ सकता है. जिन लोगों को अल्सरेटिव कोलाइटिस जैसी बीमारी है उन्हें गुड़ नहीं खाना चाहिए. गुड़ में काफी मात्रा में सुक्रोज पाया जाता है, इसलिए गठिया के मरीज़ों को गुड़ नहीं खाना चाहिए. सूजन में भी गुड़ से परहेज करें.

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का.

यूनियन सृजन का दिसम्बर 2019 का अंक प्राप्त हुआ. जो कि विवाह विशेषांक के रुप में प्रकाशित किया गया है. भारत जैसे विशाल देश में रहने वाले विविध राज्यों के लोगों के विवाह परंपराओं से संबंधित यह विवाह विशेषांक बहुत ही लुभावना है. जिसमें दी गई जानकारी बहुत ही अच्छी है. इसमें विवाह से संबंधित सभी पहलूओं को छुआ गया है. सुश्री नीरजा कोष्टी द्वारा लिखा गया पाश्चात्य विवाह बनाम भारतीय विवाह लेख अच्छा लगा. सेंटर स्प्रेड के रुप में 'यह कश्मीर हैं' इस लेख में कश्मीर की खूबसूरती को अच्छी तरह से दिखाया गया है. जो कि दर्शनीय है. हिंदू विवाह में प्राचीन वैज्ञानिक गौत्र प्रथा, अंतर्जातीय विवाह वरदान या श्राप, विवाह आयोजन की अर्थनीति, सामूहिक विवाह कितने कारगर, कितने आवश्यक, पुनर्विवाह / विधवा विवाह आदि लेखों ने पत्रिका की पठनीयता को और व्यापक तथा सार्थक बना दिया है.

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई.

- विजय चौधरी
क्षे. का. विशाखापट्टनम, पूर्व आंध्रा बैंक

'यूनियन सृजन' का पूर्वोत्तर भारत विशेषांक प्राप्त हुआ, धन्यवाद.

विशेषांक के अनुरूप पत्रिका में पूर्वोत्तर भारत के साहित्य, संस्कृति एवं भौगोलिक परिवेश का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है. लेख - पूर्वोत्तर सात भगिनी संकल्पना, पूर्वोत्तर भारत के उत्सव एवं त्योहार, पूर्वोत्तर राज्य एक सांस्कृतिक विरासत तथा महान योद्धा लचित बोरफुकन अत्यंत रोचक तथा ज्ञानवर्धक है. पत्रिका का कवर पेज अत्यंत आकर्षक है. पत्रिका में चित्रांकन भी बड़ा ही आकर्षक एवं सजीव है. कुल मिलाकर 'यूनियन सृजन' एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जो पूर्वोत्तर प्रदेशों की यात्रा के लिए प्रेरित करती है. इस अनूठे प्रयास के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई.

- अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी
पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

'सृजन' की परंपरा में एक और संग्रहणीय अंक सृजित करने के लिए 'यूनियन सृजन' की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई. हमारी संस्कृति की कड़ियों को जोड़ने का जो लगातार प्रयास आपकी टीम कर रही है, उसके लिए आप सबको साधुवाद. संपादकीय पढ़कर ही जो उत्कंठा मन में जगती है कि पूरा अंक पढ़ने से अपने आपको रोका नहीं जा सकता. जहां अधिकांश लेख विचार और अनगिनत जानकारियों से भरे पड़े हैं, वहीं लेख प्राचीन वैज्ञानिक गोत्र प्रथा एक विशिष्ट विश्लेषण भी हमारे सामने लाता है. सेंटर स्प्रेड एवं आयुष्मान भवः सरीखे स्थायी स्तम्भ हमेशा की तरह उपयोगी और शानदार हैं. एक बार पुनः बधाई

- मनोज कुमार
कार्यपालक (हिंदी), भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि., मुंबई

हमें आपके बैंक की गृह पत्रिका यूनियन सृजन अक्तूबर दिसंबर 2019 तिमाही 'विवाह विशेषांक' की प्रति प्राप्त हुई, सर्वप्रथम पत्रिका भेजने के लिए आपको धन्यवाद. पत्रिका के विभिन्न विशेष अंकों के बीच में भारतीय संस्कृति की विवाह परंपरा को इस प्रकार सृजित करने के लिए यूनियन सृजन टीम को बहुत-बहुत बधाई. विवाह कल, आज और कल, प्राचीन गोत्र प्रथा, ज्योतिष कुंडली मिलान, रूढ़ियों के साथ विवाह से लेकर आधुनिक विवाह के मायने सरीखे हर एक लेख ने इस परंपरा के बारे में जैसे सब कुछ बता दिया है. पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए यूनियन बैंक में संचालित विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई. इस विशेष प्रयास हेतु यूनियन सृजन की संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं.

- अशोक कुमार
क्षे. का. बड़ौदा, पूर्व कॉर्पोरेशन बैंक

आपके बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का विवाह विशेषांक प्राप्त हुआ. इस अंक में प्रकाशित विवाह परक सभी आलेख काफी रोचक एवं ज्ञान परक हैं. विवाह आधारित कविताएं तो मणिमाणिक सादृश्य हैं, जो इस पत्रिका और भी खुबसूरत बना देती हैं. मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को विशेष बधाई देता हूं कि उन्होंने इस विवाह विशेषांक द्वारा रिश्तें- नातों की संकल्पना रूपी जो सीप खोलने का प्रयास किया है, उनमें वे पूर्णतः सफल रहे है. विवाह के समस्त आयामों को बहुत ही खुबसूरती से उकेरती यह पत्रिका काफी ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक है जो अपने अंदर विवाह की सारी रीति, नीति और प्रतीती को समाहित किये हुए है. पत्रिका की साज सज्जा एवं कलेवर काफी मोहक एवं आकर्षक है. मैं पत्रिका के संपादक मंडल को पुनः हार्दिक बधाई देते हुए आाशा करता हूं कि पत्रिका अपने अगले अंक के साथ जल्द ही पाठकों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करेगी.

सधन्यवाद

- परसुराम राम
सदस्य सचिव, नराकास
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षे. का., मदुरै

हमें आपकी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का अक्तूबर - दिसंबर 2019 अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका को विवाह विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है. पत्रिका में विवाह संबंधी अनेक तथ्यों का संकलन किया गया है. 'यूनियन सृजन' में प्रकाशित प्रथम लेख में ही विवाह का अर्थ, उत्पत्ति, जिम्मेदारियाँ, आवश्यकता एवं महत्व के विषय में जानकारी प्रदान की गयी है. फणीश्वर नाथ 'रेणु' जी के जीवन वृतांत एवं उनके द्वारा रचित रचनाओं के विषय में भी जानकारी का संकलन प्रकाशित किया गया है. विवाह के विषय पर आपकी पत्रिका में मुद्रित विभिन्न कविताएं प्रशंसा योग्य है. पत्रिका के माध्यम से गोत्र प्रथा के विषय में जानने का अवसर प्राप्त हुआ. चित्र - विचित्र विवाह रस्में नामक लेख से विभिन्न विचित्र रस्मों के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ. यात्रा वृतांत 'यह कश्मीर है' में सुंदर चित्रों का संकलन किया गया है. इसके साथ ही बादलों का घर - मेघालय में प्रकृति की सुंदरता का बखूबी वर्णन किया गया है. पत्रिका में विवाह के विभिन्न प्रकारों, रस्मों, अलग - अलग धर्मों में होने वाले विवाहों के साथ विवाह के संबंध में समाज में फैली विभिन्न भ्रांतियों के विषय पर निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रस्तुत किए गए हैं.

आपके विभिन्न कार्यालयों को राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त हुए पुरस्कारों के लिए आपको बधाई. साथ में, पत्रिका के प्रकाशन के लिए इतने आकर्षक विषय चुनने के लिए भी संपादक मंडल का धन्यवाद. मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपकी पत्रिका में इसी प्रकार के अन्य रोचक आलेख एवं तकनीकी जानकारियाँ पढ़ने को मिलेगी.

- रंजन कुमार बरुन
उप महाप्रबंधक, राष्ट्रीय आवास बैंक

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

चाय बागान, मुन्नार, केरल

मडुपेट्टी बांध, मुन्नार, केरल

छायाचित्रः दीपक कुमार, स्टा. प्र. म., बेंगलूरू